श्री राजगन्या लहरी

जयतु महा राज्ञयैः

(का'शिरि लीलायि)

प'रिव त. त'रिव

उद्यत्-दिवाकर सहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहा सनो परिगतां-उरगों पवीतां।
खड्गाम्बुजाढय कलशामृत पात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसत् वदनार बिन्दाम।।

श्री राऽगन्या लहरी

(का'शिरि लीलायि)

प'रिव त. त'रिव

वन्दे महा राज्ञीं जगत गरुम्

(ध्यानम्)

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणि मुकुट वर्ती रत्नताटङ्क रम्यां
हस्ताम्भेजैः सपा शाड.-कुशमदन धनुः साय कैर्विस्फूरन्तीम्
आपी नोत्तुड.ग वक्षो रूह तटविलु ठतार हारो ज्जवलार्ग्डी,...
ध्यायाम् ओभारहस्थामरूण, विवसानम् ईश्वरिम् ईश्वराणाम्।।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं
भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात् ॐ

प्राप्ति स्थान :-
अर्धरात्री महाराज्ञी सेवा संस्था ट्रस्ट
भवानी नगर, जानी पुरा
जम्मू - १८०००७
संग्रेही :- "सुधीर कोल"
मूल्य तीस रुपये

प्राक्कथन

कश्मीर की धरती स्वयं माता पावर्ती का ही साक्षात रूप है यह जल पाषाण के निरन्तर परिवतन से वरतमान रूप में विकसित होकर विध्यमान है।

शादरा पीठ होने के फल स्वरूप दागदेवी वागेश्वरी की इस धरती पर विशेष कृपा रही है। भवान श्री कृष्ण ने भारती परम्परा तथा वेदों के सार को भगवत गीता में प्रस्तुत करके कहा है कि वेदों में सामवेद की श्रैष्ठता मान्य है। इसी कारण में वेदों को गा कर तथा भजन लीला (कश्मीरी) गा कर परा शक्ति को प्रेरणा करने का विधान है। यह संस्कृतिक परम्परा इतनी ही अक्षुष्य है जितना कि शिव के डमरू से निकला प्रत्येक अक्षर!

भक्ति में तथा इष्ट की आराधना में इस बात की कोई विशेषता नही मानी जाती है कि उत्ककृति किस रचेता की है अथवा उक्त रचना कितनी पुरानी है क्योंकि माँ शारदा के अनुग्रेह से ही अक्षर अक्षर जुड़ते है और मंत्र तंत्र आदि शब्द-शक्ति के अचूक सशक्त मंत्रों का रूप धारण करते है। वास्तविक बात तो यह है कि सामवेद की पद्धति से तथा हमारी ही वाक शक्ति के शब्द बल द्वारा चित शक्ति में स्वयंभू ही आत्म-उथान एवं आनन्द की अनुभूति होती है यही आत्मानद और यही आत्भूति भूती ही भक्ती तथा साधना का मुख्य लक्ष्य है।

कशमीर के उन पुज्य देव तुलय महात्माहो की याद जब आती है तो यह दृश्य मुर्तिमान होता है जिस में भक्ति महाकवि परमानन्द ने अपने हृदय में गोकल बनाकर, उस में प्रभु की अदभुत लीला को भाव भंङ्गी दंग से तल्लीनता पुर्वक महास्स का दिव्य दृश्य प्रस्तुत किया है उस मटनवासी परमानंद का हमारा शत शत नमन है।

आदि कवित्री श्री लल्ेश्वरी योग के गूढ़ तम रहस्यों की सहज अभिव्यक्ति करती है वह बताती है कि बाह्य जगत में त्याग का उत्तरमुखी बन जाता है और गुरू मंत्र की कृपा से आत्मानुभूति प्रफुल्लित होगी।

भक्त कवि कृष्ण जू राज़दान की काव्य कुशलता ने ही एश्याटिक सोसाइटी के उन की रचनाओं का प्रकाशन करने के लिए बाध्य किया था। इसी सशक परम्परा के भक्त कवियों में ठाकुर जू मनवटी, पूज्य महात्मा आफताब जू कारिहामा 'भास्कर' मास्टर जिन्दा कौल एक अमिर छाप छोड़ गये हैं। मास्टर जिन्दा कौल ने एक सम्मेलन में कहा था मै कश्मीरी हूँ मेरे पूज्य माता पिता ने कशमीरी अन्दाज़ में मेरा नाम जिन्दा कौल रखा अतः अन्यथा वह मुझे जीवन

कौल भी रख सकते थे पर इस शारदा का सपूल का प्रज्जवलिता नामकरण जिन्दा कौल ही रखा गया।

इस लीला भक्ति परम्परा में कितने ही भक्तों ने माता त्रिपुर सुन्दरी के प्रति विभिन्न प्रकट की स्तुतियां लिखी है। इस बात का हम सब में दो मत नही कि पुरानी परम्परा की रक्षा अवश्यमेव करनी होगी तथा नई रचनाओं से भक्ति काव्य भी इस गंगा की तरंगों का अबाहय गीत से प्रवाहित करना होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में हमने बड़ी निम्रता से माता महाराज्ञी राज्ञणया भगवती की उन परम्परागत लीलाओं का संकेलण किया है। जिन के भाव जनमन में इतने भाव पूर्ण ढंग से समा गये हैं कि उन की एक पंक्ति ही उस सारे वातावरण को साकार करती है जिस वातावरण की अनुभूति सदेव माता के परम भक्तों को रही है। भक्ति की अविचल तरंगों के गति शील करने में जिस मानसिक उपयुक्ता की आवश्यकता है उस में मातृ भाषा का योग सदैव रहा है।

कश्मीरी भाषा और कश्मीरी ऋषि परम्परा के अनुसार मातृ शक्ति की पूजा हमारी अपनी थाथी है। हम परा शक्ति के पुजारी रहे हैं और इसी कारण से माता महा राज्ञण्या भगवती ने लंका से महावीर हनुमान को इस बात की आज्ञा दी थी कि वह उन को कर्मसा त्रिकुय पर्वत से सतीसर पहुंचाये। जहां माता ने अपनी दिव्य शक्ति से विभिन्न देव स्थानों का तीर्थ महिमा से मण्ड़ित किया और स्वयं अनतः क्षीर भवानी के वतर्माण स्थान तुलमूला के अपने तीन सौ साठ नागों के संग निवास कर गई।

इस स्थान में कितने भक्तों ने आचार्यो ने, महात्माओं ने, माता की कृपा तथा अनुग्रेह के वह अनुपम अनुभूतियां महसूस की हैं। जिस का वर्णन संभव नहीं।

हम सब मिलकर श्रद्धा एवं पूर्ण समपूर्ण से माता की आराधना करे और उचि फल के भागी बने

वन्दे महा राज्ञीं जगत गरुम्

असतु

ए० डी० वशण

भजन सूची
का'शिरि लीलायि

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
	आरती संग्रह	१–१४
	अ	
१.	असि आय शरणे पूजा करनें	१५
२.	अर्ध रात्रन गुल गन्डित बोज जार म्योन	१६
३.	अज्ञान घटे सिर्य प्रकाश छुक आसवोनुय	१७
४.	अज वाति बूजम मोल म्योन	१६
५.	अजं सांज विनती सत्गरू साद्यै	२०
६	अपार्य यपार्य चो.पार्य पानस	२२
७.	अरिजि रंग गोम श्रावण, हिये	२३
	आ	
८.	आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान ।	२३
९.	आम.च़ मनस र.च़ वासना	२४
१०.	आसय शरण करतम दया टाठि श्रीगणेशाये नमः	२४
११.	आराधना च्यानी करै	२६
१२.	आधार ज़गतुक कुनय छु मंत्र	२७
१३.	आशि चानि बरतल आस अनाथ	२८
१४.	आसय बरस तल त्राव नज़र	२९
	इ	
१५.	इत दित दर्शुन भस्माधारे	३०
१६.	इतना तो करले स्वामी	३०

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
	उ	
१७.	ओम परवुन हंस ताजदार	३१
१८.	ओम श्रीमत ही भवानी छय म्य आशा च्यानी	३२
	ओ	
१६.	ओस कस रूजित अन्दरी वैर	३४
२०.	ओरूत प्रारान छुस बरंतलै	३५
	क	
२१.	कर इयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार	३६
२२.	कर सन कुतुय बनि सति तस	३७
२३.	कर सना हृयि जन्म यत हृदयस अंदरश्री कृष्णा	३८
२४.	करसै सोनि पोशन माल	३६
२५.	कमल रूपी चरण चा'निय रटोय शरणच्ये आये	४०
२६.	कलजुग नही करजुग है यह	४१
२७.	कस क्या जेनुन छु यमि संसारी	४१
२८.	करूम म्य है प्रभो! मंगल	४३
२६.	कृपा करतम हरी हरै	४४
३०.	कासि वननस रूदुमनय वारय नवदुर्गा करी म्योन चारै	४५
३१.	करिय दसखत अरज़ी म्याने	४७
३२.	कष्ट कास्तम भगवान हरे	४७
	ग	
३३.	गायत्री मुर दोरमुत	४८
३४.	ग्वर दीव लगयो म्य छि चान्य लादन	४६
३५.	गरि प्यठि आसय लारान लारान	५०
३६.	गट कास्तम बास्तम चवापअरी	५२

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
३७.	गाफिल म. बन पायस प्यतों	५३
३८.	गोडञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार	५४
३९.	गोकुल हृदय म्योन तति गुर्यवान (मोकत ब्योल)	५७
	घ	
४०.	धन्योमुत छुम मनस चोन भाव	६२
	च	
४१.	चानि बरतल राव्यँ रा'.च.य	६३
४२.	च़रा च़र छुक परमेश्वरो	६४
४३.	चित गोम शांत चोन प्रेम अमृत चोम	६४
४४.	च्ये सन्तान दिवान वन्य, वलै म्यान माज्य	६६
४५.	च्यक्षय करान अपराधन	६७
४६.	च्य माता कास्तम गंम	६८
४७.	च्यत आकाश भासतम	६९
४८.	च्यानि पूजायि हुन्द त्रोव प्रस्थान	७०
	छ	
४९.	छुस बुँशेव जिय स्य कित अच्छ पोश चारान	७१
५०.	छुक मोक्ष दाता पान. च़िय	७२
	ज	
५१.	जय जय जय जय जगमाता	७३
५२.	जाफर्य पोशस छु लक्ष्मी अंगतांय	७४
५३.	ज़न्मस इथ यति केह छुन लारून	७५
५४.	ज़ानखै कर ज़ान फिदाई	७६
५५.	जब सोप दिया इस जीवन का बार	७७
५६.	ज़गतिच च़्य माता शारिका	७८
५७.	जाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै	७९

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
	ट	
५८.	टोठतम विश्नापण कृष्ण ज़ीवय	८०
	त	
५९.	तरवुन छु करतोव हक दित छु वनन	८२
६०.	तोशतं म्यति माज्य ज़ार बोजतम	८४
	द	
६१.	दान मन सावित अथ धारनोवथस	८५
६२.	दितम दर्शन म्य वर्शण तल	८५
६३.	दिल फालि दर्शन चाने	८६
६४.	दिल लिया तु लोलअ जमजम	८७
६५.	देवी चरण चानिय भक्त स्वरण छिय	८९
६६.	दौरि दुनिया सोरि आखर	८९
६७.	देहकिस द्वारस ल़यि त्रो पराव.ञि	८९
६८.	दिम म्य रच़ त शुद्ध वाणी महा राज्ञाँ भवानी	९०
६९.	द्रायख लकाये नऽख्य हुनुमानस	९१
७०.	दुछि, दुछि भाव पम्पोश	९३
	ध	
७१.	ध्यान का वैद़ा करके सज्जन तूने	९५
७२.	धर्मुक धरै कोर ख'ति हा' खनसय	९६
	न	
७३.	नाव चोनुय म्ये ने माज्य सोरम्य न ज़ाह	९८
७४.	नेत्रॅ जलॅ गोडॅ दिमयो यूगीश्वरो	९९
७५.	नाद बिनदु परमानन्द लालै	१००
७६.	निरला वास दय वर्तन त्रिकाल	१०२
७७.	नव दुर्गाय माज्ये करै ज़ारपार	१०४

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
	प	
७८.	परि पूरण छु नूर भोरमुतये	१०५
७९.	पादि कमलन तल बुँ आसै	१०७
८०.	पादि कमलन तल म्याज म्यति वरतम	१०८
८१.	पां'नि पानस दितो वौ.नये	१०९
८२.	पानै बिहित पननिस वानस	१११
८३.	पानम्य पान हावित आशीयि धारनांवित	११२
८४.	पोत जूने मो.त वुज.नोवुम	११३
८५.	प्रये चाञे दयो नेरै	११४
८६.	प्रातः काल आव म्यति अनत गाश राऽगन्या	११४
८७.	प्राव कैवल्य हा केवलो	११५
८८.	प्रेम पोश लाग शेरि तंसजे	११६
८९.	परम धामुक चावतम दामो	११७
९०.	पाठ तय पूजा केह न छुस जानान	११८
९१.	पास कर दासस	११९
९२.	प्रभात आव पोश लूलो वनॅ	१२०
९३.	पाद चिञय सुन्दर आनन्द दायक (पंचस्तवि)	१२३
	फ	
९४.	फलि वनि सोन्त	१२८
	ब	
९५.	ब्यल ताय मादल व्यनं. गुलाब पंपोशत दस्ताय	१३०
९६.	ब्यल पूजा कर निश्कल कल माला धरस.य	१३०
९७.	बन्द कोरनस ब. बाशै	१३२
९८.	बॅ. ज़ारी गोश थावतम	१३३
	भ	
९९.	भेद दृश्टी सा'ञि हार	१३५

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
१००.	भ्रम छु संसार शम त. ज़ीवो	१३७
१०१.	भूलबाल बालकन सू.ति खेलनावतम	१३८
१०२.	भुवनेश्वरी अनुगह कर	१३८
	म	
१०३.	मधु कदैभ मारित युद्धवेष धारवनि	१४०
१०४.	मनि छुम मेलहा पननिस यारस	१४१
१०५.	मनि मंज ललवन कन्हैया लालो	१४२
१०६.	मुझे रामसे कोई मिला दे	१४३
१०७.	मेव कनि मख्त वोथ चन्दन बागस	१४४
१०८.	महा गणेशा मय छम च्येन माय	१४५
१०९	मन स्थिर कर	१४६
११०.	म्य सोगो पानदर्शन चोन	१४७
१११.	म्य दीवी कास्तम गाम	१४८
११२.	म्याज शारिकाय कर दया	१४९
११३.	म्याज भवानी सथ छम म्ये चा.नी	१५०
११४.	मा'ज्य भवानी सुँहस प्यठ सवार	१५२
	य	
११५.	यस छु हटि वासुक तस छु जटि पोञ	१५५
११६.	यार संदे दादि दोद मुत दिल बहारस कया करे	१५६
	र	
११७.	रस पूर्ण परम सदा शिवह	१५७
११८.	राधे श्यामहरि कृष्णा (हिन्दी)	१५८
११९.	राम लीला चाञिय़ वनय	१५९
१२०.	रात ग्य सऽरी प्रकाश नोन द्राव	१६०
	ल	
१२१.	लथ ला'इथ संसारस पतलारस ल'तिये	१६२

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
१२२.	ललवान सेरि हक ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि बोन	१६३
१२३.	लाला लगयो बाल भावस	१६४
१२४.	लल वा'ख (लल्ल्श्वरी)	१६५
	व	
१२५.	विनत बोजतम च राधा कृष्णा	१७२
१२६.	वुछित गत चांञ देवागत	१७३
१२७.	वलोश्याम लालो बॅ कोताचालै	१७३
१२८.	वन्दयो मन बुॅ पादन छारत राम राधन	१७४
१२९.	वीरभद्र कास्वुन छुख असि गम	१७६
१३०.	वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय	१७८
	श	
१३१.	शरना गत करतम दया माता उमा देवीनमः	१७९
१३२.	शरीर जोलन अपि मदन वारन (गजल)	१८१
१३३.	शिव नाथय प्यठ सपज़क स'तिये	१८२
१३४.	शुभ मुख हाव म्यति अमृत चावतम	१८३
१३५.	श्याम सुन्दर. वेह सुन्दर जाये	१८४
१३६.	श्री महाराज्ञी स्तोत्रम (त्रिजगत मोहनी इंडये मिहरी भूत सदगुणे)	१८७
१३७.	श्री निराकार त्रिभुवन सारै	१८८
१३८.	श्री राज रोजश्वरी आमति शरण छिय	१८९
	स	
१३९.	सखियव रूठमं हायरूठम हायं	१९१
१४०.	सत्जन बन मन कर कैलासय	१९१
१४१.	सन्यास, बेपरवारिय मस्तानै	१९२
१४२.	सिर्यि वुजनोवुम चन्द्रम सांवुम	१९४
१४३.	सुख शब्द दर्शन चाने आनन्द घन टाठि म्याने	१९४

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
१४४.	सुन्दरो सोन संदल गरै	१६६
१४५.	संकट कट अथ रट दयालै	१६६
१४६.	स्मरण पनञ दिच़ानम प्रमुक निशान०	१६८
१४७.	समरणि चाणि पाप सारि'य हा'री	१६६
१४८.	सनि आसय हा गोसनि	२०१
१४९.	समया स्यठा गोम	२०२
१५०.	सुःख त सम्पदा दाद्यन दवा	२०३
१५१.	सत्वर रछतम पादन तल	२०५
१५२.	सदाशिव सऽमियो कर म्योन चारय	२०६
	ह	
१५३.	हलमव हलमव गुलाब शरिकाय पूज लागोय	२०७
१५४.	हलमव हलमव गुलाब शंकर पूज लागोय	२०९
१५५.	होश पोश नूल थव कन	२११
१५६.	हतो ज़ीवो तसज़ यव कल	२१२
१५७.	हिमाल पर्वतने घरि ज़ायक	२१३
१५८.	हे कृष्ण ! दा छयना गछन	२१४
१५९.	हे दया ! बोज़ म्यान लोल नाद	२१६
१६०.	हे दय ! बोज कणै च्यय रुस्त कस ब. वनै	२१७
१६१.	हे दयालू ! छुस ब. च़ंचल लो लो	२१८
१६२.	हे निरंजन! कष्ट भजन	२१९
१६३.	हे प्रभु ! अज्ञान का'सित ज्ञान दिम विज्ञान दिम	२२०
१६४.	हौश दिम लगयो पंपोश पादन	२२१
	त्र	
१६५.	त्रिज़गत नाथ परम. आनन्दै	२२२
१६६.	त्रेयलूकी हन्ज़ रक्षाका'री	२२३
१६७.	प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)	२२५

ओं श्री गणेशाय नमो नमः

१. ओं शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नो पशान्तये।।

२. अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितोयः सुरैर्अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

३. गुरुर! ब्रह्मा गुरुर् विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरुर् एव जगत् र्स्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

४. अखण्ड-मण्डलाकरं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

५. अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षुर् उन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

६. नमामि सद्गुरूं शान्तं प्रत्यक्षं शिव-रुपिणम्।
शिरसा योग-पीठस्थं धर्म-कामार्थ-सिद्धये।।

७. वक्रतुण्ड़ महाकाय कोटि सूर्य सम प्रभुः।
निर्विघ्नं कुरूमे देव सर्म कार्यषु सर्वदा।।

८. महाबले महोत्सहाये महाभय विनाशिनि।
त्राहि मां दवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणाँ भयवर्धिनि।।

९. अचिन्त्य रूप चरिते सर्व शत्रू विनाशिनि।
रूपं दहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

१०. सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलो क्यस्या-खिले शवरि।
एवं मेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम्।।

११. ऊँ गुरूवे नमः परम गुरूवे नमः
परमोष्टि गुर-वे-नमः परमाचार्याय नमः
आदि-सिद्धभ्यो नमः

--o--

ध्यान

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणि मुकुट वर्ती रत्नताटङ्क रम्यां
हस्ताम्भेजैः सपा शाड.-कुशमदन धनुः साय कैर्बिस्फूरन्तीम्
आपी नोत्तुड.ग वक्षो रूह तटविलु ठतार हारो ज्जवलाग्डीं,
ध्यायाम् ओभारहस्थामरूण, विवसानम् ईश्वरिम् ईश्वराणाम्।।

माता भवानी, च पिता भवानी, बन्धुर्भवानी च गुरुं भवानी,
विद्या भवानी, द्रविणं भवानी, यतो यामि, ततो भवानी

मार्त नमामि कमले कमला यताक्षि, श्री विषणु हृत्कमल वासिनि विश्वमाता :।
क्षीरोदजे कमलको-मलगर्भ गौरि, लक्षिम प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

--o--

आरती गौरीस्तुतिः

१ ऊँ लीलारब्ध स्थापितलुपता खिललोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिरन्तर्हृदि मृग्याम्।
बालादित्य श्रेणिसमान धुतिपुञ्जां,
गौरी-अम्बा-अम्बुरु-हाक्षीं-अहं-ईडे।

२ आशापाश क्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम्
ईशीं ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां -गौ०-

३ प्रत्याहारध्यानमसमाधि स्थितिभाजां,
नित्यं चिते निर्वृतिकाष्टां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञाना नन्दमयीं तां तडित्आभां -गौ०-

४ चन्द्रापीडा नन्दितमन्द स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीडा लङ्.कृत लोला लकभाराम्।
इन्द्रो पेन्द्रा धर्चित पादाम्बुजयुग्मां -गौ०-

५ नानाकारैः शक्तिकदम्बैभुर्वनानि,
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयंमेका,
कल्याणीं तां कल्पलतामा-नतिभाजां -गौ०-

६ मूलाधारात-उत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलताङ्.गीम।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतनुं तामअभिवन्धां -गौ०-

७ आदि क्षान्तामऽक्षरमूर्त्या विलसन्ती,
भूते भूते भूत कदम्ब प्रसवित्रीम
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां -गौ०-

८ यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं,
भूयो भूया प्रादुरभूद अक्षत्-एव।
भर्त्रा सार्ध तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं -गौ०-

९ यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्वत्कापि चरं चाप्यचरं च
तामेध्यात्म ज्ञानपदव्या् गमनीयां -गौ०-

१० नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीश;
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च
विश्वत्राण क्रीडनशीलां शिवपत्नीं -गौ०-

११ सायं काले भवविशुद्धिं विदधानो
भक्तया नित्यं जलपति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिं सम्पतिमुञ्चैः शिवभक्तिं,
तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति -गौ०-

--o--

आरती

ओम जय जगदीश हरे

ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे। ओं०।

जो ध्यावो फल पावे, दुःख विनसे मन का।
सुखसंपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। ओं०।

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहू मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करुं जिसकी। ओं०।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रहम परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ओं०।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता। ओं०।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विध मिलूं दयालो, तुमको में कुमति। ओं०।

दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने चरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे। ओं०।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा। ओं०।

तन मन धन सब, कुछ है तेरा ''प्रभु''।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा। ओं०।

प्रभु जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवान्छित फल पावे। ओं०।

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनि।।
अघोर व्याधिनाशी च घोरदुःख निवारिणी।
अष्टा दशभुजा दुर्गा शारिका श्यामा सुन्दरी।।
निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिंदानन्द रुपिणि।
नमोसतुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणगतम्।।

ज्वालामुखि महाज़्वाले ज्वाले पिंगललोचने,।
ज्वालतेजे महातेज़े ज्वालामुखि नमोस्तुते।।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।।

या देवी सर्व भूतेषु दया रुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
सरस्वती महाभागे विद्ये कमल लोचने।
विद्यारुपे विशालक्षि विद्यां देहि सरस्वती।।
आकाशी चंडिका देवी पातीली भवनेशवरी।
मर्त्य लोके जया देवी देवी त्रिपुर सुन्दरी।।
प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रो पशोभिताम्।
पीठेश्वर्री शिला रूपां शारिका प्रणमाम्यहम।।

ॐ तत्स ब्रह्मअद्य तावत् अद्य, अमुकमासस्यः अमुक पक्षस्य तिथावमुकायां भववते आमाये कामायै चार्वग्यै टंकधारिण्ये तारायै पार्वत्य यक्षिन्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ता भगवत्यै, गंगा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, महा कालिका भगवत्यै, महा लक्ष्मी भगवत्यै, महा सरस्वती भगवत्यै, सिद्ध लक्ष्म्यै, महा लक्ष्म्यै, महात्रिपुर सुन्दरी भगवत्यै रत्न दीप, धूपं, कपूरं परिकलपयामी नमः

वीरभू वीर माता च वीर सूर्वीर नन्दिनी
जय श्री जर्य दीक्षा च जयदा जयवर्द्धिनी

इन्द्राक्षी नामसा देवी दैवतैः समुदाहृता। गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीतिविश्रुता। कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मविदिनी। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्ण पिङ्गला। अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिः तपस्विनी। मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी। महोदरी मुक्तकेशी घोररुपा महाबला। आनन्दा भद्रजानन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया। शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी। इन्द्राणी चद्ररुपा च इन्द्रशक्तिपरायणा। महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता। वारही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी। श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती। अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता। भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिकाऽशिवा। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्धशरीरिणी।

सदा सम्मोहनी देवी सून्दरी भुवनेश्वरी। सर्वमङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वाथे साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरिं नारायणि नमोस्तुते।

आहवानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम। पूजाभागं न जानामि क्षभ्यतां परमेश्वरि।।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसां चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

बोलो :- खीर भवानी माता की जय।।

--o--

शिव आरती

ओम जय शिव ओकारा, स्वामी हर भज ओमकारा,
शंकर पार्वती का प्यारा, भोले ऊपर जल धारा
शिव जी ओड़त मृगशाला, शम्भू गल मोतियन माला
सन्तों बोलो जय जय कारा,
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव भोले भोले नाथ महादेव

अर्द्धांगी धारा। ओम हर हर महादेव!
एकानन चतुरानन पंचानन राजे। भोले०
हसांसन गरूडासन वृषवान साजे। ओम हर०
दो भुज चार चर्तुभुज दस भुज तु सोहे। भोले०
तेरो रूप निरनन्तर, त्रिभुवन जग मोहे। ओम हर०
श्रेताम्बर, पीताम्बर बाधाम्बर अंगे। भोले०
सनकादिक कृपालादिक, शरनागत ब्रह्मादिक,
भूतादिक संगे, ओम हर०
अक्षमाला वनमाला रूण्ड़माला धारी। भोले०
चदंन मृग मघुलेपन भाले शशि धारी। ओम हर०
कर मे श्रैष्ठ करमण्ड़लु चक्र त्रिशूल धरता। भोले०
दुखहरता सुख करता, दुःख निश्चय हरता। ओम हर०
गायत्री पार्वती लक्ष्मी के वर विष्णु। भोले०
पार्वती अर्धांगनी शिव गौरा संगे! ओम हर०
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका। भोले०
प्रणवाक्षर के महा शिव, ये तीनो एका। ओम हर०
सचिदानन्द स्वरूप, त्रिभुवन के राजे। भोले०
चारोवेद उच्चारण, शकंर नाम उच्चारण
वन वन के राजे। ओम हर०
हाथों में कंगन, कानों में कुण्डल गल मोतियन माला। भोले०
जटों में गंगा विराजे औडत मृगशाला। ओम हर०
चोसट योंगन मगंल गावे, नृत्य करत भैरो। भोले०
बाजे ताल मृदगां, बाजे शंख मृदगां और बाजे डमरू। ओम हर०
काशी में विश्वानाथ विराजे नंदा ब्रह्मचारी। भोले०
नित उठ भोग लगावे शिवजी के दर्शन पावें। ओम हर०
पार्वती पर्वत में बस रही शंकर कैलाश। भोले०
अक्क धतूरे के भोजन, भंग धतूरे के
भोजन, भस्मा है वासा। ओम हर०
माता पिता तुम मेरे शरण पंडू में किसकी
तुम बिन और न दूजा, भोले शंकर बिन ओर न दूजा,

आस करुं मै जिसकी। ओम हर०
शिवजी की आरती निसदिन जो गावे
कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरि हर स्वामी
मन इच्छा फल पावे। ओम हर हर महादेव!

- इति -

--o--

प्रार्थना

जब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।

यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे।
मम अवगुण दोष समर्पित हों, भगवान् तुम्हारे हाथों में।।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तब चरणों का मैं भक्त बनूँ।
इस भक्त की तनमन का, रहे तार तुम्हारे हाथों में।।

जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से काम करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ-निराकार तुम्हारे हाथों में।।

मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्दु सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्दु सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे,
कोई न अपना, सवाए तुम्हारे।
तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे,

कोई न अपना, सवाए तुम्हारे।
तुम्हीं हो नेया, तुम्हीं खवेइआ,
तुम्हीं हो बन्दु सुखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्दु सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्दु सखा तुम्हीं हो।
जो खिल सके न, वह फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
जो खिल सके न, वह फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि, सदा ही रखना,
दया करो ना दयालु माता।
दया की दृष्टि, सदा ही रखना,
दया करो ना दयालु माता।
तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्दु सखा तुम्हीं हो।

--o--

* श्री हनुमान चालीसा *

दोहा :— श्री गुरू चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरो पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देऊ मोहि, हरहु क्लेश विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर सुमन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बदंन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरत सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कब कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लांघि गए अचरज नाहिं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत ना आज्ञा बिन पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू का डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक ते कांपे।।
भूत पिशाच निकट नही आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमान बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों युग परताप तुम्हारा। है परिसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावे।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहां जनम हरि-भक्ति कहाई।।
और देवता चित न धरई। हनुमन सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटे सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरूदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसी दास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

दोहा :— पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

--o--

(श्री राम वन्दना)

आपदा मपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।

रामाय राम भद्राय राम चन्द्राय मानसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्ग
सीता समारो पितवाम भागम् ।

पाणो महा साय कचा रुचापं
नमामि रामं रघुवंश नाथम् ।।

--o--

(श्रीहनुमानजी की आरती)

आरती कीजै हनुमान लाला की।
दुष्टदलन रघुनाथ कला की ।टेक।

जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपै ।१।
अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन कै प्रभु सदा सहाई ।२।
दे बीडा रघुनाथ पठायै। लंका जारि सीय सुधि लाये ।३।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ।४।
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे ।५।
लक्ष्मण मुर्छित पडे सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे ।६।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे ।७।
बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे ।८।
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जय जय जय कपिराज उचारें ।६।
कंचन थार कपूर सुहाई। आरती करत अंजनी माई ।१०।
जो हनुमानजी की आरती गावे। बसि वैकुण्ठ परम पद पावे ।११।

" बोलो बजरंग बली हनुमान की जय।"

--o--

गायत्री चालीसा

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं
भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात् ॐ

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ युतजननी गायत्री नितकलिमल दहनी।
अक्षर चौबीस परम पुनिता इनमैं बसे शास्त्र श्रुति गीता।
शाश्वत सतोगुणी सत् रुपा सत्य सनातन सुधा अनूपा।
हंसारुढ सितम्बर धारी स्वर्णकान्ति शुचि गगन बिहारी।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई सुख उपजत दुख दुरमति खोई।

कामधेनु तुम सुर तरु छाया निराकर की अद्‌भुत माया।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई तरै सकल संकट सों सोई।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली दिपै तुम्हारी ज्योति निराली।
तुम्हरी महिमा पार न पावै जो शारद शत मुख गुन गावैं।
चार वेद की मातु पुनीता तुम ब्रह्माणी गौरी सीता।
महा मन्त्र जितने जग माहीं कोऊ गायत्री सम नाहीं।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै आलस्य पाप अविद्या नासै।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी कालरात्रि वरदा कल्याणी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते तुमसों पावें सुरता तेते।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी जय जय जय त्रिपदा भय हारी।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना तुम सम अधिक न जग में आना।
तुमहि जानि कछू रहे न शेषा तुमहिं पाय कछू रहै न कलेषा।
जानत तुमहिं तुमहिं है जाई पारस परसि कुधातु सुहाई।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं माता तुम सब ठौर समाइ।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता पालक पोषक नाशक त्राता।
मातेश्वरी दया व्रतधारी तुम सम तरे पातकी भारी।
जा पर कृपा तुम्हारी होई ता पर कृपा करे सब कोई।
मन्द बुद्धि ते बुद्धि बल पावैं रोगी रोग रहित है जावें।
दारिद्र मिटै कटै सब पीरा नासै दुख हर भव भीरा।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी नासै गायत्री भय हारी।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें।
भूत पिशाचं सबै भय खावें यम के दूत निकट नहीं आवें।
जो सधवा सुमिरै चितलाई अछत सुहाग सदा सुखदाई।
घर बर सुख प्रबल हैं कुमारी विधवा रहें सत्य व्रत धारी।

जयति जयति जगदम्ब भवानी तुम सम और दयालु न दानी।
जो सद्गुरु से दीक्षा पावैं सो साधन को सफल बनावें।
सुमिरन करै सुरुचि बडभागी लहैं मनोरथ गृही विरागी।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता सब समर्थ गायत्री माता।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी आरत अर्थी चिन्तित भोगी।
जो जो शरण तुम्हारी आवैं सो सो निज वांछित फल पावैं।
बल विद्या शील सुभाऊ धन वैभव यश तेज उछाहू।
सकल बढें सुख नाना जसे यह पाठ करै धर ध्याना।
यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय तापर कृपा प्रसन्नता,
गायत्री की होय।

--o--

ध्यानम्

सरस्वती महा दृष्टा वीना पुस्तक धरिणी
हंसवाहनी समा रुढा विद्यां देहि सरस्वती।

शुक्लां ब्रह्म विचार सारपरमाम् आद्यां जगदव्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीम्-अभयदां जाड्यान्धकारा पहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।

नमोऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

नमस्ते गरुडारुढे कोलासुरभयङकरि।
सर्वपापहरे देवी महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।

--o--

भजन न. १

१ असि आय शरणे पूजा करने
जSनिय च्य ओमकार छिय
सास बदि पृणाम गुलि गड़ि गंडी
दन्डवत च्य भारम्बार छिय ! असि आय०...

२ सर्वयज्ञ अन्तर यामी दीवी
च्यानी बूँ सीवय चरणार बिन्द
कटीन क्रूठ अथ च्यनिस स्वरूपस
सोनो नमस्कार छिय असि आय०...

३ सास बदि ब्रह्म विष्णु महेश्वर
दीवी त देवता ब्ययि मुनीश्वर
इस्ताद शरण डेडि तल चाने
लच्छ बदि सन्त अवतार छिय।। असि आय०...

४ व्यग्यान सागर्स मन्त्र छि झीराण
फोकडून हिवि कति ब्रह्माडस्य
यन्द्रर चन्द्रर सिर्य यिमय
कात्याह बेशुमार छिय।। असि आय०...

५ ऋषि मुन्नी देवता तै कारणा
सSरी छि धाराण चोनुय ध्यान
जSनिथ मSनिय च्य पनुन जुवुय
निर्गुण निराकार छिय।। असि आय०...

६ अपरम्पार छय च्यानी लीला
कयाह हकव तुता करिथ
शरमन्द सSरी शर ख्यय गSमति
व्यास आदि बड़ि बाशकार छिय।। असि आय०...

७ चोश'वय वीदव ईन्यति शुद्धय
उपनशिदयण छिय च्ये ललवान
गोविन्द च्यानी गीतय छु ग्यवान
जऽनिय च्य सारिकय सार छुय
असि आय शरणे पूजा करणे
जऽनिय च्य ओमकार छिय़।। असि आय०...

--o---

भजन न. २

अर्थह रातन गुलि गन्डित बोज़ ज़ार म्योन
मा'ज्य भवानी अज़ करख ना चार म्योन
आदि म्योन तय अन्त म्योन आधार म्योन
सायि म्योन तय सार म्योन शह जार म्योन

अ'हमका तय अनपढ़ा जा'हिला
गा'फिला तय शरमसारा ना'दिमा
होल जिगरुक कास अन्धकार म्योन मा'ज्य०

जान निसारा दर्द दिल हथ्थ दरजिगर
पाप कर्मव आ'र क'रम'च़ छस मगर
पाप घटि अथरो'ट क'रयम सरदार म्योन मा'ज्य०

हां'गिना छुस मो'ल म्योनुय छुय पता
अख कतरा चा'ञ्य नज़रा छम सथ्ठा
च़य हय गोहर च़य दुरे शहवार म्योन मा'ज्य०

रूसि क'टह नाफ हिथ्थ छस दरबदर
असलची माता म्य मा छम केंह खबर
च़य ज्ञान तय च़य हय मो'ख्तयहार म्योन मा'ज्य०

तन्गदस्ती शरमसा'री तय हच्चर
सोरवञय दोह अन्त रो'स्तुय छुम सफ़र
आदिशक्ति जानवञ इसरार म्योन मा'ज्य०

तौव कलस प्यठ योर वोतसय शामनइ
मुर दारियथ त्र'थ बला'यिथ जामनइ
ख्यलि बुँ नेरा य'ति भ'रिथ दरबार चोन मा'ज्य०

साधव तय संतव तय योगियव
पडितव तय पाय्यिव तय ज्ञानियव
माज्य बुँ लगय कासि नय रोट बार मोन मा'ज्य०

दामनस तल माता रछतम परद सान
लुक पामन युथ न लगिहे म्योन पान
च़य हय सम्पत च़य हय भवसर तार म्योन मा'ज्य०

सा'यला छुस शान्त रूपी बोज़ सदा
अथ छो'न तय न्यथनोन आमुत गदा
शक्ति रूपी वो'ञ्य च़्य ईतनै आर म्योन मा'ज्य०

सर पथर पादन तलय म्य त्रोवमय
होल जिगरुक हाल पननुय भोवमय
दया रूपी जय च़्य बारम्बार म्योन मा'ज्य०

--o

भजन न. ३

१ अज्ञान घटे सिर्य प्रकाश छुक आसवोनुय
ज्ञान प्रकाश छक आसवोनुय
श्री सत्गुरू क्षण क्षण छुम आसर चोनुय ऊँ श्री सत्गुरू

२ च़य छुक ब्रह्मा च़य हा विश्णु-महीश्वरै
च़य विश्वमय छुक अज़र अमर अक्षर धरै
बर त्रन गुणन पादि प्रणाम भविनय म्योनुय ॐ श्री सत्गुरू

३ चान्यन पादन हन्दि गरदे अंजन
युस लागि नेत्रन देव द्रष्टि तमिस छि बनन
यथ न कांह वुछान तथ सदा च़य छुख ॐ श्री सत्गुरू
वुछवोनुय

४ दया सागर कर म्य दया दीनस श्रीनस
सि'द्धी दित्तम मदमोचन म्य बुद्धिहीनस
ब अद कस वन आ'रत्य नाद छुक ॐ श्री सत्गुरू
बोज़वोनुय

५ शरण ब आसय च़्य्य प्योसय परण पादन
वरूम म्य दासस थवतम कन आ'रत्यन नादन
तरन भवसर च्योन प्रभाव इमव ज़ोनुय ॐ श्री सत्गुरू

६ छुक सिद्ध योगी ब छुस रोगी दिम म्य दवा
औषद चान्यन पादन हंज़ गरद छ ना
उत्तम चूरण सर्व रोगन छु कासवोनुय ॐ श्री सत्गुरू

७ घटे गाशर चाञि दयायि म्य रूग हटे
मटे छुसय तार भवसर अके वो'टे
लटे अके मो'ख म्य हावतम प्रज़लवोनुय ॐ श्री सत्गुरू

८ सन्ताप अग्न पाप सू-त्यन गोमुत प्रबल
शेरस प्याठ थाव कर कमल पनन्य शीतल
संताप च़ल्यम पाप गल्यम नो'व तयं प्रोनुय ॐ श्री सत्गुरू

९ सेतार मनुक तार चा'रिथ सदा दिवान
हद यथ ना कुने बो'द्ध म्या'ञ सो'य स्तुता ग्यवान
वृत्र म्या'ञि नवान कनव बोज़तम लोल
वनवोनुय
ॐ श्री सत्गुरू

१० करतम स दया वरतम तल च़रनार बिंदन
छुक बोध द्रष्टि च़य दिवान अन्धन त मन्दन
अन्दान छुय न्याय चाञि दयायि कर पायं
म्योनुय ॐ श्री सत्गुरू

११ चिंतामनि सो'न च़ बनावान छुक त्रामस
फोतस मो'खतय पोखत बनावान छुक खामस
च़य घटि हुन्द लाल स्वामी नन्द लाल छुय
नाव चोनुय ॐ श्री सत्गुरू

१२ यी ब न ओसुस ती ओसुस ज़ानान ब पान
दयायि चाञे यी ब छुस ती म्य ज़ोनुम ट'कानं
रोवमुत लोबम पज़ि लबित नज़ि रावरोनुय ॐ श्री सत्गुरू

१३ इमन इमन गव ज़ि यि मन च़्यय सू'त्य लयस
दयस सू'त्यन गयि ज़ मीलिथ वा'ति पयस
भयस ज़य गोम दो'न म्य रूदुम कनुय
भासवोनुय ॐ श्री सत्गुरू

१४ भवसर तरनुक ''लीनकन्ठस'' बनितन उपाय
स्वामी नन्दलाला तप स्वामी लालजी रूज़ितन सहाय
छी तंग आ'मति अनज़ल ह्यथ छिय
मंगवो'नुय ॐ श्री सत्गुरू

--o--

भजन न. ४

अज़ वाति बूजुम मोल म्योन कोसम वतन व'थ रावसा'य ।।

१ लछ़ जन डुवित संताप ताप अतः करणा घर. नावसय
ठाकुर कुठिस मज़ रंग. रुत प्रग आदरुक पा'रावसय०

२ सौं.चरित र'सिलि र.ति कर्म. फल मस खा'मिस भ'र्य भ'र्य थावसय
अशि गंग वाञे खोर छलस रुमालि गुम. वुथरावसय०

३ तिम पाद हृदयय प्यठ रटित दु'ख दा'दि ज़न्म.कि भावसय
कोछि क्यत रछुन लोक.चारकुय स्मृत चित्तस अद पावसय०

४ भावुक घन्यर लोलुक सन्यर वा'लिंज़ मुचरित हावसय
नो.व नागरादस सूं तिज़न स्नेह मायि हुद वृजनावसय०

५ गुरु भावनाये सू.ति शेर नो.मरित खो.रन तल त्रावसय०
घ़र. बार ता'य आसुन बसुन सोरुय पनुन पशुरावसय०

६ गट. प'छि चन्द्र ज़न नाम. रूप अख अख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यछ मावसय०

o o o o

भजन न. ५

अज़ सा'ञ विनती सत्गुर साघ्य., कुनिय नादै बोज़।

१ रातस गं'ज़र्यम नभ.चे तारय
कृष्णा. चंद्र. इत प्रारै कूत
श्याम. रूप. सुबह फो.ल इन डलि वादै कुनिय०

२ विज्ञान. रव. चूरिमि पद्म पादै
चित्त बबूर सोन व्यूर ह्यत द्राव
गीत ग्यवि चानि सत्सग, संवादै कुनिय०

३ मायातीत अंत रस्ति अनादै
कुस अखा चा'निस अन्तस वोत
हे अगम अपार. आद्यकि आदै कुनिय०

४ मंज़ चावि माया सागर. उत्पत्त
छिय गछ़ान ब्रह्मांण्ड बुदबुद वत्
अवतार कारण देव अगाधै कुनिय०

५ चि़त्त अबलक चो.ल को.त पक. प्यादै
स्याज़ि बति को.छि क्यत रुन पकनाव
छुस पथर प्योमुत करुम इस्तादै कुनिय०

६ उन्मत्त भूता छुय ज़गत गोमुत
तथ मंज़ प्योमुत छुय ब. अनज़ान
सु विचा़रस बात. चानि प्रसादै कुनिय०

७ पानै सोरुय छुक उपदावन
कल. गिलनाबन बु.ति छुस कांह
पो.त ह्यत. हथि भ्रमके अपराधै कुनिय०

८ मेघ. वर्ण. रछत. व्यवहार.चि त्रटि मंज़
गहस्त गठि मंज़ नो.न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम. शब्द. अह्लादै कुनिय०

९ म्याजि भक्ति भावनायि हुंदि प्रह्लादै
सर्व आत्मा भाव सम दष्ट प्राव
सुख दुख सम ज़ान मंज़ कम ज्यादै कंनिय०

१० बुद्धि योग. होश. गछि. जीव. भाव मशनुय
वशनुय अद. चलि दोन आलमन
इथि मशन.कि नत. याद.कि यादै कुनिय०

११ अनुग्रह. चानि सू.ति भोग ब्रोंठ. इयतन
'कृष्णास' प्यतन भोग.नि तिम
एक. रस. ह्यस दिस ताल किंस्वादै कुनिय०

o o o o

भजन न. ६

अर्पा'य यर्पा'य च़ो.र्पा'य पानस ।
ब. पा'र्य लगस नाये लो लो ।।

१ शाह फेरि पानै शाह नत. क'भि खा'र्य
ब्याज़चि गयस त्राये लो लो
ज़ीनित छु बापा'र्य हा'रित गव ज़ा'र्य ब०

२ सुलभ तिमन.य इमव. तिम गा'र्य
नत. छा अंदन न्याये लो लो
दयि ला'नि व'ञम.च़ न.ज़ि मं'ज़िमि या'र्य ब०

३ सु दपि पानै मा खसनम बा'र्य
ब. दप. गयि लायि लाये लो लो
रूद क्या मूद क्या नुकसान क'मि च़ार्य ब०

४ क्रालन ज़िथुर्य मा' ग'र्यम.ति मा खा'र्य
इम ख्य'लि कत्यू द्राये लो लो
पूज्य मा र'छि चौपा'नि या ता'य चमा'र्य ब०

५ वाति मा दादस सु सा'द मका'र्य
दायि अकि च़लिहम वाये लो लो
दो.पनम च़. बलक चालखय वेमा'र्य ब०

६ मरिन. कूंछा बलन इम सा'र्य
मो थाव वोंदस ग्राये लो लो
'परमानन्द' ह्यथ छु सा'र.य तया'र्य ब०

० ० ० ०

भजन न. ७

१ अ'रिञि रंग गोम श्रावन हिये ।
कर इये दर्शन दिये ।।

२ श्याम. सोन्दर पामन ल'जिस
आम. तावह कोताह ग'ज़िस
नाम. पैगाम तस कुस निये कर०

३ कंव नाबद आरुदमुतुय
फंद क'रित चोलुम कोतुय
खंद. क'र्यनम लूकन थिये कर०

४ सुलि वोथवो संगर मालन,
लाल. छारोन कोहन त. बालन
प्रारान छस ब. तहंज़ि ज़िये कर०

-अरञिमाल

o o o o

भजन न. ८

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान ।
महा गणपत जय जयकार ।।

त्रि नेत्र धारी छुक च़ एक दन्तो
डय्कि छुय शूभान चन्द्रम तार
राज मुख बाल चन्द्र लम्भुदरो । महा०

सिज हंदि् दात छुख च विनायको
वल्लभा ह्यथ गगुर वाहन
दीवन हंदे च्य सिद्धि दातो ।
महा गणपत जय जयकार ।।

भजन न. ६

१ आमच़ मनस रच़ वासना ईश्वर सफल करिनासना।

२ एकांत किस गुहलिस अंदर उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपोश. पादन दो.न मलान पननिस गुरुस बो आस हा०

३ पूज़ायि विध केंह ज़ान मा लोलस निषध केंह मान मा
छय्पि चूरि कुनि म्यूठा दिवान लो.त तथ खो.रस बो आस हा०

४ य'च़ लोल. अ'दि वछ़ थाववुन अ'छ टीटि ररुत वोश त्राववुन
सुन्दर मुखचि इकांती वुछान तस सुन्दरस बो आस ह०

५ वाणी तसज़ विज्ञान मय ज़न साम ग्यवनस पान दय
तन मन ब'निन कन बोज़वुन मधुरिस बो आस. हा०

६ सत् शब्द नोन विस्तारिहे उद्गीत स्वर थोद् खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान श्रवणुक सुरस बो आस हा०

७ बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत संसार निश मोकलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय गत परमेश्वरस बो आस हा०

८ 'बंज़ तात.' ब'नि गारिहम
कर. पदन. हृदयस सारिहम
ज़ल बिंदु ज़न मीलित. गोमुत
सुख. सागरस बो आसहा०

० ० ० ०

भजन न. १०

ऊँ श्री गणेशयाय नमः

आसय शरण करतम दया टाठि श्री गणेशाय नमः।।
यज्ञस जपस व्यवहार सुय ग्वड़ छिय सुरान प्रथकार सुय
कारस अनान छुक च़य जमाह टाठि श्री गणेशाय नमः।।

१ गोडन्युक च्ये छुयं आधिकार कलि कालकुय छुक ताजदार
राज परन पादन प्यमा टाठि श्री गणेशाय नमः

२ जगतुक महेश्वर छुय पिता हावतम सत्य धर्ममच्य वथा
माता च्य छय श्री गौरी उमा टाठि श्री गणेशाय नमः

३ लगयो शेरस त पादन पुत फेरू छम चानि लादन
पूज़ाय चानि हुन्द छुम तमा टाठि श्री गणेशाय नमः

४ पतपत छुसय ब लारान वति वति नाव च्योन गारान
एक दन्त वक्रतुण्ड नाव हिवान टाठि श्री गणेशाय नमः

५ सुन्दर लम्भूदर एक दन्तु स्मरण मि च्यान वातिन म्य अन्द
हृदयस अन्दर नाव च्योन छुमा, टाठि श्री गणेशाय नमः

६ दोहय यिम करान चानिय स्मरण पूर्णा करान छुक तेहिन्द प्रण
चरणारबिंद अमृत चमा टाठि श्री गणेशाय नमः

७ प्रारान छुसय बुँ डेडि तल आलव चि म्योन गुय ना कनन
पनुनुय हाल भावनुक छुम तमा टाठि श्री गणेशाय नमः

८ चय छुक जगतुक आदि देव चय छुक लछि बुदि कामदेव
सिद्ध कर च्य म्यनि कामना टाठि श्री गणेशाय नमः

९ बाह नाव सुन्दर छि शूभवून्न स्वर्गस गच्छाव तिम लोभवऊ
सहायितस म्य रोज़तम हर दमा टाठि श्री गणेशाय नमः

१० मुषक च्य वाहन शूभवन, त्र्यन लोकन मंज़ फेखुन
रठ स सानि नावि हुन्द चुय नमा टाठि श्री गणेशाय नमः

११ छुक च्य शिवनाथुन सन्तान रात दोह म्य चिय कुन मनत प्राण
यछ बर'त पछ च्यन छमा, टाठि श्री गणेशाय नमः

१२ गणेश बल प्यठ आख चलिथ्य बन्द बन्द सन्द्रामलिथय
गुडनबोज़ सानि म्यान प्रारथ्ना टाठि श्री गणेशाय ननः

१३ डीढ वोन्य थवुनरव च पार्वती तार दिस नित्य यती
भक्ति भाव किन्य छय असि जमा टाठि श्री गणेशाय नमः

१४ दूरि प्यठ अनाथ आय लारान लोल पोश हित्य छि प्रारान
छुम स चानि शेरि लागनुक तमा टाठि श्री गणेशाय नमः

१५ गणपत गणेश्वर हे प्रभु कलि रोज़ राज़न हन्दि विभू
पजि लोल पादन तल प्यमा टाठि श्री गणेशाय नमः

१६ आमुत्य अनाथ छिय च्य शरण प्येमित खुरन तल च्य परन
वर दिथ दिलुक कासतम गमः टाठि श्री गणेशाय नमः

--o

गुरू भजन न. ११

(सत्गरु तार दितम भवसरै)

आराधना च्यानी करै, दूरे दितम म्ये पूरय।
सत् गुरू तार दिम भवसरै, आराधना चयानी करै।।

प्रव च्यानि तीज़च येलि पयवान, मन छुम भ्रमान तन छम च्मान।
छमु मशान शुरि त बअच् त टोठ घरय, आराधना च्यानी करै।।

मन्दछान मन्दछान छुस इवान, पापन पञ्यनन साम ह्ययान।
आरतिस म्य कास्तम आरच़रै, आराधना च्यानी करै।।

जप तप त ब्य विचार ज्ञान, अमि मन्ज़ म्य मा छम कुन्ची ज़ान
अनज़ान पोषु हयू मा मरय, आराधना च्यानी करे।।

रंग रंग च्य पूजान ज्ञानवान, कमि रंग पूजत छुस बूँ घअर ज़ान
लच्छ नाव कास्तम अरसरै, आराधना चयानी करे।।

शिव रुप क्या अक नाव चोन, मनुष्य रूप छुम प्रेम भाव चोन
गुरू रूप तार दिम भवसरय, आराधना च्यानी करै।।

भक्ति भाव किन लायान बुँ नाद, ग्वर बोज म्योन जारपारै
अर्जी कबूल करतम ग्वरै, आराधना च्यनी करै।।

छरि अथ बुँ आसे दरबार च्योन छुम क्या बुँ च्य मौहताज छुस।
चन्द छोन बुँ सौदा क्या करै आराधना च्यानी करै।।

--o----

भजन न. १२

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो

चन्द्र-अर्छ शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा

अलक्ष अगोचर छ्यपन गुफाये, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूतत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशाले

सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य़ मंज़ जटाये, श्विाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल शित्रूल धारान

भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारथि

वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, श्विाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
भवाय दीयो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य़ ज़ीवो

च्य जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नः ओं, नमः श्विाय।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम

वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि तिम चठ
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।

भजन न. १३

आशि चानि बरतल आस अनाथ ।
दास कव. छुस उदास अनाथ ।।

१ त्रय. ताप. हु'खमुत प्रेमुक स्त्रोह,
नेह छम न. च्यय व्यन ख्यम ना वेह
त्रेश. त्रेश. जन्म. जन्म. पिपास अनाथ दास०

२ इन्द्रिय इन्दरा'विथ छुम मन
सन्दरिथ लोल रेह छुम न. हिवान
ढुदमुत कमि. क.इ कास. अनाथ दास०

३ होन्यन अथि प्योमुत शाल जन
हाचि़ सू.त्य रूदम न. नम न्याल नु'न
काल गुंफि सह सनदि त्रास अनाथ दास०

४ सास क्रूह छंडिथ आशावान
अथ छुन फीर्य फीर्य सूर्य. इवान
लब. तब. देव. बरन्यास अनाथ दास०

५ होशव बो वूनच.मुत रोशन छुइ
वन. क्या हाल म्योन, रोशन छुइ
प्योमुत च्यानि आम. खास अनाथ दास०

६ पजि यी ती करनावत. म्य
ज़्यथ ज़्यथ मत. मरनावत. म्य
परमानन्द यूग अभ्यास अनाथ दास०

--o----

भजन न० १४

आसय बरस तल त्राव नज़र
माज्य राऽगिन्या अनुग्रह म्येकर
बूज़म च्ये निश माज्य मोन वपाय
यति् हय गछन हल म्येन अभिप्राय
योत इन छुन गछान बे असर ! माज्य राऽगिन्या.....

फेरान म्ये अजताम कोर म्ये कया
लोकचार बुँ च्ये निशं आस न ज़ाह
अज्ञान गटे थोवनस वे खभर माज्य राऽगिन्या.....

व्यान योद्ध बुँ आस खोरन तल च्ये चास्त
मोकलन म्ये पाप यति गव म्ये बास
देव चलि म्ये जन्मन हुन्द हच्चर माज्य राऽगिन्या.....

संसार भय देव् मोकलाब वन्य
वन्दह'स प्राण देव बनि म्ये पोन्य
देव है गछि म्ये करमस वोन्य सज़र माज्य राऽगिन्या.....

शाशत्र म्ये बूजम पारय दिवान
माज्य राऽगिन्या छि कृपा निद्धान
साऽरी दीव ग्वान च्योनु बज्ज्र माज्य राऽगिन्या.....

बर तल म्ये रवोत है फ्रक करान
छक नै म्याज औरय आलव दिवान
वन तै म्ये क़अचाह ईच़ कसर माज्य राऽगिन्या.....

कया गछी च्ये कम म्ये कुन तुल टोर
भवसरस युथ है तरहअ अपोर
वुँछहत बुँ च्ई साऽरसी अन्दर माज्य राऽगिन्या.....

योद है छुय च्ये सोन खयाल
तेलि कर दया वोन्य कड़ म्ये शर
माज्य राऽगिन्या म्ये अनुग्रह कर

--०

भजन न० १५

इत. दित. दर्शन भस्माधारै प्रारै कोताह काल ।
हे शंभो ! रक्षपाल स्वामी हे शंभो रक्षपाल ।।

१ हर. दित दर्शन मर. कास्तम आस्तम ना'ली नाल
लोल.चि बबरे तर छुम द्रामुत गोमुत छुम य'च काल
दयायि जल अथ बबरे सग दित पननुय अथ. च.य डाल हे०

२ मोह. सिधि उदरस मज़ छुस ईरै य'ति छुम सुम नत.तार
तल. छुम ज़लकुय नीजर हावान प्यठ कनि छुम गट.कार
नरि छम हजि ता'य ज़ंग छम बे सो.र किथ पाठि मारै छल हे०

३ फुच.मचि खो. परे मंज छुस प्योमुत प्यठ. छुम कर्मुक ताव
अ'न्दरी अन्दरी ग्रक छम चाम चं बत. ल्यजि हुद छुय छाव
शेहलन खा'त.र प्यठ कनि छकतम अक अमृत ज़ल चाल हे०

४ ईश्वर ! म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार
चय छक अनियन अञ.गट कासान चय छुक बखशन हार
य'मि किञि सा'रिय छिय च्य वखनान दीनन हुंद दयाल हे०

० ० ० ०

भजन न० १६

इतना तो कर ले स्वामी जब प्राण तन से निकलें ।
गोविंद नाम लेकर फिर प्राण तन से निकलें ।।

१ श्री गंगा जी का तट हो या जमुना जी का वट हो
और सांवरा निकट हो मेरे०

२ श्री बिंदरावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो मेरे०

३ सांवरा सन्मुख खड़ा हो बंसी का स्वर भरा हो
तिरछा चरण धरा हो मेरे०

४ सिर सोहना मुकुट हो मुखडे पै काली लट हो
यह ही ध्यान मेरे घट हो मेरे०

५ निकलें जो प्राण मुख से तेरा नाम बोलू' सुख से
बच जाऊँ घोर दुख से मेरे०

६ मुझ 'दास' की इस अरज़ी को मानना न फरज़ी
आगे है तेरी मरजी मेरे०

० ० ० ०

भजन न० १७

ओम् पर.वुन हंस ताजदार, कमि वन.कुय जानावार ।

१ ज़ाल. लगिना सुयय अनका माल. गंडहस छुम तमन्ना
नाल. रटहन सुय बाल यार कमि०

२ कोछ ब. दिमयो हा कावो गछत वनतम दियि दर्शन
वछि वाँ लिंजि भावस असरार कमि०

३ पोशनूलव पोर यि हंसो कुकिल बोलान गोविंद.गो
हर मुख.छा किन.हरिद्वार कमि०

४ प्यठ गोशन र'टनम जाय का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंद हंदर्यस त. रोश चलियार कमि०

५ खत ब. लेखस हटिके रत. ज़ा'विलि खत सू.ति शोभिदार
इयि नत. छुस ब. दा'वादार कमि०

६ बा'लि अनताने मा का'लि का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामे तस छि ज़रकार कमि०

७ हंस पख.वय पत. लारोस प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि लगि सोरि लोक चार कमि०

८ दरद. सोज़क संतूर साज़ सासि परद. ग्यवि कस्तूर राग
ब.ति तिय तिय बनान कोल.तार कमि०

९ 'भास्कर' चेन त सासन मंज़ रुम रूम. खास छु भासा'नी
ललवुन छुम सु सिरि असरार कमि०

० ० ० ०

भजन न. १८

ॐ श्रीमत ही.भवा'नी छम में आशा चा'नी।
क्षणसय मंज़ दोख त संकट दूर करतम च्यय म्या'नी।।

छय च्यय अरदाह बो'ज़ भवा'नी,
छख सुँहस प्यठ च्य-सवार,
अन्दय अन्दय दीवता च्य सा'री
छी करान च्यय ज़ारपार।
अष्ट सय्द आदीन च्यय छी
पाद चाञि न्यथ छला'नी।
क्षणसय मंज़ दोख त, संकट
दूर करतम, च्यय म्यानि।
सिर्ययि तय बेय' चन्द्रम छुय
प्रारान चेय हुकमस।
कर करि मा'ज भवान्य आज्ञां
प्रकाश बनि ज़गतस।

च़्यानि प्रकाशि किन्य छु सन्तोष्ट
त्रोभुवन रोज़ा'नी।।
क्षणसय मंज़ दोख त संकट,
दूर करतम च म्यानि
ये'लि यन्द्रांज़, बे'यि दीव.अन्य,
तंग महिशासोरनय।
यन्दुराज़ ओय च़्यय शरनय,
पादन च़्यय प्योय परणुय
पत, पत, तस - दीवताह आय,
फ्रक ह'त्य त दो'नी।
क्षणसय मन्ज़ दोख त संकट
दूर करतम च़्यय मयानि।।
बूजुथ तिहुन्द हाल सोरुय।
अद, महिशासोर, सय।
वात, नोवथन पाताल येलि,
ज़ीर दिचथस खोर, सूत्य
मकोला'व्यथक भयि निश दीव
करथक मेहरबा'नी।
क्षणसय मन्ज़ दोख त संकट,
दूर करतम च़्यय म्यानि
ॐ शबद, छख सर्वशक्तिमान,
महामाया च़्यय वनान।
काम, क्रूध, लूभ, मोह त अन्धकार
भक्तयन छख च कासान।
च्यानि भक्तय छी शिव शक्ति रूप
ध्यान च्योन दारा'नी।।
क्षणसय मंज़ दोख त संकट्
दूर करतम च़्यय म्यानि।
बोज़ान छख विनती च़्यय

ये'ति चोनुय छु दरबार,
च्यानि हुकम सू'त्य सारि ज़गतुक
छु चलान अद कारबार।
अस्यति आमत्य विनती करने'
दोरान त लारानी
क्षणसय मंज़ दोख त संकट
दूर करतम च्यय म्यानि।।
मा'ज बोज़तम छय में हाजथ,
अक भक्ती म्यय चा'नी।
गरि गरि रोज़तम में सन्मोख,
हृदयस मंज़ भवानी।
सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ में बनि
नेरि अमृत वाणी।
क्षणसय मत्ज़ दोखत संकट
दूर करतम च्यय म्यानि।।

--०

भजन न. १६

ओस कस रूज़ित अदरी वैर क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पर. पहा'र
मुरलीधर. सु'द छुमा यी खैर क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पन.पहा'र

१ थो.कुमत सुदामा घर. यलि आ'व, नेत्रव त्रोवुन अ'शि द'रियाव
यति कुस राजा रोज़ान गैर कमि०

२ कति छुम घर. बार यो.तको.त आस, फाकै वां'लिजि गोम तलवास
गाम. च़ कोत म्या'ञ तुलसी वार कमि०

३ कति गयि पा'द. इम गुल त. गुलज़ार
आंय कति योतनस मोक्त. फँवार
रंग. मंदोर्यन ल'ज़ ना ता'र कमि०

४ आय कर यो.त इम दास दा'सी शुर्य म्या'नि गय मा.वन वा'सी
मायि ह च़ भार्या द्रायि ना सा'र कमि०

५ को.त गयि मा'सूम सुन्दर पोश लोल आम वुछहक रोवुम होश
मूरान गुलि ओस प्राटान दा'र कमि०

६ ओरुत सुदामा गव परैशान व्य'खच़य माया ओस डेशान
द्रायस सुशीला बुथि वन हा'र कमि०

० ० ० ०

भजन न. २०

जय जगदम्बे ।।

ओरुत प्रारान छु क बर तलै बलै दर्शन. सू.ति ।
घनेम. च़ मा'जि छम चा'ञे कलै बलै दर्शन. सू.ति ।।

१ संसारण म्य ग्युँदनम छलै मिलनोवनस म्य'चि़ सू.ति
अज्ञानन बो को.रनस नलै बलै०

२ मायायि कोरनं मन चं.चलै मस्त गोस लोभस सू.ति
मोहन आवरुस रो.टनस तलै बलै०

३ पापन हं.दि बारि छु अल.अलै चा'रिथ छुस रज़ि सू.ति
मंज़िलस किथ वात छुस निर्बलै बलै०

४ सो रुम न नाव चोन सुय छुम मलै छ्यो.नुस ब. इत ग'छ. सू.ति
आवागमनच कास गांगलै बलै०

५ मन दर्पण म्य कर निर्मलै मल्युन छु गरदे सू.ति
दयायि हंज़ करतस सैकले बलै०

६ व्या'पित सोरुय छक ज़ल स्थलै भ्रम छुम अज्ञान. सू.ति
दुइ कास युथ ''सि कुन केवलै बलै०

७ ज़जरयोमुत छस बो कवलै फों.ल चानि अनुग्रह सू.ति
सरताज़ बो बन. दयायि ज़लै बलै०

८ मा'ज्य रटतं दामनस तलै खोच़ान' छुस भय. सू.ति
प्रेमच न्यंद.र म्य पांव जल ज़लै बलै०

९ भक्ती दिम तिछ युथ नय डलै बनि चानि कृपायि सूति
अद म्य जन्म गछि सफलै बलै०

१० अशि ज़ल. गो.ड दित पाद बो. छलै तिम रट. हृदयस सू.ति
लोल.सान करक बो मोर छलै बलै०

११ 'हंसा' आमुत छय बर तलै मगान आ'र्चर सू.ति
मो.कलावतन य'मि मायायि छ़लै बलै०

० ० ० ०

भजन न. २१

कर इयि म्य कुन गिंदुन दिमस च'दन हार ।
आद्य शक्तिय शिव जियस नमस्कार ।।

१ ओमय आद्य ओम्स अन्दर पञ्चाकार
ओम्य ज़गत धारित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्योन-२ छुस विस्तार
ओम्स पा'र्य. ओम्स हर मुख. नमस्कार आद्य०

२ ओमय छु सार. ओम.चि स्मुरण मनस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देव. प्रमाण थावक. बनि उद्धार
भक्ति स.तिय लय कर भक्तयो लभक तार आद्य०

३ मोह.चि न्य'न्दार अन्दर म. गछ गिरपतार
बोघायि अन्दर न्य'न्दरि गछ़तो खबरदार

स्यो.ध वो.थ न्यन्द.रि इन्द्रिय क्रीडस निश रोज़ खबरदार
दिल थव डंजे लंजि छुय बिहित जानावार
बोला नावुन लोल. पनने सुय सू.य ओमकार आद्य०

४ आनन्दमय बनक प्याल. चावनय मालामाल
भावनय सोंरुय स्वमनि सोऽहं सहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निगुर्ण छु पानय निराकर
अनतन लये मनस स.तिन पुनन यार आद्य०

५ पान पनुन य'मि कोर.सही. ब. संसार
बही त'मिसंज़ सही सॉ'प.ञ ब. सरकार
'वासुदेव.' मेलब देवाद्यदेवस ब. विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नाद् बिन्दस छु बारंबार आद्य०

० ० ० ०

भजन न. २२

कर सन. कुनुय बनि सू.ति तस ज़ानानस.य जानानस.य
तन लोल. नारन ज़ा'ज़नम अनज़ानस.य अनज़ानस.य

१ मयकिस दूकानस व'थि छि बर पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
चन रुस्त ब. छुस आ'सित अंदर खुमखानस.य खुमखानस य०

२ निश आ'सिथ.य दूर्यर म्य प्योम रूसिस न. पय नाफुक नन्योग
छांडान सुगंध दिल तारि गोम नादानस.य नादानस. य०

३ गोस नज़ि पयस मो.कुंजारकिस कोचस ब. गोस व्यवहारकिस
सों.बरनि लो.गुस संसारकिस सामानस.य सामानस.य०

४ देव आ'सिथय ज़ीव नाव प्योम सो.न आ'सिथय म्यज़ि त्राम गोम
मो.क्तस म्य फोतय खाम गोम दुरदानस.य दुरदानस.य०

५ अद्वैत अमृत कुय सु मस चन.सू.ति ब. बनहा एक रस
दु.य रोज़िहे कति म्य त. तस कुनि आनस.य कुनि आनस.य०

६ य'च़ काल कुय.तस निश जुदा गोमुत ब. छुस मेलि ना सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर देवानस.य देवानस.य०

७ यत दा'दिस.य गछि वैद्य वनुन तस बावहा बो सिर पनुन
नत. राज़ि दिल क्या छुम वनुन बेगानस.य बेगानस.य०

८ 'नीलकंठ' प्रेम.चि वति च़.नेर वातक मुकामस पुत म. फेर
प्रावक च़. अद.कैंह लगिन चे.र निर्वाणससय निवार्णस.य

० ० ० ०

भजन न. २३

१ कर सना ह्यियि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव ।
कर सना इयि भासि असि पोज़ रुत सुन्दर श्री कृष्ण देव ।।

२ कर सना गट कुठरे अनि गाश वुज़मुत स्व प्रकाश
बांदिवान.चिच बेडि फुटरित खोलि बर श्री कृष्ण देव०

३ वैर लोभ त. द्वेष ता'य अन्याय रूपी दानवन
चक्र सू.ति अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव०

४ ज़ोर ज़र रस्त्यन दरिद्रन दलितन करि यावरी
द'दिम.त्यन शेहलावि दिन शीतल नज़र श्री कृष्ण देव०

५ अर्ज़नस दित आज्ञा बददिल म. बन थोद वुथ च. लड
कासि ना आसि दीनता पस्ती हच़र श्री कृष्ण देव०

६ कृष्ण पूज़ा क्या छय ? पालुन त'मि सुंदुय थोद कर्म योग
धर्मचे वति हुंद बनावुन राहबर श्री कृष्ण देव०

७ यमि न. वरतावस ओनुन गीतायि हुँद अक ओड श्लोक
लाभ क्या थ्यक.नावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव०

८ का'र नोमरित दित बुथिम अथ अ'सि वदव ना शर्मि सू.ति
वुञक्यनस असि मंज़ अगर इयि चक्रधर श्री कृष्ण देव०

९ सा'नि दुख ता'य दा'दि त'मिसं दि इम्तिहान निष्ठायि मंज़
हाल निशि न त. सानि व'निज्या बेखबर श्री कृष्णर देव०

१० कृष्ण से.दे लोल इम आम.ति दि यो.त श्री कृष्ण भक्त
अज़ कर्यक प'जि किञ सफल ज़न्मुक सफर श्री कृष्ण देव०

-स्व० मास्टर ज़िंदा कौल

० ० ० ०

भजन न. २४

करसै सो.न पोशन माल ।
अज़ इयि लाल. सोनये ।।

१ मय खा.नके हा कल. वाल असि मय ह्योत चो.नुये
प्यालत. त्याल. माल माल अज़०

२ तसुँदुय मय त. तसुँदुय प्याल तसं.दे वान.क.ननै आव
खुँब.चि कुँज़' तस हवाल अज़०

३ दूर्यर त. लो.ग कोताह चाल. मूरे नार छुम ललवोन
शूरे पान क'हि संभाल अज़०

४ य'मि लायि लोल. सोदरस छाल त'मि खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंत बहाल अज०

५ तेजोमय युस नूरान. विज़े वुज़नावन गोम
करसै शिल दिल हवाल अज०

६ केंह गय रिंद केंह रिंदान केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
केह गय अचित च्यवान प्याल अज०

७ दाग सुय ह्यत कुनि गुलालि. बाग.चि हिय सु छाव्यम ना
नाबस तन ना ता'य रटनै नाल अज०

८ केंच़व को.ड मुल.क दाल. केंचन निशि हावान पान
केंह गय बर. ज़न गुलाल अज०

९ व'लि म्य त'मिसं.दि लोल.कि जाम अज़ इयि श्याम सोंदर सोन
सुय इग्रि 'वासुदेव नि' साल अज०

० ० ० ०

भजन न. २५

१ कमल च़रण रटोय शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

स्तुता परन परन शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

२ च़य छुक भक्तन वरण शरण च्य आये
च़य छुक दुखन हरण शरण च्य आये
च्यय मोक्ष दातस मोक्ष य मंगव करव नमः शिवाय

३ बडय्व योगव सू.ति सत् संगव करव नमः शिवाय
उत्तम पदव त. सुन्दर भंगव करव नमः शिवाय
अधर्मियन स.तिय जंगव करव नमः शिवाय

संसार. सुमन्दरस तरव करव नमः शिवाय
अज़ ताम तिय वोन महा ज़नव करव नमः शिवाय
तम्युक निर्णय आ'सि क्या वनव करव नमः शिवाय
'कृष्णान' सत सोर त. सत बोज़ करव करव नमः शिवाय
मोलकलाव रटि मायि पनन्यव घरव करव नमः शिवाय

० ० ० ०

भजन न. २६

१ कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।

२ दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी आ बदला नेक है बद से बदी की बाते ले।

३ मेवा खिलाओ मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले ।

४ कांटा किसी के मत लगा गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे कह में तीर है किस बात पर झूला है तू।

५ मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता बेखबर किस बात पर भूल है तू ।

o o o o

भजन न. २७

कस क्या छु ज़ेनुन यमि संसा'री ।
सा'रिय गयि हा'र्य हा'रिये ।।

१ को.त गयि बब त' मा'जि भा'य बघ त. या'री सा'रिय०
अक अ'किस तिमन. कांसि कांसि प्रारिये
ता'र ल'जिन. तस यस यलि वा'च़ वा'री सा'रिय०

२ यमि देह. पुछि़ क'र म्य जान निसा'री
र्बायन प्यठ खा'र्य बा'रिये
कुनि विज़ि दज़ि पत. चि़त्तायि ना'री सा'रिय०

३ केंचन गुर्य 'स्ति रथ सवा'री
केंह न्यथ.ननि त. नन.वा'रिये
वुछि वुछि बुछि इम काल. शहमा'री सा'रिय०

४ नाम. रूप. जंगलस कर्म. कुलि बा'री
विगि विगि गयि उजा'रिये
उत्पन्न भ्यो.न म्यो.न उतपात सा'री सा'रिय०

५ वासनायि ब्योल ब्यायि न'वि नोव खारी
भो.वि भो.वि बारंबा'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद. त. हा'री सा'रिय०

६ ज़गत अरहटस देह तोल. वा'री
कर्म.रजन.य चा'र्य चा'रिये
छ़रि लट. लट छक पोत्र सा'यो सा'री सा'रिय०

७ मनुष्य मोर प्रा'वित देव हितका.री
यथ मंज़ सर्व आधि का'रिये
गछ़ि न रावरुन छु दुर्लभ त. दुश्वा'री सा'रिय०

८ छ़यन. गोमुत पान परम. सुख. धा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख भा'रिये
मोह. भ्रम. राज़. आ'सित बेचा'री सा'रिय०

९ व्ययि कोच़ मो.कलन य'मि अँधका'री
सत् सिर्यिकि चमका'रिये
चलनस न्याय बलनस बेमा'री सा'रिय०

१० योद कां'सि मुच़रन बरत्रन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
च़ारनस त. खारस लगि विच़ा'री सा'रिय०

११ भक्ति श्रवणन बोजि कन धार्य' धा'री
प्रेम नेत्रव अ.ष तार्य ता'रिये
साधन गुरुन लग्य पादन पा'री सा'रिय०

१२ वणस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारं पा'रिये
वे इख्तियार युद बनि बा इख्तिया'री सा'रिय०

१३ ''लक्ष्मण'' परम आनन्द चोपा'री
साक्षी छु साक्षात् का'रिये
पानै पानस करि उद्धा'री सा'रिय०

० ० ० ०

भजन न. २८

करुम म्य हे प्रभो ! मंगल वरुम चरणार्बिन्दन तल ।।

१ शरण आसै ब. दयि नावस च. टोठ्योक शरणय भावस
ग'डित छूस भक्ती हुंद अंज़ल वरुम०

२ वुज़ान छुम चानि प्रेमुक स्नेह करुम अनुभव म्य नो.न अनुग्रह
गछ़यं युथ वासना निर्मल वरुम०

३ दिम्य शक्ति पातकुय प्रसाद वुछ न छुस कोन. चानिय पाद
तवै छुम चित्त गोमुत चंचल वरुम०

४ छु चोनुय आसनुय सन्मुख छ.यनन दुख प्राव निर्भय सुख
म्य सो.य भक्ती गयम सुफल वरुम०

५ छो.चर छुम ओसमुत कर्मुक यि ब्रह्मणा ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल वरुम०

६ वुछस पुनर आव्ती कालन फसोवमुत वासना ज़ालन
म्य कास अविद्यायि हंज़ गांगल वरुम०

७ गछयं सत्ज्ञान त्युथ उपदुन इयम युथ दष्टि मंज़ दो.न कुन
छु सोऽहं नाव युथ केवल वरुम०

८ म्यु रोजुन ग'छि न रज तय तम वनुन तत् सत् गो.छस उत्तम
छसै स्वभाव. किनि शीतल वरुम०

९ दया हंज़ दृष्टि कुञ केवल करुम अतर् बहिर् निर्मल
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल वरुम०

१० दितम विकार. अग्नुक बल दजन कामादिक'कि जंगल
वुछन स्वप्रकाशचिय वुज़माल वरुम०

११ हे केशव. ! केशव अर्पणै सदा निर्मल सदुर्शनै
म्य फो.लनाव द्वादशांत मंडल वरुम०

० ० ० ०

भजन न. २६

कृपा करतम हरि हरै ब. क्या करै ज़ोर ।

१ लूसित प्योमुत छुस बुज़रै खो.तमुत छम बों.ड बोर
यथ पंचालस किथ. पा'ठि तरै ब०

२ आर.ह छु वज़ान वो. गानि दरै बारह छु करान शोर
छो.प छु करान समन्दरै ब०

३ व'नि व'नि य'च गोस चखि अंदरै ननन ज़न छुस चोर
छोपि हुंद सुख दिम योगेश्वर ब०

४ पख. छम जरिमच़ छुम ज़र-ज़रै बन्यो मृत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आ'रचरै ब०

५ सन्मुख रोज़तं श्याम. सों.दरै प्रभात ह्युव चो.पोर
युथ न. पंपोषस दोह लगि दरै ब०

६ आभास. चानि स.ति गा'म ति खरै अन्तः करन चोर
भ्य भास प्रकाश रूप ईश्वर ब०

७ त्रिगुण उलंघितछुक शंकरै शक्तियि चानि छुस लोर
ओ. गणिास दो. गणाव कुनिय वरै ब०

८ चो.रों.ग ज़न म. फिरनाव घर, घरै यि बा'ज़िगर छा सोर
दूबार. म. डाल प्यठखा'र दरै ब०

९ अन्दर च़ा'नित ज्ञान, घरै हावुम चूरिम पोर
तथ मंज रूज़ित आनन्द भरै ब०

१० 'कृष्णास' मुच़राव बाव.कि बरै कुनिय वरै तोर
युथ लरि ह्यथ च्यय बसि अमरै ब०

० ० ० ०

भजन न० ३०

नव दुर्गा लीला

कासि वननस रूदुम नय वारय
नव दुर्गा करि सोन चारय।।

१ लगिमित छय चेनिस जप सय
सिद्धि करतम म्यानिस तपसय
प्रथ कारस माज्व दितम तारिय।। नव दुर्गा०

२ शैलपुत्री कनथव नादन
प्राण वन्दय च्यान.न पादन
कन थावतम बोज़तम ज़ार पारय ।। नव दुर्गा०

३ ब्रहचारि ब्रह्मनिश रछतम
सनमुख म्य र्दशन हावतम
मतय त्रावतम यमि संसार य ।। नव दुर्गा०

४ चन्द्रघण्टी कास्तम खैयरी
लोल मन सीत करहय ज़ाऽरी
जूयूठ संसार क्रूठ व्याहारय ।। नव दुर्गा०

५ कुषमाण्डी लगहय नावसय
अंपन छुसय चयानिस नावस
मुकलाव तम नरकनिय नारय ।। नव दुर्गा०

६ सकन्दमात्री शरण बय आसय
काम क्रोध लोभ अन्दकार कासतम
नाव चानि सीत नावि लगयम तारेय।। नव दुर्गा०

७ कात्याँयनी मुशकिलन करूम हल
अहंकारन रोटमुत छुनस तल
चारि करतम बह गछय मारय।। नव दुर्गा०

८ कालरात्री कालभय कासतम
परि पूरण मनस मन्ज़ म्य बासतम
गाश हावतम मंज़ अन्धकारस ।। नव दुर्गा०

९ महागौरी शरण बुँ आसय
पाप म्यानी माता चय कासतम
मोकलाव तम नरकनि नारय।। नव दुर्गा०

१० सिद्धि दात्री सिधी म्य करतम
इनि गछननिश माज्य मोकलावतम
असय साऽरी करान छिय ज़ार पारय।। नव दुर्गा०

११ दास वुलमुत छुनस छुय गमनय
पोशि चमनय छुय सगनावान

चमनस मज़ मुशकिन धारय।। नव दुर्गा०
कासि नय रॉट म्योनुय बारय।। नव दुर्गा०
कासि वननस रुदुम नय वारय।। नव दुर्गा०

--o--

भजन न० ३१

१ करिय दसखत अरज़ी म्याने
योर आमति असि हय, आरहती।
मायि च्यानि ह्यथ, पोश फती
पोश लागोय असि शेरि च्याने करयि दसखत....०

२ कर्म लोन म्योन च्य हय सिज़राव तम
इम हल्य अक्षर तिम नहा नांवतम
गो.ड बुँ दिमयना च्य अशि वाने। करिय दसखत....०

३ छुस हच्च लध दक्कज़द प्योमुत
डेडि च्याने तल ज़न पत्थर प्योमुत
जन हय लोगमुत बुँ अलबाने। करिय दसखत....०

४ आसवनि छख तुलमुलि थानस
बासवनि छखय म्य यथ जहानस
अनुग्रह च्योन छुमय दानि दानि। करिय दसखत....०

५ म़ाज्य राज्ञनिय इतन्य च्य आरिय
यति बरित छुय च्योन दरबार
खअल बुँ न्यैरा दरबार च्याने
करिय दसखत अरज़ी म्याने।

--o--

भजन न० ३२

कष्ट कास्तम भगवान हरे
संतुष्ट रोजतम गरि गरे ।

१ भ्रमचे वुनरे वुन, रोवुस
मूह छटि अत्रि घटि वति रोवुस
च्यय रुस्त कुस में अथ.रुट करे संतुष्ट०

२ भव. सर. कूर्म.नय रटिनम खोर
इमज़ोर ला'गिथ गोस कमजोर
छांबरि लुगमुत छस बांबरे संतुष्ट०

३ वेरि. ब. लागय शेरि पम्पोश
गद गद वानियन थावतम गोश
वद. वद. चच़ छम मिज मा हरे संतुष्ट०

४ बैकुण्ठ प्यठ इत नन, वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'विथ सवा'री
मुकलावतम संकटच थरि संतुष्ट०

५ संकट मंज तस प्रह्लादस
कन थोवथस आरच़र नादस
हरनाकश्यप. अद. मद. वुतरे संतुष्ट०

६ हंग आख द्रौपदी नंग रछिथस
नंग, वुछनस तस सामरथ कस
रंग रंग आभरण ना'ल्य तस हरे संतुष्ट०

७ लक्ष्मण छ़ारुन परमानन्द
च़र चराचर युस अंद त बंद
लो लो करान नेरि उन लोलरे संतुष्ट०

--o--

भजन न० ३३

गायत्री लीला

थऽकिथ छे'निथ होरमुत
गायत्री मुर दोरमुत
प्रातः कालस हंसस खऽसिथ
ब्रह्मा रूप छुन दोरमुत

मंदिन्यन बाऽग्यन गरुऽडस खऽसिथ
विष्णु रूप छुन दोरमुत
सायम कालस ब्रे'शिबस खऽसिथ
शंकर रूप छुन दोरमुत
राखिसन हुँदि नाशे बापथ
काऽली रूप छुन दोरमुत
बऽखत्यन पनुँन्यन अथुँरो'ट करने
लक्ष्मी रूप छुन दोरमुत
मनुष्स बुदी शुदी करने
गायत्री रूप छुन दोरमुत
थऽकिथ छे'निथ होरमुत
गायत्री मुर दोरमुत

--o--

भजन न० ३४

ग्वरॅ-लीला

ग्वरॅ-दीवॅ लगॅयो छि 'चॉन्य लादन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।
चॅय मयोन नख-डोख च़य तरण-तारण,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।।

कर स्वीकार म्यॉन्य भावॅक्य पम्पोश,
फोलनेस आय यिम, चोनुय छु जोश।
होश दिथ म्य पनॅनुय बुथ नोवरावन।। पादन०

सत्ग्वरॅ च़ आसवुन त्रिभुवनॅसारय,
चॅय मोलमॉज म्योन ज़ॉऽकारय।
करतम म्य वादॅ पूर; कंन थव म्य नादन।। पादन०

ग़ट चॅय म्य कासतम, मत दॅशिरावतम,
करतम लटॅलट तॅ इतॅगछ् दूर।
पनॅञे कृपायि सूॅत्य च़ठ म्य क्रूड़ॅ-ज़ालन।। पादन०

प्योमुत पथर छुस वति प्यठ अनज़ान,
करॅ क्याह च़्यूय रोस्त ? वथ म्य हावम।
यीतनय च़्ये आर म्योनद्ध पिलॅ कोत बॅ खातन ? पादन०

पुशिरोवमुत म्य पान चान्यन च़रणन,
कासतम, कालॅहान, दिथ पनॅञ ज़ान।
दूर मतॅ त्रावतम वोंञ कुनि सातन।। पादन०

विद्याधन छुख ज्ञानुक भण्डार,
निर्-अक्षर छुस बॅ दिम पनुन प्रसाद।
सूॅत्य सूॅत्य रोज़्तम विज़ विज़ि सातन।। पादन०

नाव चोन वनॅ क्याह ? लछिनावे चॅय छुख,
शुर्य तॅ वॉच़ छिय वनान भगवान्जी।
'पोशिमोंत मनॅ मँज़्य ग्वरॅवाक्य पालन।। पादन०

--०

भजन न० ३५

१ गरि प्यठ आसय लारान लारान च़ानिस बरस तल,
माज्य शरिकाये चाव पननिन, पादन
हुँदुय म्य अमृत जल

२ रठ म्यान व्यन्ती सुर थ्व च पानय
पननिन कनन तल।।

३ यलि कुनि सातन फुरसत च्य आई
उपदोई म्यानी कल।।

४ थकुस स्यठा प्रारान प्रारान व्युन मत
करतम छल

५ शरण आसय आर म्योन ईयनै
दितम म्य रूत ह्यो फल।।

६ पनुन परुद गज़राव्य गंज़राव्य
मोहन कुरनस तल।।

७ मायायि हन्दी रज़ि गड़न्नय आस
सपदुस बुँ इच्छ निर्मल।।

८ निति शुद्ध चीतन ओसुस बुँ
पानय मठिम त़चमी कल।।

९ वुन्य खार म्य दयाय हिन्दे रजि सीत
युथ बनि म्य ब्यय त्युथ बल।

१० वीदिच दृष्टी गलिम सरिय
बन बु अति निर्मल।

११ उछमय संसार सोरुय पानय
सत चित आन्नद बल।।

१२ दारिथ मुर छुस मन्गान च्ये भिक्षा
त्रावतम म्य अमृत फल।।

१३ यमि के क्षण सूत्य चलिम म्य साऽरय
जन्मन हिज गाँगल।।

१४ अमि पत सपदिम निति आन्नद
निति शुद्ध व्ययि निति निर्मल।।

१५ करै करार पनने घरे सपदान
म्य मुशिकल हल।।

१६ गरि प्यठ आसय लारान लारान
चानिस बरस तल।।

--o--

भजन न० ३६

शंकर न्यवारी

गट कासतम च भासम चवापअरी
ही सदाशिव शंकर त्रिशूल धारी

कनन गोम च्यनिश यति भेन्यम मुशकिलनहल
छनिम योर कुनीय योर आयसय भरसतल
रछा अक म्य कुन रोज कन दारि दारि- ही०

ब कातोह वनय क्याह वुनिक तान्य म्य दुगर्यव
करख त्राहि त्राहे दन्दस तल छुँनस ज्यव
बुँ प्येठ प्येठ वनय छोट च भोज म्यान्य ज़ारी। ही०

यन आस जन्मस तन गयस यती बन्द
गाछान छुस इवान छस लभान छसव कांह अन्द
मोकलन पाय जन्मन निश नेरन.च न्यवाऽरी । ही०

स्वरि स्वरि शंकर अन्दर वहमच थर
यमि कठिन्य भवसर कितह बुँ अपोर तऽर
छुस गलान हनि हनि बुँ ई व्यचार व्यचारी। ही०

भेकस बुँछुस बेआर मददगार
ओन त नुन छस ब वति पयेठ बेकार
चय रूस दुयम न कांह कास्य म्य अन्धकारी। ही०

च़्य हा म्योन मोल माज्य च्य़ हा बन्ध ता बान्दव
च़्य ही म्योन सत्गुरू त च्य़ हा म्योंन च्यथ रव
च़्य रोस म्य बालकस कुस छु हित कारी। ही०

आसहन म्य पुन्य सुत्य त्यल्य ओसुमन पर वाय
पापन हन्दि सूत्य भारि छम गुबेमच़ म्य नाव
च़्य रोस कुम म्य हेकि तुलिम अटभारी। ही०

कया गछी कम च्य़ शंकर म्य दास गज़राव
यमि भवसर तार म्येन फट मच यि नाव
अमि बापथ छय म्य अन्दर बेकरारी। ही०

गुलि गड़ित छुसय माँगान शंकर कुनुय वर
सन्मुख म्य आमतिस आरतिस दया कर
भवसर तारनच हितम जिमवारी
ही सदाशिव शंकर त्रिशूल धारी।।

--o-

भजन न० ३७

गा'फिल म. बन पायस प्यतो. तस जानि जानस बो.न दितो।

१ दो.र च्यय पनुन मो.र ज़ोनथुय रज़ि गो.य सरुफ पोज़ मोनथुय
सतसंग गंगि अमृत च्यतो तस०

२ दिल साफ थावती आईनै मल गालतस तुलतस च. खय
छ़ोटि बति पा'ठिय कथ मटि च़य ह्यतो तस०

३ दिलन.य सहल कोर मुश्किलय बेंठयोक त. ज़ेठयोय मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ इतो तस०

४ यलि च़य दिलसय सैकल करक चलनय च्य शक त्रावक च फ्रक
शुद्ध सात्वकी मोजन ख्यतो तस०

५ ज़ान जानि जान छुय पान पनुन छुयनो च्य केंह छां'डित अनुन
सतसंग द्वार बार. पय ह्यतो तस०

६ वननुय छु केंह बननुय छु केंह 'ठाकुर' पान पननुय छु केंह
गुरु मुख सर कर वर दितो तस०

--o--

भजन न० ३८

१ गो.डञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार ।
पतह रठ राजरेनि हुंद खास. दरबार ।।

२ व'नित क्या ह्यक. ब. देवी चा'ञ लीला ।
करै बो'ञ मूर्खगियि किञ मूखँ, खेला ।।

३ च़. माता शारिका संतुष्ट ग्य' प्यठ रोज़ ।
गदा आमुत ब.दर्गाह छुस सदा बोज़ ।।

४ वहा'रित ज़ाल संसारन वो.लुम नाल ।
करूम वो.ञ चार. नत. क्या म्योन छुय हाल ।।

५ मदन लोभन मोहन क़र-म़च़ छनम जाय ।
कृपाये किञ करुम मो.कलावनुक पाय।।

६ अहंकारन स्याठोह ह्ये.तुमत छुनस तल ।
इमन च़ो.न मुशकिलन माता करुम हल ।।

७ ब.दर्शन छुस न बातान न्यथ भवानी ।
क्षमा पापन म्य' करतम मा'जि भवानी ।।

८ को.ठ्यन शक्ती अंछिन थावतै पुनन गाश ।
दरई दुनिया फक़त चा'ञिय म्य' छय आश ।।

९ म्य' मूर्खस गछत. बूजित मा'जि भवानी ।
सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय ।।

१० दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास ।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल. य आस ।।

११ कर्मफल किञ अगर केंछा म्य छुम पाप ।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम माफ ।।

१२ कमल तुल. पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा ।
करुम स्य'ज कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा ।।

१३ कृपा सागर, जगत माता छु चोन नाव ।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल.य थाव ।।

१४ सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोल ।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल ।।

१५ भुजव अष्टादशव सूति कर च़. रक्षपाल ।
च़. य'मि किञ आस. वञ छख दीन दयाल ।।

१६ च्य रुस्तुय कस वन, कुस बोजि म्योनुय ।
ब. छुसना नाबकार सन्तान चोनुय ।।

१७ यि अक मशहूर कथ प्रथ कांहू छु ज़ानान ।
कु पुत्र छय कु माता छय न. आसान ।।

१८ मंगुन छम न तगान बोजुन तगान छय ।
जव.वुन शुर माजि इथ पा'ठि दो.ध मंगान छय ।।

१६ दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस ।
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य ब. नावस ।।

२० ब. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना ।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत कराय ना ।।

२१ पनुन जुव जान वा'लिजि खोंठ वन्दय ना ।
पन.नि इम टा'ठि छिम सा'रिय वन्दय ना ।।

२२ लगय ना चाञि मायाये लगय ना ।
लगय ना बजि दयाये लगय ना ।।

२३ इमन पंम्पोश, नेत्रन च्यय लगय ना ।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना ।।

२४ यि केंछा छुम चोनुय च्य वन्दय ना ।
क्षमा करतम क्षमा करतम च़. क्षमा ।।

२५ च़. छकना राजस्त्रि राजन दिवान राज्य ।
अतीत आमुत छुस ब. बख्शुम ज्ञानकुय ताज ।।

२६ गछान दिथ छक अमीरन च़.य अमीरी ।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी ।।

२७ च्य निश शाही गदा प्रथ कांह बराबर ।
म्य पादन तल कृपाये पनञि किञ वर ।।

२८ ब. जा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तै ।
करय अंपन जिगर ज़न पोश. दस्तै ।।

२९ दो.युम ब्याखा च्य ह्यु छुमन. कांह ति दाता ।
बहर क.स्मुक मदद कर म्योन माता ।।

३० गंडित गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह ।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह ।।

३१ परैशा'नी यि म्या'ञिय करत. वो.ञ दूर ।
इच्छ़ाये दिल क'रित गछतम म्य मन्जूर ।।

३२ च़. छख म्या'ञ इष्ट देवी कष्ट कास्तम ।
सदा सन्तुष्ट रूज़ित मनि भास्तम ।।

३३ वनान सा'री छि चाञे ज़ायि सिद्ध पीठ ।
सिद्धत करंत म्यं हयू मोक.लित गछ़िय कीठ ।।

३४ ब. कश्मीर का. ति व'थि नेकनाम सतजन ।
कृपाये चाञि किञ सरतलि बन्योक सो.न ।।

३५ मूर्ख बोज किञ न छम शक्ती न भक्ती ।
दयालू छख गछुम बख्शित म्य मुक्ती ।।

३६ ब. छुस आरुत बन्योमुत आर्वल ज़न ।
गछर चलिहेम बनिहेम आ'न. ह्युव मन ।।

३७ अगर रछतं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम ।
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ाह न. सोर्यम ।।

३८ कबूल गछ़तम क'रित बो.ञ म्या'ञ ज़ा'री ।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'जि चो.पा'री ।।

३९ यि लीला परि युस सुबहन त. शामन ।
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन ।।

४० दपान 'दासस' छय चा'निस टा'ठ भक्ती ।
ब दुनिया सुख ब उकबा दिम म्य मुक्ती ।।

--o-

भजन न० ३६

भगवान् कृष्णुन मोक्त ववुन

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान. ।
चित् विर्मश दीप्तिमान. भगवानो ।।

२ मोक्त मालि रोस्त ताम कृष्णस डेंशन
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त आ'स गछान. चित्त०

३ शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछ़ान
मा'जि मोक्त व्योल छा ववानो
म्य'ति वोव व्योल खल कोन छक सोंवरान. चित्त०

४ हाव बो कू.ति लछ कुलि खसान.
बागस छि सास ब'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'च़रावान चि़त्त०

५ मोक्तस त. म्य'चि छुन बालुक ज़ानान.
म्य च्य क्याह छि य'च़ फिकिर असानो
मोचि़ क्याह पतकुन यि यस आसि मोच़ान. चि़त्त०

६ कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त आसि करान.
यछ़ पछ़ कोन छव 'आसानो
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चि़त्त०

७ जसुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त आसानो
युत छुन मोक्त मंज़ राज़ द्वारस ति मेलान. चि़त्त०

८ अंबना'वित छुसन. तमन्ना नेरान
रंबवत्रि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चि़त्त०

९ ह्यत क्या गछि़ वोत्र सु प्रोहत वनान.
हीत छुमन रीत क्याह कव ज़ानो
ब'नित क्याह आम वनित कव ज़ान. चि़त्त०

१० करनम न. पछ़ मोक्त छुन आसान.
पछ क्याह छय श्री नाराणो
म्यचि़ मुर्य आ'स दित य'च़ आ'स भरान चि़त्त०

११ जसुधायि ह्यस होश नज़ि रूदमुत दान.
मोक्त दान. पुछि दान मनसानो
मोक्तसर ज़ि मायायि कांह छुन ज़ानान. चि़त्त०

१२ ज़गतस मोह अंधकार आव वलान.
बुद्ध छकन सिद्ध छिन प्रावानो
ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष आसान चि़त्त०

१३ गरज़मंद लूक आ'सि गा'मित देवान
कृष्णात्रि कथि पछ छिय करानो
नेरि मा बीरि टंग द्यव नेरि अरमान. चित्त०

१४ पकन कृष्णस पत. पत. लारान.
जंगलस मंज़ बाग डेंशानो
मोक्त कुलि भ'र्य भ'र्य त. मोक्त फल नेरान. चित्त०

१५ भ'र्य भ'र्य छि मोक्त लंग पथर नमान.
मुफ्त ज़न सु मोक्त डार मेलानो
मथुरायि बूज़मुत मोक्त द्युन गुर्यन दान. चित्त०

१६ आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम तति असि हिव्य गछ़ान. चित्त०

१७ सोबरा'वि लुकब मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फोति मेनन. चित्त०

१८ प्रोहत सूज़मुत गणेष्ट त्रक सोंबरान.
दक्षिणा यि पूरि पूरि रिंज़वानो
पंछ़ छयन लूकन इवान त. नवान' चित्त०

१६ घर. आख म'र्य म'र्य वो.ञ छुकन. रोचान.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछ़ानो
भगवान छु चो.पा'र्य मो.क्तय छकान. चित्त०

२० घर. आव प्रोहत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'च़ छु करानो
गूर्य कामधेनन मो.क्त. माल. पा'रान. चित्त०

२१ सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुरानो
सो.ञन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोज़ान. चित्त०

२२ तव पत गोकुल.कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छा भोज़न ब्राह्मणन ति ख्यावान चित्त०

२३ नच़नस त. गिंदनस गूर्य भायि तोषान.
शुर्यन रटनस न. पोशानो
कृष्णास त. राधा मातायि वनवान. चित्त०

२४ प्रोहत सु सूज़मुत मोक्त. दक्षिणायि सान
ग्यवान त. य'च़ गव रिवानो
धन. श्रवणस छुन. म्योन ह्युव खज़ान. चित्त०

२५ बक्ष भानस वति कुन अ'छि लोसान
ब्राह्मणस छु ताम दू'रि डेंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान. चित्त०

२६ भा'रन छु मोक्त सो.न स्वार्गी सामान
सास. ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
बार. बार. डेंशान त. बार. बार. वनान चित्त०

२७ कोरमुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान.
भगवत मायायि डेंशानो
वुछनस न. वननस न. बोज़नस न. ईवान. चित्त०

२८ वनि क्याह कांछ वनि छा ईवान.
ब्राह्मणास ति छिन. प्रज़नावानो
सुशीलायि ज़न त. सुदाम वातान. चित्त०

२६ डीशिस मोक्त माल रत्नव त. सो.न सान
मोक्त. माल पनञिय छय मंदछानो
पन. पहा'र पनञिय छु सुदाम छ़ारान. चि़त्त०

३० डीशि डीशि सोर देश असन त. गिंदान.
राधा मातायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ प्रज़ि मंज़ आसान. चि़त्त०

३१ संपता नच़नस त. वच़न वनान.
हर्षस गोमुत सु वृक्ष भानो
शरण कृष्णस छय राधा गछ़ान चि़त्त०

३२ ब्राह्मण अभ्यागत त. ऋषण सोंबरावान.
पज़न. खोत आसि धन. खर्चानो
रज़िता'य प्रज़ि मंज़ आश्चर्य ज़ानान चि़त्त०

३३ जग. होम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ान.
तुतान दीशवति त. वनवानो
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यबान. चि़त्त०

३४ देवियि त. देवता धारणायि धारण.
राधा कृष्णा. कृष्णा. ज़पानो
राज्य लक्ष्मियि मा'जि को.छि क्यत ह्यवान चि़त्त०

३५ व्यस. ता'य दाय इम' खास खास आसान.
तिमन.य मू.ति घरि गिन्दानो
घरि घरि करिहे मनि कृष्णुन द्यान. चि़त्त०

३६ यी मनि फोरान त. ता आस सो.रान.
प्रेम सू.ति वा'णियि वनानो
व्ययि व्ययि व'नि त. व्ययि व्ययि बनान. चि़त्त०

३७ ''परमानन्द'' तति पादन प्यवान.
साधन सूय फल मंगानो
टूठिनस राधा सहित कृष्णा. भगवान. चित्त०

० ० ० ०

भजन न० ४०

गन्योमुत छम मनस चोन भाव ज़गत् माता म्य दर्शन हाव ।
म्य आमुत लाल. बानन छाव ज़गत् माता म्य दर्शन हाव ।

१ ज़गत माता च टोठान छक भगत सन्तानन.य बेशक
ह्यवान युस लोल सू.ति चोन नाव ज़गत०

२ म्य वोल शानव प्यठै बोर.य म्य पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिक़ चाव ज़गत०

३ ब.. छस प'जि किनि स्यठा नादान करान छस पाप छस अनजान
करुम माफ छय च्य माता नाव ज़गत०

४ प्रियम नगरस अंदर चामुत ब. चाञे डेडि तस आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो.ध चाव ज़गत०

५ त'मिस क्या गम य'मित यावर च. आसक ताज दित्त वर सर
शत्रु सुदं पोरित कति तस दाव ज़गत०

६ वदान छुस चा'ञ घनेयम कल द'लिस तल मा'जिल ह्य'तं-
जल-जल
म्य सतचे प्रेम. न्यंदरे साथ ज़गत०

७ वनान छुस बील. ता'य ज़ा'री थो.कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री०
म्य लो.कचार गव बुज़र बोञ आव ज़गत

८ ज़गत माता म्य सतुष्ट रोज़ वनान ज़ा'री छुसै च.य बोज
पन.ञ दयगत दयालु हाव ज़गत०

६ व. छुस हियि गों.दि च्य किति प्रेमय सान डेडि तल प्रारान सारान
च़. प्रेम कि भाव. हियि गों.दि छाव ज़गत०

१० छु 'बागवान' च्यय परन प्योमुत गडित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मारण चोन हर दम नाव ज़गत०

० ० ० ०

भजन न० ४१

चानि बरतल राव्यम रा'च़य आवाज़ वा'च़.य नो

१ चोंज़ शोभहय बो ख'ज़मा'च़.य
ग्रंज़ साहिबो ह्य'च़थस न. ज़ांह
तवय नाव प्योम ललह मा'च़.य आवाज०

२ बालि रनिमय सार्यय न्या.मा'च़.य
ख्यनि साहिबो आहम न. ज़ांह
तवच लल छस छिन्दरे मा'च़.र्य आवाज०

३ घरि द्रायस बा जमा'च़.य
वनि साहिबो आहम न. ज़ांह
का'लि मेलव कया मा'च़.य आवाज०

४ खा'सि वो.ज.लि बर.ग छ. च. ई
छस ब. स्वग.च य'म्बरज़ल
दादि बों.बर.नि बर. गा'मा'च़.य आवाज०

५ बा'लि बा'ली मो पख यच़.य
गा'लि का'त्याह संसारन
का'लि सूरच़न गछ़ान म्य'चय आवाज०

० ० ० ०

भजन न० ४२

चराच़र छुख परमेश्वरो रछतम पनन्यन पादन तल

१ गज. मुख. बाल. चन्द्र लम्बोदरो विनायको भ'विनय जय
हरमुख. दर्शन दितम ईश्वरो रछतम०

२ निष्कल नाव चोन निरंजनो सो.य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चाञि स.ति जन्म मृत हरो रछतम०

३ देवियि त देवता सारिय स'मित न'मित करान चा'ञ स्मुरण
स्मुरणि चाञि स.ति सा'र्यं पाप हरो रछतम०

० ० ० ०

भजन न० ४३

चित्त मोम शांत चोन प्रेम. अमृत चोम ।
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ओम् ।।

१ यमि संसार. मंज़ पत. लार्यम क्या
दय. नाव स्वरण. रुस्त थावुम म. ज़ांह
चानि भक्ति भाव खो.त कांह परम सुख छा
पत. वन. भिक्षुका हयुव बादशाह
ब्रोंठ.य म्य ह्यस फिर घरि कुय भ्रम गोम ओम०

२ मन. वाजि नारायण नाव खनतम
संकट. र्गाट मंज़ अनतम गाश
रायि मंज़ घनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट वनतम परम आत्मा
क'त्र ज़हिश बुद्ध छम थ'ञ ज़न करत.मोम ओम०

३ नज़ि ज़ांहज्यवहा नज़ि ज़ांह मर. हा
नारायण नारायण करहा नित
चानि नाव. स.ति भव सागरस तरहा
ध्यान चौन स्वरहा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेष इथ प्योम ओम०

४ हकरे बनि मंज़ अन. गगुराय चाव
योर. ह्यत क्या चाव ख्यत क्या द्राव
कायायि म्याञि मंज़ छु आश्चर्यवत वाव
रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव
निलेप द्रास पत. क्या ख्योम क्या चोम ओम०

५ योर अथ व'हरति तोर आख व'टिथय
को लि मंज फ'टिथ.य छुय होख पान
क्या लारि धन' सों बरित पान च'टिथ य
धर्म व्यवहार कर ख'टिथ.य पा'ठि
ज़न्मस इथ करनाथ धम.च का'म ओम०

६ ब'डि ब'डि कार क'र्य क्या प्रोवुम
थ्यक.नोवुम छुम बो.ड खानदान
यश. पुछि मान. पुछि दोह रावरोवुम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस च्यत पान व्यसरयोम ओम०

७ मृत. विज़ि आज़मल गं'ज़रावतम
म'शरावतम ज़न्म.कि करतूत
यम. किंकर बुथ मत. वछनावतम
नारायण नाव थावतम याद
युत छू त्युथ चत़ 'कृष्ण' प्रेम दो.ध ओमज़ोम ओम०

० ० ० ०

भजन न० ४४

च्य सनतान दिवान बन्य

१ च्य सन्तान दिवान वन्य, वलै म्यान माज्य,
च्य नेरतै नम्बर न्यन, वलै म्यान माज्य।

२ त्रविथ म्य बेकस, गयक कोत चि पानस,
म्य ओय बनि बनि वलै म्यान माज्य।

३ त्राविथ म्य अढवति, गयक कोत चि पानस,
लोगसु लुक पामन वलै म्यान माज्य।

४ चि छप्पहथ बिहित छक माज्य कमैन पौश बागन,
म्य नादन दितै कन, वलै म्यान माज्य।

५ बुँ अढमोर करहोस भरिषौ तीरव,
बुँ हय गोस बेहस वलै म्यान माज्य।

६ म्य यथ लोल हृदयस, परुन छुम बनोमुत,
म्यहै सीनअ बलिहयम वलै म्यान माज्य।

७ च्य छुथ माज्य वनुमुथ बुँ रछहत प्यदन तल,
दलिस तल, मय हकना क्लै म्यान माज्य।

८ च्य कम कम सितम माज्य सहित सानि बापत,
म्य हर दम नदामत, वलै म्यान माज्य।

९ म्य स्पनस अन्दर माज्य इतम, पान हावतम,
म्य रात दोह कल क्लै म्यान माज्य।

१० मुसाफुर बनिथ माज्य, बुँ त्रोवथस वत्य प्येठ,
करान छुस वलै म्यान माज्य !

--०

भजन न० ४५

च्य क्षय करान अपराघनय
च्य मोक्ष सघन सादनय,
कन थव च्य म्यान्यन नादनय
श्री शरिका दीवी नमः।।
युस चानि डेडि गव अन्दर
तम्य त्रोव समसारुक बंधन
समसार सोरुय क्रूठ चेन
श्री शारिका दीवी नमः
रछतम बुँ छुस नारस अन्दर
येमि नार मंज़ कडतम न्यबर
रछतम रछान माता बच्चन
श्री शरिका दीवी नमः
प्योमुत बुँ छुस कन्डय ज़ालसय
गोमुत बुँ छुस वश कालंसय
कालुक सरुफ्र छुम नालसय
श्री शरिका दीवी नमः
रक्षतम बरसतल छुस शरण
आसय शरण रटिमय चरण
श्री शारिका दीवी नमः
सन्ताप तापन पोवनस
वासिक बुँ सेकि मंज सोवनस
पापन बुँ नेन्दरे पोवहस
श्री शारिका दीवी नमः
प्रारान प्रारान दूर मे गव
प्रारान प्रारान सूर म्ये गव
वर दिथ म्य कासतम बोड़ गमा
श्री शरिका दीवी नमः।।

--o-

भजन न० ४६

च़अ राऽगिन्या कास्तमम्य गम बुँ लागय भाव कोसम
दितम दर्शुन चल्यम गम बुँ लागय भाव कोसम
दितम दर्शुन फुली म्यमन बुँ लागय भाव कोसम
म्य माता आश चअन्यछम बुँ लागय भाव कोसम
दया दृष्टी म्य करतम बुँ लागय भाव कोसम

बुँ मा वोतुम च्यनिश जाँह म्य करमय न पाठ पूजा
तवय शरमदंगी म्य छम बुँ लागय भाव कोसम

च दीवी क्याजि रूठख खटिथ कथ जायि बीठ'ख
दितम दर्शन चल्यम गम बुँ लागय भाव कोसम

गडन्य स्यंद्ध कर म्य वअणी दयुम दिम पअर्य ज़अनी
त्रयुम त्रलोकी मंज सम बुँ लागय भाव कोसम

करूथ च्वन वीदव अन्द छु पृच्चम परमानन्द
शयुम शिरूप भासतम बुँ लागय भाव कोसम

सत्यम भासतम म्य सतरूप विज़्यम अन्दर ज्ञानुक धूप
च़्यअ दीशित दूर चल्यम गम बुँ लागय भाव कोसम

दज़ान छुय धुप कोफूर वज़ान छुय साज संतूर
नगारो साज मधहम बुँ लागय भाव कोसम

यिवान छिय ऋष इत्यादिक करान दर्शुन छि सन्मुख
सदा रूजिथ छि सरखम बुँ लागय भाव कोसम

नेत्र च्यअन्य पद्य वथअर कलस प्यठ च्यय मुक्त छयअर
छि तथ न्यर्वाणक्य थम बुँ लागय भाव कोसम

चअ अष्टा दशभुजा छख म्य त्ये ब्वड़ भोग सोज़ख
च्य़ दीवी क्याह गछीकम बुँ लागय भाव कोसम

छु ब्वड़ दरबार च्योतुय वन्दय ना क्रबील क्तोनुय
शोल मारान छि व्यलकम बुँ लागय भाव कोसम

वहरिथ छु माया ज़ाल मूहन म्य वुलमुत नाल
अम्युक व्यस्तार वनतम बुँ लागय भाव कोसम

नच़ान छी चण्ड़ तय मुण्ड़ तिमन दिख चअ पानय दण्ड़
प्यठय त्रावुख निरालम्ब बुँ लागय भाव कोसम

च़ छक्ष शकती शिवस सअत्य छि यिछ अगनस अन्दर जयूत्य
तम्युख मन्त्र छु शमदम बुँ लागय भाव कोसम

छु अठम दोह चोनुय बोजि फर्याद सोनुय
म्य सांयस तल चअ रक्षतम् बुँ लागय भाव कोसम

--o--

भजन न० ४७

च्यथ आकाशस भास्कर म्य बासतम
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भो ।।

१ लम्बोदर, सुर, गुरु, हर शंकर गंगाधर सोहम सो
ज़ान गाश सो-प्रकाश आस्तम त. कास्तम हच़र०

२ तन, मन, सुउन वगुन हनि हनि ननि
फना फिला वजान शिव शम्भो
सनिधान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम हच़र०

३ राम. श्याम. कृष्ण विशन शेव भव. भय. हर
सर. कुरजि वुज़ि ओम हमसू
निष्क्रयमय न्यरणय पयि भास्तम हच़र०

४ जल. थल. निर्मल. निष्कल. ओजल.
सम. बल स्मरणीय दिम शम्भो
ध्यान धारणीय ज्ञान मुख, सुख, आस्तम हच़र०

--o--

भजन न० ४८

महा गणेशः

१ च्यानि पूजायि हन्द त्रोव प्रस्थान
महागणेश गोडहा धारय चोनुय ध्यान
असि आय समिथ अज़ छु शौभ देय्न
म्याज़ि दुर्गायि हुन्द कर्व कीर्तन ।। च्यानि पूजायि

२ चयानि सुमरण व्यग्न दूर छि सपदान
नाव चान आदि-दीव सिद्धिदाता
अस्य आरित्यन प्येठ कर सहायता
वीद गौढ़ चअन्य पूजा छि व्यखनान!! च्यानि पूजायि

३ शास्त्र वनान छिय जाय जाये
युस चोन ध्यान स्वरि, सिद्धि सु प्रावे
सऽरी दीव गौढ़ च्य छि पूज़ान !! च्यानि पूजायि

४ भक्ति भाव सूत्य यस सन्तुष्ट छुक रोजान
त्येलि छुन तस ब्रोठ कन्य कॉह भय पोरान
व्यग्न त भ्य छि दूर सपदान !! च्याने पूजायि०

५ गुलि गंडिथ च्ये कुन छुस प्रणाम करान
सानि पूज़ाय हुन्द अन शोभ अनजाम
हे गणेशः अस्य प्येठ रोज दयावान !! च्यानि पूजायि०

६ गौवरी पुत्र छिय च्य वनान
महा गणेशः दितम पननी जान
दूर कर व्यग्य अस्य सारनीय सान
महा गणेशः गौडहा धारय चोतुय ध्यान
च्यानि पूजायि हुन्द त्रोव प्रस्थान।।

--o--

भजन न० ४६

शिव आरती

छुस शेवजियस कित्थ ब्यल त पोश, चारान।
प्रारान लूसुम म्य दोह
लछिनाव्य च्येय कित्त अछि पोश, चारान। प्रारान....

गो.ड बो दिमयो आशिके दारे प्यारे दर्शुन म्य हाव
कालस त्रिशूल ह्याथ पत छुख लारान। प्रारान....

ही शेव बोजतम म्यन लोल आर्थी हा म्यानि पार्थीश्वरो
जटि छय गंगा अमृत सारान। प्रारान....

छुय नित्र म्योन झूल करयो ब गूर-गूर लवथ सूरमत्यो
प्राननाथा प्राण म्यान्य चेय पत लारान। प्रारान....

दूरि मत रोजतम चूरि कोहन त बालन
सहन त शालन सूत्य
दूर्यर बुनो ज़रै छुसया खून हारान। प्रारान...

बुजिरच्य थर थर कासतम म्य मर मर
गछिनय च्यय ज़र ज़र शंकर जी
फुचिमचि नावि म्यानि नाव चोन तारान। प्रारान...

शेव लीला म्यानि गरि लागे गुलाबं शेरि
यित म्यानि खाम लरि प्रकाश हाव
मुक्ती प्रावान नावचोन तारान। प्रारान....

गाश हावतम अनिगटि वल शेव अकि लटि
वासुख वलिथ हटि दर्शुन म्य हाव
भवसागरस मन्ज नाव चान तारान।

प्रारान....लूसुम म्य दाहे

--o--

भजन न० ५०

छुक मोक्ष दाता पान. च़.य केवल सतक विचार दिम ।
यी गछि् आसुन तीम्य दिम योगुक ज्ञानुक सार दिम ।।

१ सन्मुख इतं सोरुय नितम द्युनमुत यि छुल फीरित ह्यतम
भक्ती दिनम भक्ती दितम भक्ती हु'दुय दरबार दिम०

२ मस्ती होशस ह्यत मंगय मत. नच़नावतं दित बंगय
भक्ती कोंगय जामय रंगय सुय रंग.नुक विस्तार दिम०

३ मोह किस ज़िनिस दजुन स्वमाव च य ज्ञान. रूपी अग्न हाथ
भक्ती हंज़य रेह प्रज़लाव अज्ञान. शोरस नार दिम०

४ ममतायि लंका ज़ालतम भावुक विभीषण पालतं
श्रीराम. मोह मद गालतं यथ भवसरस तार दिम०

५ भक्ती त. मुक़्ती शूभि च्यय मन क्याज़ि तत प्यठ लोभि म्य
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती म्य बारम्बार दिम०

६ छुक भेद रुस्त शिव कृष्ण राम आसन क'रित प्यठ परम. दाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस जल्दी म्य वो.ञ आंकार दिम०

७ मिथ्या पदार्थ क्या मंगय तिम भोगि वो.ञ आसै टंगय
शांत गछ् अद सू.ति सत् संगय इछि. भख्यि़ हु'द आच़ार दिम०

८ वा'सा गयम मिथ्या वनन क्रय करन. रुस्त छा केंह वनन
छुस लोभ. फल पेहनस अनन बो.ञ ग्रट.चिय अनवार दिम०

९ करुणावतारस च्यय सो.रित तारुम म्य तारस थप क'रित
पारस बनावुम श'स्त. रस नारस क'रित गुलज़ार दिम०

१० छुय क्या म्य च़ारुन छो.त कृहन छुम मज़ प्रत भोगस च हुन
छुम अरसरव रुस्तुय बिहुन शुभरित म्य इन्द्रिय द्वार दिम०

११ काया छय म्या'त्रि द्वारिका च.य छुक 'कृष्णा' परमात्मा
मंगन सुदामा छुस भिक्षा सर्व ऐश्वरी यकवार दिम०

० ० ० ०

ध्यानम्

ऊँ० सिंहस्था शशि शेखरा मरकत प्रख्यै चतुर्भिभुजैः
शखं चक्रधनुः शंराश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्ग दहारङ्कण रणत्कांचीरणत्र पुरा
दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतुनो रत्नोल्ल सत्कुण्डला ।१।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि!
दारि-द्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्वत् अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चित्ता।२।

० ० ० ०

भजन न० ५१

ऊँ० जय जय जय जय जग माता।
शरण तुम्हारे आयो है।।

हंसासन पर बैठी हो माता।
ब्रह्मा स्वरूप धरायो है।।
चार-वेद भुज चार विराजे
चार-वेद बज गायो है। जय०

गरूडासन पर बैठी हो माता
विष्णु-स्वरूप धरायो है
मोर मुकट पीतम्बर साजे
मुखधर बीन बजायो है। जय०

भृष भासन पर बैठी हो माता
शंकर स्वरूप धरायो है
अष्टा-भुज सिर गंगा विराजे
वासुक नाग लपटायो है। जय०

सिंहासन पर बैठी हो माता
शक्ति स्वरूप धरायो है
भत्ति जनो की लेकर आरती
चरण कमल चतरायो है
ऊँ जय जय जय जय जग माता
शरण तुम्हारे आये है।
ऊँ० जय जय जय जय जग माता
इति

० ० ० ०

भजन न० ५२

१ जाफ.र्न पोशस छु लक्ष्मी अंग ता'य ।
सो.न सुन्द रंग ता'य पूज़ायि लाग ।।

२ सत्य देव लक्ष्मी नारायण ता'य
सर्व देव ह्यथ कासिय दुर्गत
पोश पूपज़ कर तस अन्न धन मंग ता'य सोन०

३ मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छा'वि छा'वि शेरतस पान
सुन्दर डय्कसय टय्ोक लाग कोंग ता'य सोन०

४ सुख दियि मोक्ष आय अन्न धन द्यार
धारणा द्यान ज्ञान योग विचार
वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग ता'य सोन०

५ सत्पुपरुषन निश ह्यछ करुन भक्ति भाव
तिहद्यन पादन तल पान त्राव
पान थव दास भाव तिम बरहंग ता'य सोन०

६ साध छुय पूज़नीय तसुन्दुय मन छुं सेर
मुश्का ह्यत चरण कमलन नेर
आ'ल मान राधा कृष्ण ज़ान रोंग ता'य सोन०

७ यूत ज़ानक त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन
भक्ति भावस मंज़ आधीन बन
सुय छुय रुत सात सो.य रच़ ज़ंग ता'य सोन०

८ सोय दया मंगतस भक्ति भावस सान
योस कासिय रोग देह अभिमान
व्यवहारन छुक ओनमुत टंग ता'य सोन०

९ ज्ञान कुलिसय छिय शम दम लंग ता'य
शान्ती मूल मोक्ष त्युहरुय छुस
ख्यत भक्ति भाव रस भ'र्यथय टंग ता'य सोन०

१० ब्रह्मंड पान ज़ान वार. सैरस नेर
मार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर
ज़ोर. मुचराव चित्त तोरग डंग ता'य सोन०

११ अज्ञान. गटि मंज़ प्रज़लाव दीपय
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय
यी वनान साध संत क'रित सत्संग ता'य सोन०

० ० ० ०

भजन न० ५३

ज़न्मस इथ यति केंह छुन'. लारुन ।
धारणायि धारुन गोविंद गो ।।

१ अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन
नित्य नियम. स्मरणीय वायुन ह्यू
धैर्य.चि़ यट.फोरि दत. फुटरावुन धारणायि०

२ युस करि स्वमन. दारुन त. प्रारुन
ती छुस लारुन संसारस
तव. खो.त रुत छुय परउपकारुन धारणायि०

३ धन. द्यार अथे इथ म'शरावुन
कर्म.चि वति प्यठ धर्मस द्यू
य'ति नो प्रोनुय फो.त छुय लारुन धारणायि०

४ दांद-हूर न्य'न्दरे सुलि वुज़नावुन
कल करनावुन सोऽहं सो
''लल द्यद'' गुरु ह्यत स्वरूप वुछनावुन धारणायि०

० ० ० ०

भजन न० ५४

ज़ानखै कर जान फिदा'ई यौर वफा'ई केंह छयनो ।

१ अच़ अन्दर लोल. भागस लाग आशक बुलबुलो
तति गडनै खल्ति शा'ही योर०

२ यो दवै करक बादशा'ही तस ज़मीनस जाय छयो
तो.त छु वातुन तनहा'ई योर०

३ पाक तार.चि़ यलि तोलनं पाक छु पानै क्या ह.लुय
नरि ज़ंग अ'छि दिन गवा'ही योर०

४ नमरूदन दम दिचा़'ई कान त'मि लोय आस्मान
खून तोर. प्यव बर हवाई योर०

५ कारि बद छय रोय सिया'ही बार गो.ब छुय कोत तुलक
वछुत. तह.ज़य बारगा'ही योर०

६ 'उस्मानो' मंग पना'ही तति न बियन ज़सज़लो
तति अरशस थर. चा'ई योर०

--o--

भजन न० ५५

माता शेरांवाली

जय जय माता शेरा वाली जय जय माता ज्योतावाली
माता तू ही बेढा पार लगाने वाली
बेढा पार करने वाली माता शेरांवाली। जय०
जन्मों के पापों से देती है मुक्ति शेरां वाली
माता शेरावली माता ज्योतावाली। जय०
निराशो को तू ही आशा देने वाली
माता शेरांवाली माता ज्योतावाली। जय०
रास्ते में भटकने वालों को राह दिखाने वाली
माता लाटां वाली माता शेरां वाली। जय०
बलहीन को तू ही माता बल देने वाली
माता पहांडा वाली माता गुफाँवाली। जय०
भक्तों को तू ही भक्ति देने वाली
भक्ति देने वाली माता ज्योतावाली। जय०
कलियुग में धर्म की रक्षा करने वाली
माता शेरांवाली माता लाटां वाली। जय०
गंगा तेरे चरणों से बहने वाली
माता गंगा वाली माता मेहरावाली। जय०
भक्तों की मुरादें पूरी करने वाली
शेरावाली माता, माता मेहरावाली। जय०
"बोलो शेरावाली माता की जय। बोलो वैष्ण माता की जय"

भजन न० ५६

१ ज़गतिच चि माता शारिका
अमि ज़ाल मंज मोकलावतम
प्रराणम्य वन्य स्चठा चय काल गोम
बर छुस गोमुत फुलरावतम

२ कोताह म्म वनियम वील त्य ज़ार
वन्य-वन्य च्य माता ओय न आर
मटि मा च्य खसनय म्याम मार
सुमरीथ मतय छकराव तम
जगतिच च माता.....

३ कर्मच वदल जन्न मच़ हान
विज़ि विजि कराण नीम जान
चरणन करय अपर्ण प्राण
इम हलि अच्छर नाह नावतम
जगतिच च माता.....

४ सन छुम गोमुत अन्द्री दिल्स
माता हल करतम मुशकिलस
तय करना तम मजंलिस
अन्द्ररिय म्य खोनी मन्ज सावतम
जगतिच च माता.....

५ कामन त क्रूदन बोद्ध च़टम
लूबन त मुहेन च़्यत रटम
मुहं छ्रटिय गटि मंज मोटि वटम
यमि नार मन्ज़ म्य शहलावतम
जगतिच च माता.....

६ गौश दिथ च्य कया नेरी मुदाह
बरतल गद्या लायान सदा
ई शूबि ति हेछ नावतम
जगतिच च माता.....

७ त्यालुन दोदुम मालिन्य घरे
पानस पनिन रूदिम ठौले
दास्स छु लोगमुत दुह दरे
ब्रोट कन्य छुस्य प्रजनाव तम
जगतिच म्य माताशरिका
आमि ज़ाल मंज म्य मुकलावतम

--०

भजन न० ५७

जाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै ।
आक ज़गि कास.नि मोह. अँधकार ।।

१ यादव कुलके कुल दीप - कै
लोल. चानी शोलवन. आव संसार
व.ल. सोन अज़ छै पोश. पूज्ये आक०

२ लो.लकि मंज़ले लो.लि लो.लि करहै
मो.लि ह्यमहत छिम न. मुखत त. द्यार
मुक्त गछ़हा चानि शुभ. दर्शनै आक०

३ ज़्यो.न चोन ज़गि मंज़ सिर्यि उदये
नत. ज़न ज़गि मंज़ प्राण आधार
लगहाय नावस रघु नन्दनै आक०

४ साक्षात्कार चोनुय अवतार.य
चार. म्योन भव.सर. लगिहं तार
''परमानन्दने' कृष्ण. गन्धरै आक०

भजन न० ५८

टोठतम विशणार पन कृष्ण जीवय
हरे राम नारायण वासुदीवय
गोबिन्द चरणार बिंद चा'त्रि सीवय
हरे राम नारायण वासुदीवय

शरण च्यान्यन पंकज पादन
वरान सिद्धन सनतन त साधन
क्षमा क'रू सान्यन अपराधन हरे राम.

अलक्षय महिमा च क्याह वनय
मन बो;द्ध वा;णी तोत न वात'नय
पान जानख बुँ क्योहो व'नय हरे राम०

प्रबल म्यानि विजि को'त गोय सु बल
यमि बल सू'त्यन खोरथन अजामल
ब;ति छुसय प्रारान चाऊ बर'तल हरे राम०

भक्तयन सू'त्यन मान कुस करे
सुय करि यस चा'ऊ दया वरे
त'सि वरि युस नाम निधान सो'रे हरे राम०

हा जीव क्याजि छुख चिन्ता क'रान
क्षण क्षण आसुन नारायण सो'रान
दासन पनन्यन पानय वरान हरे राम०

क्याह रूत ओसुम कर्मय लोनुय
तवय लोगमुत छुम नाव चोनुय
पानय करख उपाय म्योनुय हरे राम०

श्रद्धावन क्याह आस गूरि बाये
यिम लूक लजाये त्रा'विथ द्राये
पान भगवानस सेवायि आये हरे राम०

टोठतम अनाथस हे भव दाता
च़य छुख गुरू म्योन च़य मोक्ष दाता
माता पिता बन्धो भ्राता हरे राम०

श्रीधर पारान छुसाय चाञि वेरे
प्रवाह चोन योर कर सना फेरे
सत भाव'कि पोश लागय शेरे हरे राम०

पद्म चोन फो'लनावान ह्रदय
चक्र कासान शत्रुन हुद भय
शंख शब्द सान्पनान भक्तयन हुन्द ज़य हरे राम०

शंख चक्र पद्म गदाधरस
कोस्तब रत्न सर्वे ईश्वरस
अस्तुत करान च़राच़रस हरे राम०

मुरली वायान आनन्द रूपय
मोहान मय गपियन कृषण रूपय
सा'री बन्येम'ति कृष्ण स्वरुपय हरे राम०

दयायि सू'त्य पालतम गोपालय
सम्भालतम जसुदा नन्दलालय
ना'लि छय शूभान तुलसी मालय हरे राम०

केशव माधव हरषी कीशे
अख शो'भ द्रष्टी करतम ईशे
मो'कलावतम भव बन्धन नीशे हरे राम०

निराकारस निरन्तरस
वेषाधारस विश्वम्भरस
सर्व ईश्वरस पूज़ा करस हरे राम०

ब्रह्मा इन्द्र त्रि धा'री
सा'री चा'ञी मूज़कारी
पाहे मुरारी गरूडा सवारी हरे राम०

भाग्यवान क्याह आ'सि गोकल वा'सी
यिम बन्सरी चा'ञि बोज़ान आ'सी
मायायि मोह निशि गयि उदासी हरे राम०

सुशो'भ समय क्लाह ओस त्यले
जमुनायि ब'ठि ब'ठि गोपाल यले
गोपी ह्यथ फेरान थलि थले हरे राम०

ऐसा शुभ वेला कब आवे
जब कान्हा बन्सरी बजावे
सन्मुख होके हमको सुनावे हरे राम०

बहुत गोपियां और श्याम अकेला
खेलन से लुट लिया मन मेरा
दुनिया मेला आनन्द अकेला हरे राम०
हरे राम नारायण वासुदीवय।।

--o--

भजन न० ५६

तरवुन छु करनोव हक दित वनन
कांह मा. स. त'रिव अपोर।
पत. तार बन्यव न. आलुस म. क'रिव
उद्यम. त'रिव अपोर ।।

१ करनावि तार छुन. घरि घरि बनन
वञक्यन छय बेला जान
निश्तुर त. यि सात म. राव.र.विव
वजिव त. त. त'रिव अपोर पत०

२ घरवेठ सोंबरान छिव मार. गा'मति
छ़य'नित थ'कित पेमति
घर. रोज़ि य'तिय कथ क्युत भ'रिव
छ़रिय त'रिव अपोर पत०

३ अन अन वननस कन मो था'विव
गो.बरा'विव क्याज़ि पान
बो.ब ब्रोर ह्यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो.तिय त'रिव अपोर पत०

४ चूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो.न रुफ छा'रित गोड. क'र्य म. ग'रिव
संतोष त'रिव अपोर पत०

५ प्रछ. गा'र य'लि वर दित ख्यनस
इसबात सु.य गयि चूर
थरि थरि मा हरद. थ.र ज़न ह'रिव
औधार्य त'रिव अपोर पत०

६ प'जि पान होव र्षि रस्त्यन ऋृषण
पशन ति भ'रक प्रय
अथ ऋृषि धर्मस प्यठ तोहि ति ध'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर पत०

७ र्ति भाव था'विव र्तिय ब'निव
र्तिय क'रिव कार
यी य'ति क'रिव तिय तति सो.रिव
सत्कर्म. त'रिव अपोर पत०

८ अपारि बदलै विद्या छय पर.ञ
योग.च छय तत बोल चाल
प'रिवै य'ति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिवव अपोर पत०

९ अपारि ब्रह्मय छु छ़ारान त. गारान
य'च छुस ज़ि तुहंद लोल
य'ति क्या छु प्रावन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेम त'रिव अपोर पत०

१० वाव तस क्या करि वारक यन्त्र
वस आसि दय. सुँद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता म. म'रिव
ड'रिथ म. त'रिव अपोर पत०

० ० ० ०

भजन न० ६०

म्याजे च्यार कर म्योत

तोशतं म्यति माज्य जार बोज़तम।
मार छुसय गोमुत चांर करतम।।
प्योमुत पथत्र माज्य थुद म्ये तुलतम।
मार छुसय गोमुत चार करतम।।
चुय छक हरता चुय हय करता।
चुय छक दाता चुय माता।।
यमि संकट निशि मुकलावतम।
राह छुम पानसकस छु तकसीर।।
माज्यै शेरतै म्योत तकदीर।
क्रिंजिल्यन पोन्य गोम तिय म्ये सारतम।।
रंग रंग माज्यै तंग आसै
वति वति फीरि फीरि तंग आसै।।
वात-हा मंजि लस वथ म्य हावतम
ल्क्कटुय आसिथ, कद्ध सपद्योस।।
गुलाब आसिथ जाफुर बन्योस
फोलबॅ पम्पोश संग म्ये सोजतम।।
तोशतं म्यति माज्य ज़ार बोज़तम
क्या वनै माज्यै वसंरियोसै।।
स्वर क्याह माज्यै तंबल्यो सै
स्वद् किथ बल किथ तिय म्ये वनतम ।।

च्ये निश क्या ख़टित ती बुँ वनहय
असि सूत्य राऽगन्या पाद छल है।।
यिम हा च्यय निशि तिय काछतं
कर्ज लाधत सूत्यन छोग बढोम।।
कर्ज लाधन सूत्यन पान ग्वबर्योम
तिमय पाप माज्यै नरव वालतम।।
मार छुसय गोमुत चारॅ करतम
तोशतम त्यति माज्य जार बोज़तम।।

--o--

भजन न० ६१

१ दान मनसा'वित अथ धारनोवथस
अथ पत नित म'च़रोबथस
य'च कोर.थम अवमान् मदनो । ईछा से ज़ान

२ रस रस कमि ताम वति पकनोवथस
कुन ज़ोन वति प्यठ त्रोवथस
अनज़ान - सरिगरदान मार. मति । ईछा से ज़ान

३ मन वारि म्याञि आश पोश रुवनावित
संग दित बार. फ़ोलनावित
पानै कोरथस फान मस्ताना । ईछा से ज़ान

o o o o

भजन न० ६२

दितम दर्शन म्य वर्षण तल. बेमार बल. ब. बेमार बल.

१ रावुन रोव न. रावण. तल.
ब. वंदै कल. त. हावतम रोय
गुपित गंगा भरत निर्मल. बेमार०

२ वज़ान शिवहू छु शंख.कि बल.
प्रज़ान छुम नार शशिकलि रहे
रो टुम छ़ल. अ'श्क. ब्रह्मण्डतल. बेमार०

३ प-रुम ओमकार सोऽहं तल०
क'रम पानस सो.य कल में
हरन दोष पान ब्रोंठकुन बल. बेमार०

४ अचान ओसुम ब. बीमस तल०
यछान ओसुस गोछुम यी मे
तरुन तार. सो.थि ईश्वर ज़ल० बेमार०

५ गशुन त्रोवम म्य संसार तल,
मशान आम सोर गंजरुम में
दुशान छ़म केवल. सुन्द फल. बेमार०

६ वनान 'लस.शाह' वो.वुम यी फल०
ग्यवुम रातस दोहस यी मे
चो़.लुम वसवास म्य आ'ईन तल. बेमार०

--o--

भजन न० ६३

दिल फोलि दर्शन चाने सूरमति सर्फ गोसाञे
दिमयो गोड अशि वाञे सूरमति सर्फ गोसाञे

१ शिव छुक कैलास वा'सी शक्ती छय चा'ञ दां'सी
तति छय वज़ान शीन शाञे सूर०

२ जटि छुय च़.'द्रम लोमान हटि छुय वासुक शोमान
गौरी शंकर. साने सूर०

३ मृग. शाला छुक व लिथ.य पानस भस्मा म.लिथ.य
खुर कास असि डयक.लाने सूर०

४ जटि छुक गंगा त्रावान पापव निश. मोकलावान
यमराज़ भय चोन माने सूर०

५ छुय त्रिशूल काल. संहा'री पान. छुक कल्याण का'री
चानि क्रोध ज़ग मा फाने सूर०

६ नन्दकेश्वर चोन वाहन पूर्ण कर मन. कामन
कुस न चोन महिमा ज़ाने सूर०

७ रुद्र गण छिय चा'नि संगी सा'रिय चरसी बंगी
कामदेव दो.द चखि चाञे सूर०

८ आ'रित छिय आशि छारान कोन.छुक भवसर तारान
प्रारान तन मा प्राने सूर०

९ भोलानाथ. सोन संकट आवागमुनक चय चठ
इत गछ. रोज़ि बे माने सूर०

-श्री प्रेमनाथ जी साबनू 'प्रेमी'

० ० ० ०

भजन न० ६४

दिल लिया तु लोलअ जम जम
बम बम ऐ फकीरा
सोरम चेशमअ चानि पुरखम
बम बम दे फकीरा !

यानि वुछ मय जबीन चोन
मोठ म्ये सोरूय नोव तय प्रोन
चजि छायि वसवास तु गम ! बम बम-

चानि अकि सोरखनअ सीतयेन
ज़ान गयि म्ये दअन दीनन
खासन सूँत्य आमन गव त्रम ! बम बम-

लोलअ मस तेरे दर पर
साकिय अज़ बुँ चोवयस
पायि मानअ कया छु पुरखम ! बम बम-

वायान साज़ संतूर
सोख् मोख् आया सरूर
तारअ चअरिथ छु ज़ीरअ बम ! बम बम-

शिवनाथ हे त्रिजगतपाल
च़रणन वन्दय पनिनय लाल
कैलास कोह सु हरदम ! बम बम

तेरे तंग है पारवती
कासान तंग दस्ती
सर्वमंगल तमिस छु क्रम ! बम बम-

आदिदीव सेद्धिदाता
संग उसके भी वल्भा
टोठान सु भज्रॅवुत्यन हरदम ! बम बम-

गल है श्री वासुकी
जटा मे है माता गंगे
च्ये वुछिथ दूर च़लान यम ! बम बम-

बेनवा हूँ में मुज़दर
दस्त बस्त तेरे दर पर
पोश मोत जोशि पिन हम !
बम बम ऐ फकीरा

--o--

भजन न० ६५

कीर्तन- देवी च़रण चा'निय भक्त सो.रन छिय ।
इमोय शरण करोय नमो नमस्ते ।।

१ संकट हरण कवच चा'निय परन छिय
कमल च़रण चा'निय भक्त.नि वरन छिय
प्रेमय मरन यत सब सरस तरन छिय इमोय०

२ यति पूर्य त्रावक तत जायि नेत्र जरन छिय
मंगल रूपी ध्यानस चा'निस सो.रन छिय
'कृष्णस' सू.ति ह्यय स्तुता चा'निय परन छिय इमोय०

० ० ० ०

भजन न० ६६

(गजल)

१ दौरि दुनिया सोरि आख.र यार छांडुन पननुय
आब हर जा ज़ेरि ज़मीन नेरि तस नो.य य'मि खो.नुय ।

२ नूर डेंशन छु न. आसान सूर मलुन ह्यवु पानस य ।
रहबरस कुन पान गालुन वथ सु हाविय तस कुनुय ।।

-श्रीमती अरज़ी माल

० ० ० ०

भजन न० ६७

१ देहकिस द्वारस ल़यि त्रो पराव.ञि
मोह. निशि चि़त्त छुय प्रावुन हौ ।
वावस मंज़बाग चोंग संदारुन
सत् विचा़रुन सोऽहं सो ।। सत्०

२ मनचै पथ्वियि गाश ह्यत. सारुन
शशिकलि प्रभात फो.लवुन ह्युव
द्वादशांत मंज़ चित्त सिर्यि गछि खारुन सत्०

३ गुरु शब्द निरोध किञ. हां'गिञि हारुन
यछि वोंद पछि सिंधि साबुन ह्युव
पुक्तकार मोक्त समंदर गछि खारुन सत्०

४ प्राणस त. पवनस मन मिलनावुन
द्यान धारणायि किञ धारुन ह्युव
तमि योग ज्योति रूप ब्रह्म विस्तारुन सत्०

५ ज़ाग्रत त्रा'वित स्वप्न प्रकटावुन
सुषुप्ति मंज़ सुख प्रावुन ह्युव
तुर्यायि सू.ति चित्त लयि संदारुन सत्०

६ पद्यव रुस्न मद होस्त विस्तार तारुन
शमशेरिधारि प'यठ लारुन ह्युव
पख उपज़ावित वुफि गछि तारुन सत्०

७ दम ह्यथ दमनस मन. सो.नुर गारुन
देह मायायि त्राम कारुन ह्युव
ज्ञान सोन. चित्त कहवचि गछि खारुन सत्०

८ 'चन्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत तारुन
ओबर तल सिर्यि प्रकटावुन ह्युव
अंधकार च'लित गटि गाश ह्यक सारुन सत्०

o o o o

भजन न० ६८

लेखक :-''संतोषी''

दिम म्य रच त. शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी ।
यछ त. पछ छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी ।।

१ मंगहाय चे़य ब. वरदान छुम न. मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
रूज़ मा चा.ञ म्य निगरानी महाराज्ञी०

२ यलि न. च़. थवख म्या'ञ कल वन. कस ब. छुस दुर्बल
कुस लभन चे़य ह्यु ब. दा.नी महाराज्ञी०

३ यल. छु चोनुय योत दरबार पूर. ब.रि ब.रि छि अंबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी महाराज्ञी०

४ कांह अखा ति आशावान वाति युस चे निश मायि सान
लभि न ज़ांह सु मान हा.नी महाराज्ञी०

५ यस च़. रोज़ख पान डखिदार दिख सुमन भक्त अधिकार
पोरि कुस तस प्राणी महाराज्ञी०

६ भक्ति भावस च़. छख ला'र फल दिनस छा'चै़ निशि ता'र
छुय चे़ नाव ईशा.नी महाराज्ञी०

७ छख शिवा च. शिव शक्ति चय हय युक्ति त. मुक्ति
च़य उमा च़य ब्रह्माणी महाराज्ञी०

८ नव निधान छिय चे ब'डि कोश दिम म्य परम सुख त. 'संतोष'
छुस मंगान ब. सुय च्य ज्य'नी महाराज्ञी०

० ० ० ०

भजन न० ६६

माऽज राऽगन्या

द्रायख लंकायि नऽख्य हनूमानस
आयख माता तुलॅमुलि थानऽस

चोन स्मरन गरि-२ कऽरान
महादीवस छु आनन्द यिवान
छख चुँ शक्ति पान भगवान
आखय माता तुलॅमलि़ थानस ।।१।।

मायि बो'रुत नाव चोन ह्यवाऽनी,
राऽगन्या माऽज खीर भवाऽनी।
चऽशमुँ वन्दय चाऽनिस पानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।२।।

आय माऽजि साऽरी चे'य शरण
रऽट्यमुँत्य असि चाऽन्य् चरण।
हाव प्रकाश यथ मूर्ख पानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।३।।

शोलुँ मारान आऽठम् क्या सजान,
राऽत्य् रातस रऽत्नदीप दज्ञान।
अऽगनुँ ख्वशूब खसान आसमानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।४।।

पाठ पूज़ा थदि थदि ग्रज़ान,
शंख तुँ गंटायि प्रथ तर्फुँ वज़ान।
कूंच़ शाऽति यिवान पाऽन्य पानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।५।।

माऽज राऽगन्या छख स्यठा आऽरी,
बोज़ ज़ाऽरी कासतमि खाऽरी।
चाऽन्य भऽक्ति आऽसिन मे' बानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।६।।

च़न्यच़ल मनस करतम शुद्धी,
रुँच़ प्रकरथ दितम रुँच़ बुद्धी।
थवतुँ मगन असि पनुँनिस ध्यानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।७।।

पापुँ कर्मव छुँन्य छऽकराऽविथ,
माऽजि मतुँ छुँनतुँ अडवति त्राऽविथ।
चानि अनुग्रेहऽ वुतुँरव ज़मानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।८।।

गम शाऽद्यायानुँ ताफ तै शुहुल,
बाऽस्यतन मे' ह्युवुय बिलकुल।
दितुँ होसला युथ में' पानस।।
आयख माता तुलुँमुलि थानऽस ।।६।।

कम विह्य गछ़ान जुवस तुँ जानस,
पानुँ वाऽत्यज़्यम बे'पछ़ पानस।।
मऽलिक छख मेनिस जानस
आयख माता तुलुँमुलि थानस ।।१०।।

गन लाल कौल-नकैब

——०

भजन न० ७०

दुछि, दुछि भाव पम्पोश
माज्य चरणन बुँ भावहाय,
छुम म्य कूत् च्योन अनुराग,
सीन मचर्यथ बुँ हावहाय।०। दुछि०

माज्य म्य दिखना चुँ अनवारि
छऽरि म्य गछ़हान आशिटारि।
आशिवान्यि शेरि गगंजल
दारि दारि च्ययि बुँ त्रावहाय।
प्रयम जल मुख बुँ छलहाय,
मलहाय भाव अनुराग।
चूनि ज्यरि ज्यरि बुँ आसन,
तोसकिनि वथरावहाय ।०। दुछि०

हृदयिकिस भद्रपीठस प्यठ,
बुँ चयि ब्येहना वहाय।
शान्दकनि अन्तः करण,
मखमलि डखि थावहाय

दहि रंग दह यन्द्रियय
पांछ पांछ बुथि शेरहाय
पाऽरहाय रूनि गुडकरि,
पादज्यरि फुलरावहाय ।०। दुछि०

धूप दीप कनि देह त प्राण
आलवहाय च्ययि बुँ अन्दि अन्दि।
व्यन ज़्याफरि तुँ पोशगन्दि
वारि वारि पुशरावहाय ।०। दुछि०

खुल हटि बोजनावहाय,
पाच्छस्तव त सास नाव चयि,
वाहन ह्यथ च्योन स्थान,
लोलनाद ग्रज़नावहाय ।०। दुछि०

छुस बुँ छोर छिम न घन त द्यार
क्याह करय बुँ पेश उपहार
च्य हाय छिख क्य माज्य डखिदारं
पुत्रतोन नेशनावहाय ।०। दुछि०

छुय करून च्य माज्य म्य अथरूट,
छुस न पुखत दास छुस बुँ खोट
खोट वस्या नख च्यानि रूस
इयि बुँ च्ययि याद पावहाय ।०। दुछि०

छख च पान जानान माज्य,
गुन्-अवगुन त हाल-च्याल
तोति वछि त माज्य म्य,
कमर्फल, सुख मुख व्यछनावाय।०। दुछि०

कुस अखा द्राव च्यि निशि खा'ल्य,
भाव माल यिमि च्यि त्रावयय नाऽल्य।
छ्यव अथव क्याह अनय बुँ ड़ाऽल्य
तोति आत्मदीप आलवहाय ।०। दुछि०

गछ म्य रोजमि च्यान्य स्मरण
स्वख दोख विज़ि त क्षण क्षण
छा म्य अथि, यि छु च्यि तान्य,
तिय च्य अथि वछ़िनावहाय ।०। दुछि०

जाँहमा डल थयिज्यम ह्यस त होश
दिम मनस म्ये राग त सन्तोश।
छुम म्य कूत च्योन अनुराग,
सीन म्य्यरिथ बुँ हावहाय ।०। दुछि०

--०

भजन न० ७१

ध्यान का वैदा करके सजन तूने
ध्यान लगाना छोड़ दिया ।

१ सीस तले पग ऊपर थे
जब मा के पेट में लेट रहा
तब ईश्वर से इकरार किया
तूने भूल के वह सब तोड़ दिया ध्यान०

२ देख लुभाय गया जग की
रचना सब सुन्दर साज बनी
उस सरजनहार की सार नहीं
तूने भोगन में मन जोड़ दिया ध्यान०

३ घर काअन बीच फसाय रहा
दिन रात न मौत की याद रही
उमरा सब बीतत जाय चली
तूने क्यों प्रभु से मुख मोड़ दिया ध्यान०

४ बार ही बार फिरा जग भीतर
जीवन की सब जूनन में
'ब्रह्मनन्द' भजा भगवंत नहीं
भव सागर में सिर बोड दिया ध्यान०

० ० ० ०

भजन न० ७२

धर्मुक धैर कोर खति हा'रवनस.य
रंग. रंग. पोशन का'र्य अ'बार ।
मादलि तुलसियि आरवलि व्यनसय ।।
नारायणस.य छु जय जय कार ।।

१ घरि द्राय भावनायि सू.ति दर्शनस.य
च़ाय पर्वत राज़नुय दरबार-
आय चक्रेश्वरस.य प्रदक्षणस.य नारा०

२ समेरु पर्वत. कोह ख'ति सो नस.य
सिद्ध पीठ सार्यव.य प्रोव अधिकार
नाश गव दारिद्रस अ'किस क्षणस.य नारा०

३ जय जय छु गोकुलस त. बिंद्राबनस.य
जय जय छु नोन द्गाव कृष्ण अवतार
जय जय छु गोपियन त. गोवर्धनस.य नारा०

४ जय जय छु वसुदेवनिस च्य'ड ह्यनस.य
जय जय छु देवकियि यमि च़ोल बार
जय जय छु दुख. अंद बंद रुोज़नस.य नारा०

५ जय जय छु भलभद्रस त. अर्ज़नस.य
मकितयि मंज़ इम द्राय सरदार
जय जय छु तस विश्वरूप दर्शनस.य नारा०

६ जय जय छु दशरथ राज़निस गुणस.य
माजि कौशल्यायि बार बार
जय जय छु अजोद्यायि रामजुव ज्यनस.य नारा०

७ जय जय छु राग चन्द्रस त. लक्ष्मणस.य
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु मरतस त. शत्रुघ्नस.य नारा०

८ जय जय छु वाव. लोकपाल नन्दनस.य
य'मि गोंड लचि सू.ति लंकायि नार
जय जय छु सुग्रीवस विभीषणस.य नारा०

९ मन म्योन पत. लारि मधुसूदनस.य
काम. क्रोध. कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह. रावणास.य नारा०

१० कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनस.य
तार दियि करि पचालस पार
सतचिय स्थित थावि शुद्ध चित्त मनस.य नारा०

११ वन.वुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनस.य
थवनुय तस प्यठ ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स त़ निर्धनस.य नारा०

१२ हीत. अकि मायातीत निर्गुणस.य
महामायायि सू.ति विवाकार
श्वेत पोत वर्ण सोर.न टोठ रातस दिनस.य नारा०

१३ वनवुन यि केंछ़ाह ओस प्रत वनस.य
ती वातनोव गोपियव गुपकार
वार. आव शंकराचार उलसनस.य नारा०

१४ अनुग्रह चोन मंज़ अन्नस.य धन सय
वांसि ताञ पोशनाव होश व्यवहार
कृष्णास' तोषि मंज़ पोश वर्षणस.य नारा०

० ० ० ०

भजन न० ७३

युथ नय लगय बुँ माज्य दकनिय जाहँ

नाव चोनुय म्ये नय माज्य सोरम्य न ज़ाह
युथ नय लगय बुँ माज्य दकनिय ज़ाह

१ म्याज़ि ज़ासै, तुँ करान गोस शुर बाशाह
अऽसुँ द्रायुम म्ये बब, गयम वाल बाशाह
जवान सपदयोस त. ना'ल्य गोमतोति दुनिया युथ नय०

२ गोस करान बुँ द्यन रात दरबाराह
ज़ाहति रुदुम न मर्नुक काँह ख्याला
च्यालिम सितम ग्रहसतिक म्याज कऽत्याह । युथ नय

३ ज़ीवस कति छि रोज़ान पोशन्न बात
च्वान गछान मोदुर मस दोह तय रात
अपजुय आसान कति तस खुश्याह ज़ाह युथ नय

४ केचँन रोज़ान छु शुर सुन्द अभिलाशाह
केचँन पकान छि पत पत शुर फोजाह
केचँन दिवान छि पनिन शुर ढन्ढ़ कयाह युथ नय

५ दोह छि सोरान इवान वृद्ध अवस्था
जोर सोरान पकान छुनह बोदुय काँह
दिहे भारव सु बढि बढि तस पोरा'न केन्ह युथ नय

६ सम्सार बे आर, वलान नाल शाहमारह
बदनस करान छि अन्दरह न्यबऽर गद्य कत्याह
भागिवान नेरान छि यति म्याज ख्याल काह युथ नय

७ संसार कसुय छु म्याज यति ह्यस थवान
ग्रज़ वन्यनन शेरण छि पत्थर पावान
वुछान वुछान गछान छक सूर फैकाह युथ नय

८ सुय छु घाटुल युस पकि यति कल् नमरिथ
गछि पकान यति चोन नाव सुरिथ
अफसूस ख्यवान छु दुनिया तस लारान कया युथ नय

९ ''मुसाफिरस' गछान माज्य दिल परेशान
हाल वुछिय छु म्ये माज्य जंगह् कऽपांन
ज़ार बोजुम इनय माज्य त्रावहाम जाहँ
युथ नय लगय बुँ माज्य दकनिय ज़ांह

--o--

भजन न० ७४

'सथ ग्वरॅ छम म्य चॉन्य लादनय'

नेत्रॅ ज़लॅ गोड़ॅ दिमयो, यूगीश्वरो, सद्ग्वरो छम म्य चान्य लादॅनॅय।
गोपीनाथ ग्वॅर सानि, कास अरॅसरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

आदि प्रभातस स्वरॅनावतम ग्वरॅ, सोन्दरो अठकल वति लागतम।
नत हर्द ब्रोंठॅय गुल, बो गछ़ बरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

चानि यछ़यि तय अनुग्रह गछ़ॅ खरो, ग्वरॅ-वरो दर्शनें बलनम दाद्य।
कर कृपा नाव चोन युथ, क्षण-क्षण स्वरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

ही संतॅ मस्तमलंगॅ सादॅ कलंदरो, स्वन्दरो पादन तल दितम जाय।
चोनुय आश्रम छुम, म्य पज़ॅरुक गरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

स्मरनि चानि सीवक तरन भवसरो, अमरो करतॅ असि पननुय वोपाय।
तिछ़ दया करत युथ चलि, लान्युन वरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

अकि दया दृष्टियि कास वर-हजरो, स्यज़रो शोज़ॅरूक दितॅ असि ज्ञान।
द्वॅय चलि ब्यन गलि, हिशर त कुन्यरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

पननि तॅं परद्युक अनिग्वोट वॉन्य हरो, ईश्वरो संसॉर्य ज़ाल च़ठतम।
अदॅं द्यवॅं शेधि मनॅं चॉन्य, पूज़ा करो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

दस्त-बस्त 'सायिल' आमुत बर दरो, ग्वरॅं हरो हावतम आत्मॅं-प्रकाश।
म्वकलाव कष्टॅं मंज़ॅं कोताह बेयि ज़रो ? सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

---o--

भजन न० ७५

१ नाद बिन्द. परमानन्द नन्द लालै ।
गोकुलानन्द. गोविन्द. गोपालै ।।

२ मधु कैठम मारव.नि हा दो.ध चूरै
मन. मंज़लिस मंज़ करै गूर गूरै
गोपी नाथ. बाल. त्रिज़गत पालै गोकु०

३ यादव कुलके माधव रामै
हे निर्मल निष्कल. निष्कामै
गूर्य बालकन सू.ति मारविन छालै गोकु०

४ राधा-कृष्ण च्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम. स्वर मुरली वायय
रोज़ राम. बोज़ साम वे.दचि तालै गोकु०

५ हृदयस मंज़ बसवनि नित्य लसव.नि
असवनि आसवानि गरुडस खसव.नि
नाल.मति रटहत मो दिम डालै गोकु०

६ हनि हनि मंज आसवनि वासुदेवै
रास मंडुल खेलव.नि कृष्ण देवै
नित्य भासवनि सत यमि कलि कालै गोकु०

७ पंकज़ तनि वैजयन्ती माला
तरज़ अकि ना'लि ता'य मौज दुवाला
संत छिय ब'लित बसंत दुशालै गोकु०

८ केशव. शिव रूप नारायणै
वुन दित नोन गोक बिंदरावनै
चोन ह्योत चेन प्रेम. मस प्याल प्यालै गोकु०

९ विदुर ज़ियनुय घर. यलि चाख.य
भावनायि सू.ति ख्योथ सिवमुत हा.खय
कति गोख तति कोरवन. हंदि सालै गोकु०

१० द्रौपदियि अकि कृष्णा. नाव सू.ति शामै
पैद.नयि तस ति कू.ति वस्त्र त. जामै
ईति क'डिस दुर्योधनन.य नालै गोकु०

११ चाञि मायायि सू.ति मंज़ द्वारिकाये
मथुरायि हंज़ हिश. लरि ता'य जाये
पैद. गयि अकि दम. मंज़ कमि हालै गोकु०

१२ अज़ामल द्राव बोड भाग्य बान.य
निचविस नाव तस ओस नारायण.य
मृत. विज़ि फूर तस श्री अकालै गोकु०

१३ श्री भगवान् छुख पान. प्रत शाये
कुस बोत कुस वाति चाञि मायाये
मोकलाव असि यमि मोहनि ज़ाल गोकु०

१४ 'कृष्णास' शिव रूप. दर्शन दित च़य
सुय च़य च़य सुय केवल छुख न. च़य
श्याम. प्रभात. रूप हावतस कालै गोकु०

० ० ० ०

भजन न० ७६

१ निरला बास. दय वरतन त्रिकाल.
कर्ता भर्ता बाल. ब्रह्मचारो ।

भक्ति भाव. कोसम पोपन करै माल.
बाल. गोपाल. नन्द लालो हो ।।

२ प्रथ भूमिकायि मंज़ शून्या बलये
अ'ति थ्यत करत. चित्त भगवानो
बुद्धि संयोग. साक्षात्कार भास्तम बाल०

३ विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान.
विश्व रूप. किनि छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दितं दीन दयाल बाल०

४ शुद्ध प्रज्ञायि हं दि सत् संयोग. मान.
मध्य मायि मध्य भूत प्रज़लानो
तेज़स्व बालार्क तेज़ दीप्ति विशाल. बाल०

५ बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान.
चित्त गण. द्योतव.नि चित्त्स भानो
चित्त शक्तय्यानन्द. भोगी प्राज्ञ.काल. बाल०

६ पश्यन्ते यत्-यत् चेय योगेश्वर.
तत् वत् वुछित चित्त स्वप्रकाशो
बाह्यन्तर तेज़ निर्भर त्रिकाल. बाल०

७ द्वादशांत वास. वासी चेतन मान.
स्व सुखस्थान. सुख भोगानी
स्व परानन्द आनन्दय सर्वकाल. वास०

८ सहस्र. दल. प्यठ. स्वस्ति ज्योतिष्मान
अंड. पिंड. अखंड. दीप्ति मानो
अप्रमेय. अविच्छिन्न. दिन. दिक्काल. बाल०

९ परात्पर गाशरं हंदि गाशर.
सर्वज्ञेश्वर. बोध. मानो
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्र पाल. बाल०

१० सत् सत्व तत् तत्व अच्युत. ब्रह्म तत्व
नित्योदित चित्त विवस्वानो
ओंकार. रूप. परिपूर्ण. निर्देश. काल बाल०

११ साराति सार. सर्व आत्म सर्व आधार
देवादि देव. गो धाम. नाथो
हे दात शक्तिपात. करतं उपराल. बाल०

१२ सुज्ञान. सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण. क्षण भासतम साक्षात्कार
कृपा करतं भगवान कृपाल. बाल०

१३ पादार्बिन्द. अमृत तृप्तावतम
प्रावनावतं परम. आनन्द थान.
पाद. कमलन वंदै नेत्रन हं.दि लाल. बाल०

१४ दासन क्युत ह्यो.त छुक वडि स्वभाव.
शुभ. दर्शन. वर दिवानो
विदुरस हाक. म्य प्यठ आमुत साल. बाल०

१५ प्रारान प्रारान वोतुम यूल काल.
अनुकूल भगवान. दयालो
ब्रह्मार्पण बोज़तम प्रातः काल. बाल०

१६ श्रीधर. सुर. गुरु. बाल. दामोदार.
श्री कृष्ण. वासुदेव. श्री रामो
सुख. मुख सन्मुख आस्त अन्तकाल. बाल०

१७ निरला चानि संयोग. प्राव. यव.ना
सुज्ञान. विज्ञान. अति वृद्धा
दय. गोविन्द. दास.य बन. त्रिक. काल. बाल०

० ० ० ०

भजन न० ७७

नव दुर्गा लीजा

१. नव दुर्गाय माताय करौ ज़ार पार
माज्य देवी आSसिनय जय जय कार
सोन्त् हर्द छख च्ई दर्शुन दिवान
श्रद्धायि सीत्य भक्त छी पूजाऩ ! वन दुर्गाय-

२. भक्त द्वद जलकुई च्य गोढ़ दिवान
चानि पूजायि छु स्यठा महिमा
नवन दोहन नवन रूपन छिय पूज़ान
अनुग्रह छखय चॅ़ भडखुँत्यन करान। नव दुर्गाय-

३. पूर रातस ओसुस च्योन ध्यान करान
खूनि दिल अSछव किन ओसुस हारान
ओन् छुस म्ये गट छम माज्य अन्दर हृदयस
चानि प्रकाश सीत्य बॅति प्रज़ला'ह ! नव दुर्गाय

४. लोल सात्य परहा माज्य चानि त्वताये
दूर गछ्नम माज्य सारय आपदाये
असSव्नि प्रजलविनि चान्य दोह भासान
चा'निस दरबारस मजं छय रोनक भासान ! नव दुर्गाय

५. लोल् तय जोशसान भक्त यिवाऩ
अनुग्रह च्ये हय मंगने छिय यिवान
दर्शून करान मुराद पननी प्रावान
खा'ल्य छुन चानि दरबार् नेरान! नव दुर्गाय

६. अज़ आव कर्म हीन माज्य चोन दरबार
द्यव् म्येति बनिहे चाने डेड़ि तल शेहजार
शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा,
ग्वडन्युक दोयम, त्रेय्म रुप चा'नी छिय ! नव दुर्गाय

७. कुष्माण्डे स्कन्दमाते, कात्यायिनी
चूरिम पाँचिम शेयिम रूप चा'नीछिय
कालरात्री, महागौरी सिद्धिदात्री,
स'तिम आज्ठ न'विम रुप चा'नी छिय, नव दुर्गाय

८. कन्या रुपस मंज माज्य च्ये छिय पूज़ान
अन्न धन, भक्ति छखय ज़गतस बाऽ'गरान !
नवन दोहन भक्त छिये यज्ञ तय दान करान
चानि अनुग्रह सा'त्य ज़गत शोल् माशन् नव दुर्गाय

९. म्योनुई मलाल माज्य च्ई अज़ त्राव
खिर खण्ड़ थाल ह्यथ "गोकुल" च्ये प्रारान
नवदुर्गाय करव ज़ार पार
माज्य भंवानी आऽसिनय जय जयकार!

--o--

भजन न० ७८

१ परिपूर्ण छु नूर. भो.रमुतये-सूर.मोतये आंगन च़ाव ।

२ शांत निर्मल ब्रोंत कास.वनुये
भास वुनये सास रव ज़न
शिव शंभो अलक्ष्य बोल वुनये सूर०

३ नंग भस्मा अगन मो.लमुतये
हटि भुजग जटि छुस गंग
डय्कि चन्द्रम टिक. शोलवुनये सूर०

४ अलक्ष्य बूजित तिम. गूर्य भाये
जसुधायि सान करान विनती
घन. द्यारव भो.रहस फो.तये सूर०

५ ज़ोगि दोपनक योगी ज़ा'निव
भोग त्रा'वित छुस निराहार
कामदेवस भस्म कोर मुतये सूर०

६ लोभ क्षोभ. नहीं ना अभिलाषा
आशा यह एक मन में
कृष्ण दर्शन करनि आमुतये सूर०

७ राधे श्याम को बोलो आदेश
ईश जोगी वेष धर के
तमि अभिप्राय योर आमुतये सूर०

८ बूज़ ज़सुधायि ह्यस व्यस.रा'नी
स्वामी सा'त्र विनती बोज़
खोचि बालुक छु रात ज़ामुतये सूर०

९ चानि दर्शन गछि तस छ़ाये
राय क्या छय माय भरहस
अधोर भैरव. फेर गछ पो.तये सूर०

१० जोगि वो.नस छक अनजा'नी
मान योगियन हुँद सरकार
राज़. ज़गि हुंद माजि ज़ामुतये सूर०

११ मार ज़गि हुंद वार. छुस वालुन
गालुन छुस दुष्ट संबन्ध
पालन कर्म वेदव वो.नमुतये सूर०

१२ त्र्यन भवनन भय. सुय कासान
भासान सु नित्य ननि नो.न
मूल ज़गि हुंद ब्योल वोव.मुतयेय सूर०

१३ योग. मायायि संयोग क'र्यथ.य
प्रेम. भ'रिथ.य नित हर्षाण
कृष्ख. शंकर क'रित नाल.मोतये सूर०

१४ ईक्षण. किञ कोरुक वार.संवाद
दर्शन. आ'सि हरषा'णी
ती वो.नुक ई ज़गतस ह्योतये सूर०

१५ देव आकाश पोश वर्षा'णी
अछ-रछ मंच़ नच़नस गयि
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये सूर०

१६ नाद लोमुय त'तिय लोल म'तिये
रासुक बास या'ञ वनि आम
सास ''भास्कर'' ज़न पूरि खो.तये सूर०

o o o o

भजन न० ७६

पाद. कमलन तल ब . आसय, करनि चा'ञिय अस्तुती ।
मोक्ष दिम बो.ड वर्ग दिम हे भर्ग. शिखा भगवती ।।

१ गोम नेत्रन खून ज़ा'री, छुस च्य कुन जारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्वा'री, असि छि पापव व'लिम.ती पादि०

२ चानि आशायि योत बुँ आसै. ना उमेद नेरै न. जांह
या म्य वर दि मोक्ष. दामुक, नत. छुसै प्रारान यंती पादि०

३ लोल. बागस पोश फो.लि मे, बेरि चाञे च़ा'र्य च़ा'र्य
शेरि लागै भाव कोसम, शोल व.नि कारे प'ती पादि०

४ क्या वनय अ'सि मंदछेम.ति, चन्द. छ'नि सोदा करान
कर दया बो.ञ वुछ म.तथकुन, शर्मि स.ति अ'सि ग'लिमती पादि०

५ चा'नि गुण विस्तारनुक ताकत, अनि कुस कस वनिय
छुय च्य जय जय शाम.सों.दरी, जाम. शूभान छी छ'ती पादि०

६ ज्ञान. दाता मोक्ष. दाता छख, ज़गत माता च़ छख
हे भवानी कर म्य' वा'णी, स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती पादि०

७ पज़ि मन. युस भक्ति चा'ञी, करि निष्कल राथ. दिन.
क्या छु संशय तसंदि बापत, मोक्ष.दाम. कि बर व'थी पादि०

८ चा'नि गुण छुस बो विचारान, पन ओम. कि खरान ब. छुस
अवसनकि वर.,दो.न कुनुय कर, नत. छु आछुर का'ति क'ती पादि०

९ सर्व. व्यापक छख चो. पा'री, अ'सि छि शा'री क्या वुछव
वन च्य' रुस्त कुस बोजि ज़ारी, हाव मो.ख प्यठ पर'बती पादि०

१० कर्म. हीनन धर्म हीनन? कर्तव्यन सान्यन म. वुछ
डाल स्यो.ध अथ. कर्म. लानिस प्रक्रमस चा'निस ख'ती पादि०

११ वील.ज़ा'री बोज़ 'दासस' रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य' रौशन छुस ब. तोषण, च़य म्य बख्शक थ'ज-गती पादि०

० ० ० ०

भजन न० ८०

पाद. कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम् ।
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम् ।।

१ कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़बम्
तालकस नाल ता'य फ'रियाद बोज़तम्
पाप शाप कास्तम संताप हरतप् अनु०

२ म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतम होशन
तोषतं त. मनि मंज़ लोल. रस भरतम् अनु०

३ कन थव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च़.य मांज़ि धारणायि धरतम् अनु०

४ भय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि बोर वालतं खो.टि व्यवहारुक
तंग आस य'मि निशि वासना फिरतम् अनु०

५ चो.दहान भवनन माता च़.य छक
दाता च़.य त्राता च़.य छक
रोग. ता'य शोक' निशि जल च़.य म्य कडतम् अनु०

६ बदवुन बालुक मा'जि छुसय प्रारान
थो.द तुलतं इत लारान लारान
दिलास. दित म्य ओश वुथरावतं अनु०

७ दीनस त. क्षीणस सत छम चा'ञिय
भास्तं हृदयस हे मंज भवानी !
दासस त्रास ता'य वसवास हरतम् अनु०

८ संसार. द्वैतान ब.य रोटुत छुस
दुःख सागरस मंज़ बय फो.टमुत छुस
खारतं आवलन. मत. म'शरावतम् अनु०

९ पाय म्योन च्यय रुस्त कांह करिन. माता
उपाय र'स्त्यन चय छक त्राता
कास्तं अंधकार दास गंज़रावतम् अनु०

१० बील.जार मा'जि बोज़ च़य नील कंठस
शील हर चं.य छक आशा जा'ञ छस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशरावतम् अनु०

० ० ० ०

भजन न० ८१

पा'नि पानस दितो वो.नये
हाविय शुभ दर्शुनये ।।

१ संसार कठोर छु हुन्ये.नये वछुत यति केंह न. लारुनये
कुनि रंग नाव तारुनये हाथिय०

२ भक्ति कामधैन रछुनये वासनायि घास दिस ख्योनये
गुरु शब्द वो.छ लागुनये हाविय०

३ विचार ह्यस दिस घोनये ज्ञान अमृत ह्यि द्युनये
संतोष दज्जि फयारुनये हाविय०

४ वैराग ल्यजि कारुनये द्यान. जागि सू.ति ह्यि ज़्योनये
ह्यन लो.लि ललनावुनये हाविय०

५ चित्त क.यि शेहलावुनये सोऽहं दोन त्रावुनये
रात दोह ह्यन मंदुनये हाविय०

६ नेर्यस प्रकाश. थ'ञिये देह गुरसस मंज़ न'ञिये
आत्म देव ग्यव रछुनये हाविय०

७ दारि बर बंद करुनये यि रत्न हायि चमकुनये
दो.गुन गछि ओंगुनये हाविय०

८ प्रज़नाव पान पनुनये अद कति ज़गत भ्यो.नये
चित्त प्रकाश ह्यि उलसुनये हाविय०

९ फलि निश कुल कति भ्योनये फ'लिस.य मंज़ सु आस. वुनये
सुय फोल. ह्यवान फो.लुनये हाविय०

१० कति रोजुन त. मरुणये दु.य गलि पत रोज़ि कुनये
कुस धारि कर होरुनये हाविय०

११ इच्छा कुल गालुनये त्यलि क्याह नो.न वनुनये
'भक्तिस' हाल भावुनये हाविय०

-स्व० श्री नन्द लाल जी त्रालवासी

० ० ० ०

भजन न० ८२

पानै बिहित पननिस वानस आनस आनस वुछहन यार ।
तसुँदुय सौदा हर दूकानस आनस आनस वुछहन यार।।

१ मस्त गय. मस च्यत वा'ति लामकानस,
अयान सपदुक पननुय पान ।
शाबाश ब'विनै अथ खुमखानस आनस०

२ फना फिला निश. छुय पानस,
बका बिला तहकीक कर ।
ब्रह्मण ला'गित अछ बुत खानस आनस०

३ सा'लिकव मा'लिकी क'र यत जानस,
तिम छिय वा'तिथ पय दर हय ।
आशक छु मुश्ताक पननिस पानस आनस०

४ आश्कव पान खोर अ'श्क, पेचानस,
हा'सिल सपुदक वा'सिल कार ।
दम दम. म्यू'दहै पननिस जानस आनस०

५ पानै पानस ध्यान करू पानस,
आनस निश. तस लगिय न. छयन ।
मीलित सु डयूठुम दानस दानस आनस०

६ दस. स.ति पम्पोश फो.लियो जानस
गमगीन मो गछ रोज़ बेदार ।
खय कास दिल किस आ'ईन खानस आनस०

७ हस्ती मो कर पननिस पानस,
मस्ती पननिय रावान छय ।
'लस शाहो' लय कर प्राणस अपानस आनस०

० ० ० ०

भजन न० ८३

मिलाप

१ पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित
तन्हा चो लुक म्य त्रावित कस ? म्यानि जोगि रायो ।।

२ वुछनोवथस मनुक मल सो.न म्योन द्राव सरतल
वुछमक न. वार. को.रथं च़स म्यानि जोगि रायो

३ ह्यकखै वुछित च़.तिम छोख मुचरित ब. सीन. हावय
च़य वन च्य रुस्त भावय कस? म्यानि जोगि रायो

४ यव किञ बे सुम छय कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यतिय छ़यन बस ? म्यानि ज़ोगि रायो

५ लो.भमक त. वो.न म. रावुम बालन कोहन म. छावुम
सत्संग. प्याल. चावुम मस. म्यानि जोगि रायो

६ भगवान सोन बूज़िन असि आश चा'ञ रूज़िन
हथ वा'सि माजि मा'लिस लस. म्यानि जोगि रायो

७ नित्य इष्ट देव, संद्यन पंपोश. पादन.य तल
बंबुर ब'नित चवान गछ रस. म्यानि जोगि रायो

८ पज़ि प्रेयमके प्रभावय भोगान सुख त. सावय
निराग राज़. योगस खस. म्यानि जोगि रायो

९ दय. सुद प्रसाद सत्ज़न भक्तन छि बा'ग रावान
प्रेमुक चवान त. चावान मस. म्यानि जोगि रायो

१० ब.ति चा'ञ दा'सिया छस च्यय मूल. माल. अर्पण
युथ छुक च़. इष्ट देवस तस. म्यानि जोगि रायो

११ उपकार. म्यानि बापत थो.द योग. पीठ त्रा'वित
असि निशिति क्यूंच काला बस. म्यानि जोगि रायो

१२ भाषण मधुर मधुर कर फुटराव शकरस मो.ल
अभिमान कोसमन हर अस. म्यानि जोगि रायो

० ० ० ०

भजन न० ८४

पो.त जूने मो.त सुल. नोवुम, लल. नोवुम नारायण ।

१ प्रयि त'मिसं.ज़ि हियि तन ना'व.म, पोश वथरस प्यठ गोशन
रोश. इयि ना होश राव. रोवुम । लल०

२ बाल. पान तस पत. राव. रोवुम, हाल. कमिम सुय नाल रटहन
शिव. शम्भो शून्य बोल. नोवुम । लल०

३ काम. देवस नाम. लेख. नोवुम, पाम थविनम कर डेशन
रुम. रुमै. राम रम. नोवुम । लल०

४ द्वार प्यठ द्वार, वार. वुछ. नोवुम, जूनि छोंडुम मंज तारकन
मारकरन मंज लाल. उलसोवुम । लल०

५ लो.लि मंज़लि लाल.लल. नोवुम, बोल. नोवुम सुबह शामन
चीर्य सोवुम सुलि वुजनोवम । लल०

६ ज़ीर. बम. कुय सीर वु.ज़नोवुम, फेर. नोवुम तति हेरि बो.न
वेरि तमिसं.ज़ि शेरि वात. नोवुम । लल०

७ ज़्यव नार.स.ति वार.छल.ना'व.म, तव. लोलुन नार शोलन
कनव बूजुम अ'छिव वुछ. नोवुम । लल०

८ क'द नाबद आरद नोवुम, फंद क'रित यूर्य अनतन
अंद लो.बमस न.वों.द फोल.नोवुम ।लल०

६ हंस. द्वारय वार. प्रज.नोवुम, प्रारि प्रारोस राम. रादन
ब्रह्म.सर पान सर. कर. नोवुम । लल०

१० अथवासय रास खेल नोवुम, श्वास उश्वास नो.न छु भासान
सास 'भास्कर' विकास भासनोवुम । लल०

० ० ० ०

भजन न० ८५

प्रये चाञे दयो नेरय ।
ब. फेरय दरद. नायि हू हू ।।

१ ह्यतन सु.तिन पनुन रहबर गछक को.त रठ च़ पननुय बर
न्यबर मो नेर च़ अछ. अंदर दिलुक दिलबर छु सोऽहं सो प्रये०

२ च. अछ. अन्दर पनुन वुछ ओल च़ पानै छुक घरुक घर बोल
ग्रटै फेरान महीन नेरान ब ज़ोर आब सोऽहंसो प्रये०

३ छय गफलत गट गाशस ठो.र तामिय गाशे घ'रित छुय मो.र
शबस खसान दोहस वसान शब.य सेज़ान छु सोऽहसो प्रये०

४ छुखै रिंदान. कतरस प्यठ छु कतरै कुलि द'रियाव च्यथ
छ द'रियाव. दुरिं अरफानै गुद्दान पानै छु सोऽहं स प्रये०

५ रब.य छुय सब सब.य छु'य रुब सपन रिंदान. बाज़ानै
छुहा'सिल बा सफा वा'सिल छु हा'सिल आशकै हो हो प्रये०

६ हुवल अवल हुवल आखिर हुवल ज़ाहिर हुवल बातिन
हुवेदा शादि शाहानै वज़ान पानै छु सोऽहं सो प्रये०

७ अथव पनन्यव ल्यूखुम नामे ''मकुंद रामै'' पनुन अवहाल
यि केंह वव्याम. ती जामै म्य अरामै छु सोऽहंसो प्रये०

० ० ० ०

भजन न० ८६

प्रातः काल आव म्य'ति अनत. गाश राऽगिन्या।
छम चा'ञ आश म्य,ति पूर्ण कर ।
लटिं मुख हाव मोह. गटि करत नाश राऽगिन्या।
छम चा'ञ आश म्य.ति पूर्ण कर ।

१ जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान.
छुस हालि हा'रन डेंशत कर
जल हाव मुख पनुन छुम न. बरदाश्त राऽगिन्या। छम०

२ भक्ति भाव. स.तिन वति चाञि नेरय,
कति छुख आसान पैगाम सोज ।
नत. दिम पनःनुय प्रोन यादाशत राऽगिन्या। छम०

३ मोह. गटि मंज छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर. हावतम सत.चिय वथ ।
वथ हाव नो.न त्राव सूर्य प्रकाश राऽगिन्या। छम०

४ हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कमान,
शहरन, त. गामन कति आसि म्याज ।
छखै पाताल किन. छखै आकाश राऽगिन्या। छम०

५ कल्पनायि रुसतूय कल हो बन्द.यो,
कलि चाञि रा'व.म म्य'न्दर.र त. नेह
बो.ल. बोञ विष्णास' चलि अभिलाष राऽगिन्या। छम०

० ० ० ०

भजन न० ८७

प्राव कंवल्य हा केवलो योग चाने बनि आज़ा'दी ।
भोग. सुखा हा निष्कलो य'लि चलनं पाप.नि ला'दी ।।

१ चोन दूर्यर ह्यक कव ज़'रित कमि चलै ह्यक. च्यय निशि इथ
छुमन. करार गम चानि गलो योग०

२ गर्भ. नयन मंज़ फीरि फीरि वुछ म्य लो.कचार यौवन त.पीरि
बांड ब'नि ब'नि कम जाम वलो योग०

३ पय अज़ताम लोभुम न. चोनुय धर्महीनस म्य ओस कर्म लोनुय
नठ छम वति निशि मा डलो योग०

४ मन दर्पण छुम मा'ल. गोमुत मोहकुय मदिरा छम म्य चोमुत
ज्ञान. गंग ज़ल मल कल. छलो योग०

५ नारायण कस गछ़ शरण छ़ोटनं किथ. पा'ठि ज़न्म मरण
हे शरणागत वत्सलो ! योग०

६ य'च़ कोल चानि वते द्रासै बुजरुकय प्य'यनै पासै
बुजरस त्रा'वित वो.ञ म. च़लो योग०

७ मन काफूर अन. चानि वेरे रत्न ज्योति फिरवै शेरे
गाल मल 'ठाकुरस' निर्मलो योग०

० ० ० ०

भजन न० ८८

प्रेम. पोश लाग शेरि तसं.जि वेरि करवा'य रो.वये ।

१ होश बुल बुल प्राण पोशनूल ध्यान.कुच च़ाव फो.लनस
प्रारवुन रोज़ खबरि तसंज़े वेरि०

२ भाव बंबूर द्राव गोशस पोश. बागस चाव मंज़
करनि गूँ गूँ असज़ि वेरि०

३ स'मिवि स'खियव अस्त. अस्तै तमनि लागव भाव. पोश
यस नन्द लाल नाव प्यवये वीर०

४ शशकिल प्रावक अद, चाव ज़ाव अमृत द्राव नो.न
श्याम. सुन्दरन दाम, च्यवये वेरि०

५ आव सोंत ता'य छाव अछि पोश च़ाव बुलबुल बागन.य
त्राव मोह. जंद बंद. कुवये वेरि०

६ नो.न सु वुछत. ज़ानावारय मो.क्त. हार. य आव ह्यत
ज़ीव. डल. दित द्राव व'रिये वेरि०

७ ह्यछत. वार. करत. चार. पननुय ध्यान धारणायि धार ध्यान
ज़ान प्राण मा छु मूर्ख. प्रवये वेरि०

० ० ० ०

भजन न० ८६

परम. धामुक म्य चावतम दामो
सत्गुर. मोक्षदायक रामो ।।

१ त्र्य. ताप कामनायि आमतावै
व्यसरावान छुम भक्ति भावै
फिरवान त्रशना गाम. गामो सत्गुर०

२ गा'लिथ काम क्रोध ज़ा'लिथ तम
सार द्रव्य पथकुन कुनुय सोहम
अनुग्रह. चात्रि सू.त्य गाश आमो सत्गुर०

३ जिंद युस मरि तस क्याह करि काल
रोज़्यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर०

४ मन तय प्राण युस करि अर्पण
सन्मुख सुय वुछि नारायण
इथ. पाठ्य लक्षमणन वुछ रामो सत्गुर०

५ तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वरज वाव
फटि न. जि रोज़्यस न. पत. पामो सत्गुर०

६ सूरुम श्रम च्य पुशरोवुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल निष्कल निष्कामो सत्गुर०

७ मूह त.रि सू.त्य छुस बर. गोमुत
संताप ताप ज़र ज़र प्योमुत
होल चलि चाञि इन लोल आमो सत्गुर०

८ राम लक्ष्मण च्य वन्द वञ पान
परम आनन्द आनन्द प्रावाण
दाम. चावतम योग. बल. रामो सत्गुर०

० ० ० ०

भजन न० ६०

पाठ तय पूजा केंह ति छुनसन ज़ानान।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस।।

येलि छुम लोकचार च्यतस प्यवान,
तेलि छुम फेरान क्याह कोर मे।
कोन आसय सनमोख दोरान त लारान।।
माज भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

पननुय हालिदिल वोन्य बुँ व्यछनाव्य,
बावय माज्य भवान्य कन में थावतम।
अछव किन्य अशिकनि खून छुस बुँ हारान।।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

यिम जान्य म्य बाय बंद तिम द्रायि वोपरय
मतलब विजि आस्य सारी म्यानी।
मतलब नीरिथ कुनि काह न आसान।।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

क्याह वन मन पनुन सुति छुम न पननुय
इन्दरयि पनुन छुम ज़नति गाऽर ज़ान।
येलि कर द्यान चोन तेलि तिम ति कायान।।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

येलि येलि द्यान चोन माज्य ह्योत मे करुनुय,
नफसन पननी फुरनम बुथ।
अज पगाह कर्य कर्य वादुँ ओस म्य थावान।।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

ओस वनान क्याह चेर गव आक बथ छु दूर असि
आकवथ सोरनस वुनि छुन वक्त।
ती वन्य वन्य ओस मे सुय ब्रोमरावान।।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

वोन्य बो ह्यस आसय प्योसय पायस
रोज वोन्य बुँ चान्यन चरनन तल।
करतम अनुग्रेह तथ छुस बुँ प्रारान।
माज्य भवान्य चेय शरण आमुत छुस ।।०।।

० ० ० ०

भजन न० ६१

१ पास कर न दासस छख राजि राऽनी
म्याजे ज़ार बोज़ म्यानीये
संसार चूर छुम जाल लायानी
अमहिाल छुस बुँ रावाऽनिये
होल छुम करहा पूजा चानी। राऽगिन्या ज़ार बोज म्यानीये

२ वस्त्र नाल्य क्याह छिय च्य शूबाऽनी
रूप च्योन गाह त्रावानी ये
अष्ट भुज सांस बद्य नाव छिय च्यानी म्याजे०.....

३ चुन वन्य वीदन मंज छि ग्वन च्यानी
दीवन स्वय छि हारानी ये
हारिथ गय कम साद संत साऽरी माज्ये०.....

४ सारिनय दीवन हंज महाराऽनी
अलम चानी कया छि लहरानीये
कोहस प्यठ बिहिथ करान हुकुमराऽनी
सन्मुख इखना दिल छु तंबलाऽनी
क्याजि छख दूर रोजानी ये
मुख हाव भक्त्यन कर महरबाऽनी माज्ये०.....

५ दूरि प्यठ आमत्य छिय ननवाऽरी
दोःख त दअदि कास असि सारीये
त्रिश-वन्य भवनन छख फेराऽनी माज्ये०.....
शारिका रूप छक अन्न बागराऽनी
काँसि छख न खाली त्रावानीये
कर दया अनाथस दिम म्य पारि ज़ाऽनी
माज्ये ज़ार बोज सानिये
पास कर दासस छख राजि राऽनी
म्याजे ज़ार बोज़ म्यानीये।

० ० ० ०

भजन न० ६२

प्रभात आव पोशनूलो वन,
सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन

न्यँदर मो त्राव अथ वखतस् सत्यायुग ब्यूठ मुत छुह तखतस्,
मँगुन इय छय च़ मंग वुन्यक्यन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१।

त्रेतायुग द्वापर कलियुग-तिहुन्द स्वामी छुह सत्यायुग,
अमिस निश फल बन्यम् वुन्य-क्यन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न करमन ।२।

मंग्यस् युस यिय दिवान् तस तिय अमिस सूति आसि शिवजी
गुडन्य बोज़ान-तुता भक्त्यन, सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।३।

शुँगिथ युस रोज़िह अथ वखतस-दियस आराम ब्ययि मोह-मस,
तिमन कति छुय जन्मन छ्यन सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।४।

करि युस न्यँदरि वुन्यक्यन नाश-अछव वुछि आत्म-सूर्युक गाश,
बन्यस अदह साध सम्बन्धन् सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।५।

ग्यवान् कस्तूर बागन मंज़्-करान लीला वनन् छि संज़
परान श्रीराम रुघनन्दन् सुन्दर-व'नी प्रसन्न कर म्न ।६।

छुह बुल बुल बोलि मंज़ दिथ ताल-ग्यवान गोविन्द हे गोपाल,
दपान जीवन छुह वुज़नावन् सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।७।

समिथ लग्य परनि गोविन्द गूँ, कुकिल लजि वनन्य हे शम्भू
म्य ब्रोंठ कर बूलि पोशनूलन, सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।८।

पनन्य सुमरन फिरनि द्रामुत-दुहस ओसुस न अथि आमुत
तवय् द्राव् सुलि रटनि वुन्य क्यून्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।९।

छह वुन्य क्यन् देव लोकन मंज़ करान पूज़ायि वननय मंज़
यियय् नय् पछ़ दिह कन् वुन्यक्यन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन।१०।

व़ज़ान सेतार मुरली नय्-परान शेव शेव शम्भू जय
यिहय व'ऽनी छह वनान् देवगण-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।११।

मन्दछ मह यिय नय-च़्य बूज़िथ यिय्-शरण गच्छ़ परम शिवस च़य,
परन् प्यस़ अरविन्द च़रनन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१२।

च़ह-आलुस त्राव-गछ़ हुश्यार-बनख धर्मचि सभायि मुखतार,
करख रुत भूग मंज़ सुरगन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१३।

फुलनि लजि वुन्य-संगरमालय-ज़गत् प्रज़लान छु कमि हालय,
सुन्दरमन्दर-छुह क्याह ज़ोतन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१४।

हतो ज़ीवो इथिस आनस-गुमुत छुक न्यन्दरि अज्ञानस
यिह आलुस छुय इमन् जन्दन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१५।

उद्योगुक् जाम नलिय छुन्-सपुन चेर फेर होशस़ कुन,
उदय ह्योत् करुन् वोन्य सूरयन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१६।

मचर धर्म लरि कर्मुक् बर्-ज्ञान प्रकाश ग्वड सरकर।
प्रेयमह सति अदह चह कर-च्यनतन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१७।

पंचनाग रादह मंजह श्राण-सतचि म्यचि सूति नावुन्-पान,
वंन्दुन-गछि कल गुर पादन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१८।

नवन नदियन उद्योगुक ज़ल-तिमन आगुर छुह मन यारबल,
सुज़ल बगरान तिमन नदियन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।१९।

न्यन्दर-ज़ीवस छुह बुडसंहार-करान् छुस कार निश बेकार,
फरान छुस चूर, छुस मोहन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२०।

स्वप्नस् मंज़ बनान् राज़ाह-छिह लक्ष्मी दाय इस्तादह
हुश्यार यलि गुव बन्योव निर्धन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२१।

इत्थय प'ठिन समय सुप्नाह-सुह रातुक जशनह अज़ बन्य माह,
अज़्युक माह बनि पगाह सुबहन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२२।

छः हत बंद रंग दुहस बदलान्-छह असि मूर्ख मा क्यँह ज़ानान्,
अपुज़ करि करि बरान चन्दन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२३।

शुँगिथ युस रोज़ि दुपहरस तान्य-वनान् छस अस स्यठा कर्मवान्
सु छुई चण्डाल बनान्-ब्राह्मुन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन् ।२४।

इह ब्राह्मन् ज़नम सुलि सुरिज़्यह-मरन ब्रोंठय् ज़िंदय मरि ज़्येह
बनिय छयन् अदह अपराधन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२५।

छुह ज़ीवस ज़न्म मंज़ व्यस्तार'दियस अदह-भव सर मंज़तार
करनसीव पादनय् सन्तन्-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२६।

मूर्ख युस आसि क्यँह ज़्याद हन-न्यन्दरि मंज़ प्ययि पुश ह्युव् ज़न्
सु कथ प'ठि वुथि प्रभात समयन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२७।

करुन अभ्यास सुलि वुथनस-बे ह्यासी रोज़िह व्यवहारस्
अभ्यासी बन आनन्दगण-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२८।

छि भक्ति रात्रोद्यन-म्य-गछि रोज़न सतिच सुमरन्
तवय द्यव बनि जन्मन् छ्यन्। सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।२६।

हतो-मन पोशनूलो-बोज़, रटित वन हर गोशस् रोज़
सदा गोविन्द गोवर्धन-सुन्दर व'नी प्रसन्न कर मन ।३०।

० ० ० ०

भजन न० ६३

पंचस्तवि:

आसय शरण च्यय पादन विनय किञ नमिथय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च्यय
व्याकुलतायि मंज़ ब'जि आपदायि मंज़
गृह पीडायि मंज़ माता रछतम च्यय

१ पाद चिञ्य सुन्दर आनन्द दायक
इन्द्राजन त्राव यथ मुक्तमाल
यभ्य सूत्य ज़ीर दिचूथ महिशासुरसय
क्षन मात्रस मन्ज वोत सु पाताल
सुय रोञ्य पाद चोन रूज़ितन म्य हृदयस
युथ ब अम्बिकाय बोज श्रोणि श्रोणि ताल
सुय मनोहर पाद बनितन म्यं हेतु
जय जय कारुक म्ये हावितन कमाल ।।आसय०।।

२ सरस्वती त्रिपोर सोन्दरी ज़गतमाता
भवनेश्वरी छक आसवन्य च्यय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य चन्द्रम कुमार

विष्णु गणेश छुय पूजान च़्यय
अन्दर न्यबर वातिथ त्रिभुभवनस सा'रिसय
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम वातिनय च़्यय ।।आसय०।।

३ यमि सुन्द प्रभाव छुय हद रो'सत आसवुन
भगवान त शेषनाग छिन वनिथ ह्यकान
ब्रह्मा त शंकर तिम ति छिय हा'रिथय
चाञि ताकतुक महिमा न ज़ानान
सोय चण्डी दीवी रछतन म्य
यो'स सा'रिसय ज़गतम छि पालान
दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यह'य ज़गतमाता
यमि सूत्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान ।।आसय०।।

४ ही दीवी छक च़ ञ्यम्बक पत्नी
च़्यय वनान सती च़्यय पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ माता भगवती
च़्यय वर दिवान छख च़ मृडानी
च़्यय त्रिपोर सोन्दरी च्यय रुद्राणी
च़्यय भयानक रूप च़्यय शरवरी
च़्यय चंडी छक च़्यय त्रिशूल धाराणी
च़्यय कला कालस नाश करानी ।।आसय०।।

५ ही दीवी चान्नि दर्शनुक म्य अभिलाष
प्रथ विज़ि नेत्रन मंज़ म्य रूज़ितन
चाञ्य गुण बोज़नुक तमन्ना म्य आस्यतन
प्रथ विज़ि रूज़ितन म्यान्यन कनन
चा'ञ्य नाम स्मरण च़्यतस मज़ म्य गरि गरि
चा'ञ्य पादय पूज़ा म्यान्यन अथन
चा'ञ्य कीर्तन कर वन्य रूज़ितन वाणी
उपासना चा'न्य मत कम म्य गछ़ितन ।।आसय०।।

६ ही मूढः क्याजि छुरव बे फायदः तप किन्य
पननिस शरीरस तकलीफ दिवान
यज्ञ किञ दान किञ बजि दक्षिनाई किञ
क्याजि छुक घर पनुन खाऽली करान
गछ शरण माजि शारिकाई प्राव च भक्ति
ह्यि करूण तसुन्दुय पाद सेवन
अद फुलमत्य पम्पोश नेत्रव सोस
लक्ष्मी च्य ब्रोंठ-ब्रोंठ ह्यियि दोरुण ।।आसय०।।

७ युस पुरूष अकि लटि करि च्यय कुन प्रणाम
तसन्ज़ि ख़ावि प्यठ छु इन्द्राज नमान
युस पुरुष करान आसि माता चा'न्य पूज़ा
पूज़ान तस छि सा'री दीवता
युस पुरुष करान आसि माता चान्य स्तुता
तमि सन्ज़ अस्तुतिः छि दीवता करान
युस पुरुष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्ग चि अछ़ रछ़ तस छि स्मराण ।।आसय०।।

८ कम सना दुःख छि तिम ही दुखन गालवुन्य
यिम गलन न चाञे स्मरणि सू'त्य
को'स छि नेकनामी यो'स कुलस खारवु'न्य
योस न बनि चाञे स्तुतायि सू'त्य
कोस को'स छि सिद्धि ही सिद्धिदात्री
यो'स न प्राप्त सपदि चाञे पूज़ायि सू'त्य
कम कम छि तिम यूग ही ज़गमाता
यिम न स्यद्ध बनन चाञि चिन्तम सू'त्य ।।आसय०।।

९ माज्य भवान्य लक्ष्मी वश करनस प्यठ
पादूच गर्द चाञ्य छि ताकत सोस
चानि प्रणाम विजि लगि यिमन ललाटस

पादय गदई चाञ्य बड़ि निशान सोस
सुय पादच गर्द गति दुर अक्षर तस
जगतस मन्ज बनि सु जय कार सुस ।।आसय०।।

१० मतलब छक दिवान दुश्मनन च गालान
आपदायन छक नाश करान
आधियन जालान व्याधियन शमुरावान
सुख त सम्पदा छक च व्यस्तारान
अन्दररिम दुःख त दा'द्य जीवस च्यय गालान
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सोरान
तिम अद कमित पापव निशि छिन मो'कलान
यिम सदा च्यय कुन गुलि गंडिथ छि रोज़ान ।।आसय०।।

११ ही दुर्गे चाञ्य स्मरणि ज़ीवस
सा'री भय छि नाश सपदान
वा'र पा'ठ यलि करय बुँ चा'न्य स्मरण
त्यलि छक ज्ञानच वथ हावान
दारिद्र भाव ब्ययि कठिन दो':ख त दा'द्य
च्यय रो'स्त कुस छम म्य दूर करान
उपकार छक करान तिमन सा'रिनय ज़ीवन
यिम सदा च्यय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान ।।आसय०।।

१२ मूढ छुस बअ दुखवअय सूअत्यन बरिथ छुस
बुज रअकि दूष किन्य खोचान छुस
सामर्थ रुस छुस 'निर्बल त कीवल
आसरस चअनिस थफ करथि छुस
ही देवी जल बनाव म्य त्युथ
युथ बुँ प्रावै सारिवुय खोतह'उत्तम बोर
त्राविथ छुनह बुँ दुःख मार्ग सारी
रोजहा बुँ चाने चरणन लोर ।।आसय०।।

१३ तोवमुत सुन जन चू चमकान त्रिपुराई
शुद्ध कर मन म्यि पापः खिल म्यानि लोन
संसार रुपि जेलस मन्ज़ छुस बुँ।
कामनाई भेडयन हुन्द छुमम्यि बोर
चानि स्मरनि किन जलद् जदल् छयनन म्य बेडि।
यलि आसि आरतिस म्यि अनुग्रह चोन ! ।।आसय०।।

१४ मन्त्र त यन्त्र छुस न केह ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चोन महिमा
आवाहन त ध्यान छुस न केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चानी तुताः
मधुरायि चानी माज्य छुस न केंह ति ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चोन वलीपन
बोड हिश युक्ती म्याज छुस ब ज़ानान
च्य पत पत पक़ित दुःखन नाश सपदान ।।आसय०।।

१५ ही माता प्रथ्वी प्पठ सिठाः च्य सन्तान
तिमन मञ्ज बुँ योत छुसय नादान
छख म्य त्रावान माता छुन च्यि ज़ाजिय़
ही पार्वती कोनः छख विचारान
कुपत्र छि जगतस मञ्ज पै'द सपदान
माता कु माता जांह ति छिनः बनान ।।आसय०।।

१६ ही जगत माता चान्य चरण सीवा
न करुम पथकुन न विन्कयन करान,
चानि बापथ खर्च कुनि करुम न अज ताम
बुनकिन ति धन च्यं पत दुस न खर्चान
तोति छख चूय सु माता यस छु
म्योन हद रुस्त मुहोबत त
युसः छि म्यि गरि गरि रछान
कुपुत्र छि मजगतस मन्ज पैद.
सपदान माता कुमाता जांह ति छन. बनान ।।आसय०।।

१७ ही शब्द रुपी निर्ममल स्वरूपी
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दी
कर यथा शक्ती म्ेंय चान्य पादि पूजा
कर स्वीकार ही परमीश्वरी ।।आसय०।।

१८ रूज्यतन सुखी माज सादक सारी,
यिम दोष्ट आसन तिम सेदितन
शिरूप अवस्था मेति माज्य बन्यतन
गोर दीव सदा मेप्यठ प्रसन्न रूज्यतन ।।आसय०।।

१९ चानि दर्शन पाप साऽरी छि गलान्
चानि ज़प मृत्यू छु नाश सपदान
पूज़ायि किन्य चोन महिमा ग्यवन किन्य
ज़ीवस दोःख त दअद दूर सपदान ।।आसय०।।

२० नमस्कार छुस करान योमिस केशस मंज़ च्ये
चंन्दरम प्रज़लान रात्रो द्यन।
सम्सार दोखन छख न्यवारान चय
अमृत नदी हन्दि प्रवाह सत्य ज़न ।।आसय०।।

२१ मन्त्रहीन आसिथ क्रियाहीन आसिथ
विधिहीन आसिथ यि केंछा प्रोवुम
तथ सारियसय ही परमेश्वरी चय
कृपायि किन्य आरतिस में माज्ज बखशुम
आय शरण चे पादन विनयि किन छि नमिथिय
व्याकुल तायि मन्ज़ राऽगिन्या रक्षतम चय।

——o——

भजन न० ६४

फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो ।
लालो अज़ बलो माल्युन म्योन ।।

१ आरवल आर कुंच़ गयि. कमि हालो
च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छस
यच़ काल गव वुञ प्रार कूत कालो । लालो०

२ यमबरज़ल लजमच़ भुमवरनि जालो
प्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुयमु लालो । लालो०

३ माय चानि सुलि विलि फोज़ि ही मालो
ल'यि लोस इ.य कर दिय दुर्शन
द्रिय चानि छम वुञ यूत नो ब. च़ालो । लालो०

४ रोश रोश करहै पोषन मालो
रोशि मति गमोय ना गोशन म्योन
रोशि मा पोषनूल दोह गछि वोबालो । लालो०

५ आदनुक याद पाव बाद. मो डालो
नाद लोय कुकिलव गीविन्द गू
आदन बाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो । लालो०

६ बा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनन्य ग्राय मारान
का'लि मा रा.वव़ कस क्या मलालो । लालो०

७ साकया प्याल चाव माला मालो
युथ न. स. बाकी रोज़ी ग्राव
मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो । लालो०

८ सास मंज खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
भासकर सास छुय ना'ली नालो । लालो०

० ० ० ०

भजन न० ६५

ब्यल ता'य मादल व्यन. गुलाब पंपोश. दस्ता'य ।
पूज़ादि लागस परम. शिवस त. शिनाथस्ता'य ।।

१ जटा मुकटा. प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देविये त. देवता विष्णु ब्रह्म छिस दस्तबस्ता'य
भक्ति भावुक जय जयकार आ'सिन तस 'ता'य पू०

२ दया सागर. लोल विज़यायि कोरनस मस्ता'य
हा पोश मते होश ड'लिम.ति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ'लरावान सारे रोज़ि कस ता'य पू०

३ पंपोश पादव सूति इतम अस्ता'य अस्ता'य
चरणान बुँ वंदै जूव जान ह्यथ वांलिज वस ता'य
राग चानि सू.तिन पोत्र वुज़्यम नाग.रादस ता.य पू०

४ पा'र्य पा'र्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ता'य
दर्शन चान्युक छुम य'च लोल सू.ति हावस ता'य
टोठतम सदाशिव ज़गत ईश्वर छुस बेकस ता'य पू०

५ अमर नाथस नीलकंठस कल, वंदस ता'य
विचार सू तिन ''कृष्णस'' प्यठ आर इयिनस ता'र
यछि पछि सूतिन गछि अर्पण शिव भावस ता'य पू०

कीर्तन : जायति शिवा शिव जय जय जानकी राम ।
जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम।।

० ० ० ०

भजन न० ६६

बिल्व पूज़ा कर निष्कल

कल माला घर.स.य हर. कल. माला घर.स.य

क्षय करि सान्यन पापन नाश करि सान्यन शापन
जय गंगा धर.स.य हर.स.य शंकरस.य

ओम् शिव. शिव. शिव. शंभो।
ओम् हर. हर. महादेव ।।

१ सुय छु अज़र सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर
तस छि ज़ानन योगेश्वर आश्चर्युक आश्चर
ज्ञान गाश अनि योग. नेत्रन वुछनावि आश्चरस.य क्षय०

२ त्याग. वैराग. चित. सोस्त थावि करनावि ब्रह्म. विचार
सतचे वति पक ना'वित ज़ाननावि ब्रह्म.य सार
आत्मा. बोधुक ज़ल वुज़नावि ब्रह्म भावकिस सरस.य क्षय०

३. ह्यथ गछि देह. अभिमानस अज्ञानस गंडि लार
अच्युतचे स्थिरतायि सू.ति वत थावि ब्रह्म. आकार
तमि गुण ब्रह्मवित् साधन पादन अ'छि जरस.य क्षय०

४ संसार यश भ्रम मा'नित मन किनि थावि उदास
योग. ज्ञान ध्यान. सो.स्त थावि बस्तियि मंज़ वनवास
चिन्मात्र ओत मु'चरावि मंज़ क्षण. मात्र.स य क्षय०

५ अंत काल चि ज़ाल का'सित चित्त थाव.नावि निष्कल
च़ दुन च़'द्रम. काफूर ह्युव मो.ख सुय हावि शीतल
सानि पालन.चि आज्ञा दियि अभयस त वर.स य क्षय०

६ धर्म. ज़ोर दियि तोर मुच़रावनावि श्रद्धायि वर.स.य
ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शांति घर.स.य
कर्म. फलकुय बोर लो.च़रावि देह भ्रम किस खर.स.य क्षय०

७ सिर्यि ह्युव प्रत्यक्ष भासित नित्य सन्मुख आ'सित
सतचे वति पकना'वित अज्ञान. गट. का'सित
आत्म. बोधुक दीप ज़'लि थाव. नावि मंज़ मरस.य क्षय०

८ वन. का'च़ाह छय स्त्रियि पुत्र प्रिय अथ दपान माया ज़ाल
इथि ज़ाल. मंज़ डाल. दित कडि चट नावि मोह. जंजाल
अतलास वलनावि सन्यास.वृ'च् थावनावि मंज़ धर.स.य क्षय०

९ कर्म हीनस दुर्गत हरि द्रार्यद्रस करि नाश
पालना सा'ञ.य छस मटि गटि मंज़य अनि गाश
आर इयनस तारि ''कृष्ण''स यथ भव. सागरस.य क्षय०

० ० ० ०

भजन न० ६७

बंद कोर.नस बू. बाशे ज़गत.चि वाल. वाशे ।
मो.कलय चाञि आशे शिव नाथ. अविनाशे ।।

१ भाव. स.तिन इम'यो हर मुख. व'नि दिमयो
मोह. घटि ह.दि गाशे शिव०

२ कैलास कोह. छारत धारणायि ध्यान धारत
सत् चित् आकाशे शिव

३ ज़प. शबनम धारे पपि ब्योल तप. वारे
कांह फोल गछि न. हाशे शिव०

४ शंभु नाथ. साधय आवाहन. नादै
साञि बोज़ शुर्य भाषे शिव०

५ तार हिम मोह. वावस मायायि द'रियावस
कड दुख. नावि पाशे शिव०

६ संसार.के सरय बो हर नाव.स.ति तरै बो
काम संकट विनाशे शिव०

७ कृष्णस आप चा'ञि बख्शुस पाप प्रा'नी
शापन कर च़. नाशे शिव०

० ० ० ०

भजन न० ६८

ब ज़ाअरी गोश थावतम ही भवानी
च्य रोस्तुय रछवुन छुय काँह न म्योनय।।
च्य दीवी सर वन्दय शेरस त पादन।
च माता गोश थावत्म फरियादन।।
छु चंचल मन म्य गोमुत केन्च़काला।
बचुन मुशिकल यिवान छुम अमि हालय।।
दवाये दर्द दीवी कर म्य पानय।
तबीबन हन्ज़ तबाबत छम ब्हानय।।
च्यन्य दअदिस म्य वातरव छम्नअ काँह ब्रान्थः।
दिलस छुम राग चोनय दोह त रात।।
बूँ छुस चअनिस भर तल हुन्य सअन्ध पअठ्य।
म्यअ छमना चअन्यि छयअटि लुकमय स्यठा टअठ्य।।
दया युदवय करख मअज्य क्याह गछी कम।
च छख पानय बअ कुस छुस कासतम गम।।
च्य निश युस लोल ओश त्रावि दारि दारि।
तमिस छख पान हावान ब्रोन्ठ चारे।।
सतन बवनन् हिंज़ छख आरि शक्ति।
शरण आमुत छुस्य व्यन दी म्य मुक्ती।।
सु'री युस नाव च्योन गोड़िनियथ।
सु गच्छना शेव लोकस क्या छि बअड कथ।
बूँ छुस प्योमत पथ अथ रूट करखना।
म्य दिख दर्शुन शुभ वर्शुन करखना।
बूँ छुस आन'ज़ाञ राऽगिन्या करतम गट् दूर।
दितम शन्ति कु'ठ्यन ताकत अच्छन नूर।।
मेय रुटमय दामनय चो'न सारी वान्से।
च्य रुसतिय पत़य लारान छुस न क'न्से।।
हेमथ खोनिय मंज़ ठोकुर गोड़ दिमयना।

छल्य दोद् खउर चरण अमृत चमयना।।
म्य करिमय रअत रातस वील त् ज़ार।
बूँ छुसनय भक्त च्योनय यीतनय आर।।
कलम तुल कर्मलीखा म्यअन्य नव लेख।
ललाटस यथ म्य हितकारअक़ य अछर लेख।।
वुछख यिम हअल्य अछर तिम नहाव नावतम।
छिम यिम स्यद तिम ति सोबूत थावतम।।
छि यिम पअन्चय अछर लेखन्य न ज्यादय।
गुड़न्य मअज़्य दूर करतम भूमि प्यठ व्याध।।
दुयुम मअज्य शत्रु कांह पोरुन गुछ़म ना।
असर मारिथ त्रयुम रोशुन गुछम ना।।
छि चूरिम कथ यहय म्यअनिस मनस मंज़।
रछुम पनन्यन पादन तल छुम गोमुत क्रंज़।।
यि प'च्युम प्राण म्योन लारान पतय छुय।
शुभ दर्शुन अमृत वर्शुन करुम चअय।।
च्य छुय वोनमुत ब छस बोज़ान तिहन्दय ज़ार।
यमिस नय आसि वननस कां'सि निश वार।।
खबर छा, कोन छख अद म्योन बोज़ान।
गयम मा ज़्यव म्य कअज्य तव छख न बोज़ान।।
च्य कथसना जाय छख राऽगिन्या नख्बर नर।
बूँ छुस सनताप सीत् दोदमुत मअ कर चेर।।
च्यनिश वअतिथ गच्छान छः कांह ति महरूम।
पनुन अथ ड़ालतम छुस ना बअ मासूम।।
म्य स्नचयथ पननि वन्सें केंह करुम नः।
दितम दर्शुन अघ्य म्अज केंह गोछिमनेय।।
नियोज़ोनज़ीर म्यज क्या बअ थावय।
पनुन अवहाल योत वसिथ पानय् बायव।।
मंगुन छु नय तगान बोजुन तगान छुय।
लकुट शुर माजि यिथ पअठय द्वद मंगान छुय।।

पराकन्दह छुसय चअनिस बरस तल।
दिलक्य मुशिकल म्य राऽगिन्या करतम अज़ हल।।
बअ युदवे म्अज ज़ां चीर वातय।
च मत् म'शरावम् कुनि सातय।।।
दया द्रष्टी मय करत्य राऽगिन्या भवानी।
च छखना आसवञ त्रयलूक साऽनी।।
म्य छम विनती कुनी वत्य ही भवानी।
बअ रटहय हृदयस मंज़ पाद च्यअनी।।
बअ करहय लोल अशि सूत्य यिमन श्रान।
छलय वथरय तअ वथरावय पनुन प्राण।।
करान रोज़हय बअ न्यथ सुमरण यि च्यनी।
सुरान रोज़ह दुहय शिव शिव भवानी।।
यह अय विनती म्य राऽगिन्या करत मन्जूर।
दितम राऽगिन्या परम सुःख करतम दोखं दूर।।
कुलफ यिथ पाठय़ छि मुचरान कादखानन।
ग़छान ब्योन ब्योन छि तिम पनन्यन मकानन।।
तिथय पाठय गम ंज करतम मे आज़ाद।
छुसय फर्ययाध आमुत बोज़तम ज़ार।।

--o-

भजन न० ६६

भेद. दष्टि सा'ञ हार पननि कुञर.चि द्र.य च्य छै।

१ सत. मुख. अवतार धार मो.ह भ्रमुक दैत्य मार
भव.सागरस कर म्य पार पननी०

२ चारिरस मंज पांच दोह इन.त. गछनं दित म्य छोह
युथ न. अस्थिर. जान सार पननी०

३ नश.स.य मंज़ बुद्ध न'शित युन गछुन गछयं म.शित
कर नावुम सत् विचार पननी०

४ ध्यान शम् दम् धर्म दान तप ज़प ह्यथ योग ज्ञान
कर दया केंछा म्य यार पननी०

५ मूर्ख. बोज. सू.ति रोत दोह छिम समेम.ति पाप. कोह
शारस.य ज़न गंडत. नार पननी०

६ इयतनै वो.ञ म्योन आर वुछत. म्योनुय ठग. कार
अनुग्रहकिय लदत. द्यार पननि०

७ आसि यो.दवै गाट. खार क.नोन इयस न. हार
दिम ज्ञानुक गाट.जार पननि०

८ छुस ब. मदुक खान.दार सा'र्य छिम गर्ज़कि म्य यार
कर.नाव निष्काम. कार पनिन०

९ छुस ऋणन हुंद कर्ज़दार मत. थावतं पत. लार
लो.च़रावतं क़र्म भार पनिन०

१० नाव छुय संसार. सार भव.सरस दिम म्य तार
पत. नितम शोभिदार पननि०

११ त्रा'वित गोम लो.कचार यावन ओस अंधकार
रछ बुडऽस छुस नाबकार पननि०

१२ प्यव म्य कर्मुक कुल छ'नित चो.ल म्य चि़त्त बुलबुल वुछित
हाव. नो.न योगुक बहार पननि०

१३ खो.ट छु म्योनुय व्यवहार त्रावनस अत छुम न. वार
थव म्य निर्मल निर्विकार पननि०

१४ 'कृष्णा' करनाव सत विचार थो.द छु चोनुय मोक्ष द्वार
ज़न नभस कुन रेह म्य खार पननि०

० ० ० ०

भजन न० १००

भ्रम छु संसार शम त. जीवो दम म. कर कांह खा'लिये ।
करत. शम दम सो.रत सोऽहं आसि गछ़नुय का'लिये ।।

१ इछ छय शोभान ओबरस य मज़ वुज़मला हाय त्युथ छु आय
आयि गयि कू.ति काल हारन शीन ज़न तिम ग.लिये०

२ बाज़िगर सं.ज़य यि बा'ज़्याह सोर संसार ज़ानतन
मय च्य चोमुत मोहकुय छुय छय च्य कमिचिय चा'लिये०

३ रूदि ना य'ति राज़ ता'य रक रूदि ना य'ति शूरवीर
अथ मूरान ख्यत त. अफसोस कु.त गयि धन वा'लिये०

४ 'नील कठं' बन शरण सत्वरस चरणन मन. किञ
युन त. गछनुय तस सु माया दाम यस गव ना'लिये

० ० ० ०

भजन न० १०१

१ भूल बाल. बालकन सू. ति खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
जान करनाव तम पान परज़ नाव तम
सुधि वान्यन पाठ्य हाव तम रूप ।।

२ कठिने भवसर छांठ वायनावतम
मुह पोञ वोतुम हटिस.य ताञ
लटिस.य वृषभस थप करनाव तम सुधि०

३ थज़रै प्यठ-अख नज़रा त्रावतम
शेशरम नाग म्य थावतम नेब
वनि इत. अनिरकि सनिरै म. रावतम सुधि०

४ ब्रह्मण जन्म दिथ मत. मन्दछावतम
नभ प्यठ बुन मत. दावतम दभ
अमर नाथ अमर बनाव तम सुधि०

५ दासन हुन्द दासा गंजराव तम
मत मशि रावतम पननी ज़ान
यति छुख पाने तोत वात नावतम सुधि०

६ अज़पा जप यज्ञ ज्योत प्रज़लावतम
होद शीश ज़न मुचरावतम म्य
ही महेश छति केश मत दिशरावतम सुधि०

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम
नित्य बास नावतम सोहम सू
ॐ शेव शम्भू शब्द शुभरावतम सुधि०

८ मुह मायायि सू.ति मत. तंबलाव तम
सत्ची कथ पावनाव तम याद
चित् कुचि चेनुन निथ चेन. नावतम सुधि०

९ सत् के निर्णय पवि पक. नावतम
दय पनने नय हावतम वथ
नाब छुम कृष्ण शिव भाव बढरावतम सुधि०

० ० ० ०

भजन न० १०२

भुवनेश्वरी ध्यान

वराड कुशौ पाशम भीति मुद्रा करै वहिन्ती कमला सनस्थाम।।
बालार्क कोटि प्रतिमां त्रिनेत्रां भजेह माध्यां भुवनेश्वरी ताम्।।
उद्यदिन द्युति मिन्दु किरीटां तुङगकुचां नयन त्रय युक्ताम्।।

स्मेर मुखीं वरदाङ कुषाशां भीति करां प्रभजे भुवने शीम्।।

भुवनेश्वरी अनुगह कर

१ बन्द छुस चन्दपोरि कर हय बन्दगी-
माज्य भवनैश्वेरी अनुग्रह कर।।

२ जाल वोलमत दम संसार छलगरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

३ दर्शन चानिच छम'लादन
पम्पोशि पादन वन्दहय प्राण
मौनि फलय माल थवहय कर करी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

४ उलदन्ध दन्ध बो वेरिचानि आसय
प्रभात दासय हयथ चोन नावा
गुपकारय बैयि निशात वोतुस यिशबरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

५ छरव चोतुर बोज़ मोज भक्तयन पालान
पाप छरव गालान बागरावान सौखा
चानि कृपायि भवसर कमकम तेरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

६ चय सर्वरूपी चय सर्व शक्ति
ही भय हरन्नी चेय नमस्कार
राऽगिन्या दुर्गा त्रय अष्ट सैदी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

७ आंकाशी चय चन्डिका दीवी
पाताली चय भवनैश्वरी
मृत्यु लूकी छरव चय जया दीवी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

८ पादर सह चोन वाहन शबतन
रूप चोन लूबवुन शान्त सोखकर
आरत्य आमुत्य यिन कडरव मुर्य छरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

९ कर्तव्य मशराव्य नेति नेम कर्म उल्य
धर्म उल्य तन छैट मन आस छयाट
सान्यन नेत्रन पान्य पान कर शौंदी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

१० मुह् अनिगाटि तय अन्धि हरि नालवोल
आचर व्यचार डोले लूभन मार्य
श्रान ध्यान स्मरणा जाहं मा असि करी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

११ सायिल वनि तय चय वनित क्योह
माज्य दीवी चय छरव त्रिपोर सोन्दरी
माज्य भवनौश्वरी अनुग्रह कर।।

--o--

भजन न० १०३

१ मधु कैटभ मारवनि युद्ध वेष धारवनि ।
शुद्ध शांन दोद चूर. गूर.गूर. करयो ।।

२ शहर शहर. गाम गाम. राम. राम. परयो
दक्षणा उत्तर पछम पूर. गूर०

३ छिय बसंत रग जाम इन. चानि फोज़म शाम.
ल'जि-लजि मूर. मूर. गूर०

४ कर हृषी केश. राग द्वेषकिस शीशस
खजि.खजि चूर.चूर. गूर०

५ बंबूर. गीता छय गोपियि गावान
स्वर्ग. मंडल.चि हूर गूर०

६ सिर्यि दर्शन दित. मोह गटि मंज़ नित
इत. नूर.कि नूर गूर०

७ होश अ'लिशि पोश.किस गोशस प्यठ वेह
श्याम. रंग बंबूर. गूर०

८ तुलमी छावय हियि तन नावै
फ'लिल. मुश्क. काफूर. गूर०

९ मन.नकि तेलन. निधि ध्यासन टोठ
श्रवण.कि कन. दूर. गूर०

१० राज़ योग राज़ बोज़ सा'नि ताज़ ताज़ स्वर
प्रेम. साज. संतूर. गूर०

११ देह. अभि मानुक कुल ह्ययि छननुय
तीव्र. वैराग. सूर. गूर०

१२ हे हरिहर. ! पाप पाप हर "कृष्णस" कर
अनुग्रह पूर. पूर. गूर०

० ० ० ०

भजन न० १०४

मुनि छुम मेल.हा पननिस यारस,
प्रारस अ.शि मुकाम।

१ व'नि म्य दिचाम यथ भव. सरस,
वन.कस वनि नो आम ।
श्रण. श्रण. छ्यन नो तसं.दिन कारण प्रारस०

२ बुलबुल मुशतक छुय गुल ज़ारन,
ज़ाह ति नो तमन्ना द्वास।
का लि मा खज़ान लगि इथ बहारस प्रारस०

३ अ'दरी व'नि द्यू वो.न्दि मंज़ यारस,
मंदिरस अन्दर च़ाम ।
सौदा भ्यो.न भ्यो.न छु साहूकारस प्रारस०

४ दुःख छुम पूशुस न. लानिनिस कारस,
नत. क्याह लेखन, आम
ती बो वनहस प्ययि ना पायस प्रारस०

५ युन त. गछुन छुय प्रथ ज़ीव. द्वारस,
इन. इन. मुस हो च़ाम ।
सर. कोरथ.य नो इथ स'सारस, प्रारस०

६ सुय नाव स.ति छुम मे नाव तारस,
यमि नाव. सांपनुस राम ।
'वासुदेव' लयि रोज त.थि दीदारस प्रारस०

० ० ० ०

भजन न० १०५

१ मनि मंज़ ललवथ कन्हैया लालो ।
भय हर बाल. गोपालो वे ।।

२ भय. मज कडतम् दयि अकालो
रक्षपाल. हो कृपालो वे
प्रेम. रस. भरतम् मनकुय प्यालो भय०

३ गोपियन सु.तिन मारव.नि छ़ालो
दुख हर, भक्त रक्षपालो वे
ज़न्म गम कास्तम् कठ.नि कालो भय०

४ दूर्यन चोनुय कोताह च़ालो
वलनै आस ज़न्म ज़ालो वे
द्यान. दुकारि तथ बनि परनालो भय०

५ खटतं मत. पान रटथो नालो
आस्तम् च़. ना'ली नालो वे
लूस्मुत प्रार. वोञ कोताह कालो भय०

६ हारान वुछत. छुस अशञे च़ालो
लालो ! छंति गा'म लालो वे
बालि आम बुज़र ता'य क'हि संभालो भय०

७ दोह आम सोरान छ'ति गा'म वालो
पलि केंह ति पोवुम न. मालो वे
अथ छीन त. न्यथा नोन छुस बे हालो भय०

८ यलि बनि संयोग आसि कुस कालो
दूय रोज़ि न. कुनि कालो वे
गुरु शब्द एकुत बनि नन्दलालो भय०

९ नय छुक आकाश नय पातालो
नय छुक जंगल त. बालो वे
वनि छुकन इवान आ'सित ना'ली नालो भय०

१० मन सर.कुय बन राज़ निरालो
'नीलकंठानि' छुय सालो वे
रछतम संकट यमि कलि कालो भय०

० ० ० ०

भजन न० १०६

१ मुझे राम से कोई मिला दे।
बिन लाठी का निकला अँधा-राह से कोई लगादे मुझे०

२ कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे वृंदावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
कोई कहे मिलते वन में
देख सकूँ में उनको मन में-ऐसी जोत जगादे मुझे०

भजन न० १०७

मेव. कनि मो.क्त. वो.थ चन्दन बागस
नागस प्यठ लो.ग हंस. दरबार ।
ज़ल. कनि अमृत नो.न द्राव नागस
बागस मंज़ च़ाव अट.हार ।।
(हंस. दरबार परम. हंस. दरबार)

१ बुद्ध क्या वाति अथ रागस त. त्यागस
वरणि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रुस्त क्या छु ती भु पूज़ि लागस नागस०

२ त्युथ दशहार कर तिथिस.य प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छि दह अवतार
का'मि द्वादशांतस पूज़ि लागस नागस०

३ नाम. रूप कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस
अस्ति भाती प्रिये रूप पत़ द्राव सार
शर्मन्दगी च़'जि मंद. वैरागस नागस०

४ प्रियम. कर्म. फलन.य यम. नियम द्रागस
प्राव.नावि अनुग्रह किय अंबार
तृप्तियि पंपोश फो.लि लल. त्रागस नागस०

५ होश. पोश फो.लि उद्योग. पोश. बागस
दास. भाव. किञ आस ख'दमतगांर
'कृष्णा' सेवा कर आत्म. रूप. आगस नागस०

० ० ० ०

भजन न० १०८

ऊँ गणेशाय नमः

महा गणेशा मिछय चानिय माय
नेत्ररन मंज करय जाय!
महा गणेशा आ.चर बोज
वलभा सहित सानि रोज़।

१ बुध मिन्य सेवाय द्राय
नेत्ररन मज़ करय बुँ जाय

२ यच काल वोतुम मि प्रारान
क्याज़ि छुकन् म्योन बोजान
वनतम छुयना परवाय
नेत्रकन मंज करय जाय

३ महा गणेशा बुठ खार नाव
वुलरस मंज कु रून वाव
युथ न आसिम ढूभन.च्य त्राय
नेत्ररन मंज करय जाय

४ परन पान मशरोव मंय
पान चिय पुशरोमय
भैरव करिय घरि आय
नेत्रनमंज करय बुँ जाय

५ अज तान्य असि अऽस शुनगिथ
मुह मायायि वलिथ।
कर स सोनय मुकलन पाय
नेत्ररन मंज करय ब. जाय।

६ गुलि गण्डि गण्डि अस छिय
सद्धि दिस असि च्य़
ब्रोंठ कुन कयासअ च्यान राय
नेत्ररण मंज करय ब जाय

७ पापन छि गुबराविमुत्य
शापव छि व्यस'रावमुत्त
निर्मल जल कडुम ग्राय
नेत्ररंण मंज करय जाय।

८ सारिनिय यि छु असि प्रिय
पानस कुय करस लय
धर्म किन्य योहय अभिप्राय
नेत्ररण मज करय जाय

९ सेवा छुस ब.करान
मुंगनस छुस न बहरान
वनतम छुयना परवाय
नेत्ररन मंज करय ब.जाय
नेत्ररन मंज करय ब जाय
जिगरस मंज करय ब जाय़

--o--

भजन न० १०६

शिव-शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव - शंकर शम्भो !

मन शु'द्ध बनि साक्षात् ननि
हनि हनि गटि मन्ज़ गाश
सुव्यचार ब्ययि श्रद्धायि पर- (शिव०)

प्रभातस अछ मन्दिरस
गंग-जल तन ना'विथ
ध्यान - धारणायि मनि - मन्ज़ सुर- (शिव०)

शिव नाथस गो'ड दि अशि - जल
शेरि लागुंस भाव - पोष
मन - प्राण वार तुता कर- (शिव०)

इन्द्रिय नैवेद्य स्वम्बराव
मन-त्राम'रि मन्ज़ थाव
देह दीप ज़ालिथ वार पर- (शिव०)

वास'नायि धूप थाव दज़वुन
विज्ञान - दीप व्रजवुन
व्यज़ - पूर्वक व्यज़ना कर- (शिव०)

सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव
शिव - अनुग्रह यि'थ प्राव
शिव - न्यथ सुर चलि ज़्यत मर
शिव - शंकर शम्भो ! (पं० जानकी नाथ कोल) "कमल"

--o--

भजन न० ११०

१ म्य सोंगो पान. दर्शुन चोन बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज राग चोनुय वनि सन्यमना शारिका दीवी।

२ म्य पियिना माज्य पायस मन, ब. करहय चात्र आराधन
म्य अन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यमना शारिका दीवी।

३ यि दिल म्योन ज़न छु क्रेन्खा लगित क्रेहज़र छु अथ प्यठ सख
अख,
अक्षर अथ पन.नि भक्ति हुन्द खनखना शारिका दीवी।

४ ब. छुसना क्रूर अज्ञा'नी, स्यठा मुरखा व. अभिमानी
म्य माता गाश ज्ञानुक सु'य अन्यमना शारिका दीवी।

५ लगान कोताह मधुर दुनिया, यि खा'ली आसवुन स्वप्ना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक न. न्यमना शारिका दीवी।

६ दिवात भ्रम आय मोह माया, दया करिना महा माया
म्य संसारच यि मोह माया छन्यमना शारिका दीवी।

७ ब. प्रेमी छुस तसुन्द अभिलाश, करिम ना माज़्य पूर्ण आश
उपाया भव.सरस तरनुक करिमना शारिका दीवी।

--o--

भजन न० १११

१ म्य दिवी थावतम गोश
बुँ लागय शेरि पंपोश
जगत माता चुँ मै रोश
बुँ लागय शेरि पंपोश

२ बुँ आवरिथ छुस निर्धन
स्यठा छम पापी तन
म्य नादन थावतम गोश। बुँ लागय...o

३ महादोवी शक्ती
बुँ छाँडान न मुक्ती
म्य दिम भक्ती हुन्द जोश। बुँ लागय...o

४ करै तन मन च्य अरपन
म्य रुजतन च्यान्न स्मरण
च छख म्यानी जिगर गोश। बुँ लागय...o

५ बुँ लागे ब्यल त मादल
रछख ना म्य पादन तल
म्य जगतुक कया छम बौश। बुँ लागय...o

६ बुँ वोलनस मायाये
कुरुम ज़नम म्य ज़ाये
थावेनस मुहन। बुँ मद होश। बुँ लागय...०

७ करान छख पापन नाश
म्य दिखना ज्ञान प्रकाश
मनस थावतम म्य सन्तोश। बुँ लागय...०

८ म्य प्रेमुक अमृत चाव
म्य यथ जाय दर्शुन हाव
च छख भक्त्यन हअन्ज़ जिगर गौश
बुँ लागय शेरि पंपोश

--०-

भजन न० ११२

मा'ज्य शारिकाय कर दया वर दया ही भवानी
कर दयायि हंज़ दष्टी सु. छि ब'ड मेहरबानी।

१ आय लारान चे निश योर कर्म खुरि बावा.नी
मत. वुछत. कर्मन कुन सारी छी पशेमानी ।०।

२ कुताम रोज़ि युन त. गछुन कुताम रोज़ि क्रेशुन त. वदुन
तार दिवान सारिन.य छख असि ति रोज तारानी ।०।

३ कुपुत्र छु माज़ि आसान मा'ज्य छन तस.ति रोशान
असि मगान चा'नी दया जगतच़ राज़ रानी ।०।

४ नखि छख डखि छख चई चेय सिव कांह ति छुन बियाख
दोह त. रात चोनुय फिरान अख अज़ाब रुहानी ।०।

५ ओश वसान चालि चाले मा'ज्य भवा.नी हावी दर्शुन
कंह ति छुन. तगान बोजुन कंह नय छी असि ज़ाननी ।०।

७ बूजमुत छु हलि मुशकिल वुन्य अस्य तवय आय योर
अख रछा करतय वुन्य गोर हिमालच राजि रअनी।।

८ अष्टा दश भुजा च छख जगतस बअग रअन्यी
अस्यति आमत्य छि डेडितल अनुग्रह छिय मंगअन्यी।।

९ अस्य आय चोन दरबार दारि ओश छुं वसअन्यी।।
कन थव बोज फरियाद नाद छि च्य लायअन्यी।।

१० पाप शाप कासतम चय बालतम यिम पाप सअरी
गीर कुर होस ब पापव कैंह नय छुस न जान अनी

११ लुकचारस मशिथ गोम बुजरस छुस स्वरान दय
काहं ति यति छा म्य ह्यू क्रन्जलि पोन्य सारअन्यी

१२ दासस दर्शुनि हाव सन्मुख रोज जगतस
लोल चानि दोह तय रात नाद छुसय लायअन्यी

१३ दास छुस दर इन्तिज़ार भवसागरस दिम तार
ल्यम्बि मंज पंपोश खार बोजतय चय म्याञ्ज़ारी
माज्य शारिकाय कर दया वर दया ही भवानी

--o-

भजन न० ११३

माज्य भवानय सथ छम मय चानी
वथ मय असलि च़ हावतम
कूत काला रोज़ बेज़ान
जानि हुन्द मस म्ये चावतम ।।माज्य०।।

बोजते फ्रयाद ज़ाऽरी
सोंजतम दाध्यन दवा
रोज़ तम हर दम मेहरबान
ज़ाह तिय परि मत पावतम ।।माज्य०।।

काहिली कम ही (मदीन) मती
वसवास निश थावतम म्ये दूर
वलवला जोशा तय अरमान
ना दिलस मन्ज़ त्रावतम ।।माज्य०।।

शबनमिक प्येठ आफताबऽस
कूत कालाकरय इन्तिज़ार
गोडनिचे अनिवारि पोशन सीत
सुलि वुज़नावतम ।।माज्य०।।

शकलि छुस इन्सान मगर
इन्सानियत निश बेखबर
हत्यम तम मत इमतिहान
यमि शकलि मत मन्दछावतम ।।माज्य०।।

इम सोखन पैदा करण
खलकन अन्दर उलफत तुलन
दूर यमि सीत गच्छ नफरत
ती वनुन हछिनावतम ।।माज्य०।।

दूर छुस प्योमित लुकव निश
छुम तवय महजूर नाम
तिम अगर दूरन मयनिश
चति दूर ज़ाह मत त्रावतम ।।माज्य०।।

माज्य भवानय सथ छम मय चानी
वथ मय असलिच़ हावतम
कूत काला रोज़ बेज़ान
जानि हुन्द मस म्ये चावतम ।।माज्य०।।

--o--

भजन न० ११४

माता आराधना

मा'ज्य भवानी सुँहस प्यठ सवार
वनतम च़ कोत दोरा'नी।
ठहराव कदम अख साथा
हाल म्योन गछ़तय बोज़ा'नी।।

यन प्यठ च़्य निशि मा'ज्य छ़नं ब गोस
तन वोतुम च़्य प्रारा'नी।
चानि दादि च़टिमय कोह त बाल
च़्य पथ ब गोस वा'ञ दिवा'नी।। माज्य०

ओसुस वुछान चाने वतन
लूसुस च़्य पथ बुँ छ़ारा'नी।
छाय चा'ञ्य प्ययम ना बुथि म्य मा'ज्य
ओसुस त'थ्य बूँ प्रारा'नी। मा'ज्य०

आशयि हंज़ गऽर तय पऽहर
ओसुस तथ्य बो गंज़रानी।
कर बनि म्य म्युल चोन, कर म्य हावख मोख
म्य बनि मेहरबानी।। माज्य०

चानि विरह कि नारुक म्य ज़्यत
जिगरस म्य ओसुम वुहानी।
कलि चानि सोर्य सोर्य को'र म्य सूर
अन्दरी गोम सो ज़ाला'नी।। माज्य०

यन द्रास च़्य छ़ांडनि पत त ब्रोंठ
छ़ायि चानि गोस गथ दिवानी।
सनि कुस च़्य रोस माज्य क्याह म्य गोम
म्या ओसुय म्य गुज़रानी।। माज्य०

चानि विहरकुय मा'ज्य अन्दऽर भार
ओसुस बो व्यतरावानी।
दुशवार म्य गोम दूर्यर यि चोन
माज्य ओसुस न चालानी।। मा'ज्य०

लो'लि मंज मा'ज्य पाद ह्यथ
सोज ओसुस बो वाया'नी।
गांगलि करिथ तथ्य सा'त्य बुँ पान
ओसुस बुँ द्यन कडाऽनी।। मा'ज्य०

विरह कि दोख दरियाव गोत
लग्य लग्य म्य तुँज परेशा'नी
विरह आवलन्य चा'ञ रो'टनस तल
ओसुस न तति वो'तली'नी।। माज्य०

चानि दादि व'द्य-व'द्य अछऽन लऽज म्य ज़न
खून ओसुस बो हारा'नी
चानि डेशन बापत बूँ मा'ज्य
पान ओसुस बूँ मारा'नी।। माज्य०

ला'गिथ स्यठा संगदिल च्य मा'ज्य
अमि मंज च्य क्या छुय नेरा'नी।
क्या यिय छा माजि हुंद स्वभाव
छा दूर शुरिस सो त्रावा'नी।। माज्य०

चाने ख्याल मा'ज्य चोन स्वरूप
ओसुस बुँ ठीकरावा'नी।
तथ कुन वुछ शेर करम
अज़ ता'ञ बुँ गोस द्यन कडा'नी।। माज्य०

वो'ञ गयोम मय मिलचार च्य सात्य
अड खोर च क्याजि ठहराऽनी
शोकसान बुँ आसय ब्रोंठ कुन
दक दिथ कोत छरव चलानी।। माज्य०

छुस वनान च़्य मा'ज्य गुदरुन पनुन
बूज़िथ च़ ढाल कोत दिवा'नी
दक ज़द बूँ छुस प्योमुत पथर
फ्रक-होत च़्य पथ लारा'नी। माज्य०

समया स्यठाह गोम मा'ज्य च़्य पथ
पऽ'क्य. पऽ'क्य. बो गास वो'ञ थका'नी।
वो'ञ च़्य रो'स अख क्षन यमि अपोर
ठहरिथ छुसय न केंह ह्यका'नी।। माज्य०

वो'ञ मुँ गछ़ म्य बालकस नज़रि दूर
ओरुत च़्य छुस बनाऽनी।
बेकस त बेबस छुस बुँ मा'ज्य
च़्यय रो'स छसय ब तम्बला'नी।। माज्य०

या रोज म्य सा'त्य सा'त्य नत म्य निम
तो'त तो'त यो'त च़ फेरानी।
पादन तल रठ म्य युथ च़्य सा'त्य
बति आस शोल मारानी।। माज्य०

अद च़ल्यम चानि विरहुक म्य नार
शेहजार गछ्यम म्य वाता'नी।
च़लनम दुःख त दाद्य दूर गछ़न
सर्व सुख रोज़य प्रावानी।। माज्य०

बटवारि न्यथ च़्य निश यिवान सराफ
आश्रम ह्यथ शरण यिवानी।

--o—

भजन न० ११५

१ यस छ हटि वासुक तस छु जटि पोञ ।
गो.सोञ हा'य गो सोञ हाय गो.सोञ हाय गो.सोञ।।

२ युस देव सर्व देवन हुद छु आद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हर मुख बर तल लायोस नाद
पादव त'लि छुस पकान सिंध वोञ गोसोञ०

३ युस थ्यकनुय छु देवियन त. देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसवुन छु मंज़ जीवन
प्राण घा'रियन क्युत छु संजीवन
सुय नंग नोन च्योन दियि गंग वोञ गोसोञ०

४ पूर्णयि सोस्ता छु नूर भ'रिथय
ब्रह्मांडन पालना करिथय
सुख मुख सू.ति छुय दुख ह'रिथय
वर-अभय सू.तिन छुय व'रिथय
य'मि सू.ति पानस न्युव सो.दि वोञ गोसोञ०

५ जन्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज़्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खोत पालवुन छुय
आत्म बोधुक रुद शांतियि शोञ गोसोञ०

६ प्रेम मास चावि म'शरावि हन हन
सत भावि नित थावि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि ज़ोतन तन
'कृष्णास' प्यठ त्रावि शांतियि शोञ गोसोञ०

o o o o--

भजन न० ११६

गज़ल

यार. संदे दादि दोदमुत दिल बहारस क्या करे ।
वाव योदवै सोंत कालुक आसि नारस क्या करे ।।

१ का'सि प्रारान दारि प्यठ युस वांसि हारे धारि ओ'श
आवशारुक तस हवस क्या शालमारस क्या करे

२ का'सि पलजुन का'सि हुँद ज़ेवर बनुन यस योछ न. ला'नि
सो.न बना'वितन सगि पारस तस विचारस क्या करे०

३ होश ड'जमच़ जोश व'ख़मच़ पोश. गहनस तोषि क्या
रोश यस च़ोल ओश त्रा'वित गोश्वारस क्या करे०

४ कालिदासस तालि क'ञ पत कलि वोनमुत गाटल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस गाटजारस क्या करे०

५ लोल मस ज़ाल्यं त. गाल्यम यस बुडित मा'लूम गव
भीम नशके त्राविहे मस चोन खुमारस क्या करे०

६ रंग हा'वित भ्रम दिवान ओस कहवचन खोट म्योन सो.न
अ'मि कोडुस अदर्युम खोचर नोन लोल नारस क्या करे०

७ डालि निम. क्या बाल यारस ओर त. शुद्ध पाथ्य न. दिल
छ़यनि मतिस यत दागदारस नाबकारस क्या करे०

८ ब्रोठ छुय चो.र क्रूठ मंज़िल गा'फिलो बस कर म. च़ेर
यस म'तिस माघस जिगर शेहल्यव न. हारस क्या करे०

० ० ० ०

भजन न० ११७

(श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न' मंज़ केंह श्लोक ।।)

१ रस पूर्ण परम सदा शिवह । सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह।।

२ दीन चा'नि नव निध अष्ट सिद्धह ज़ीवन ह'दि क्ररुणा निधह
गलि गलि अमृत इमव च्यवह सत्०

३ कुंभज सजना चा'ञ करह गागरि मंज़ इतम सागरह
ज़्यव दिम तिछ युथ चानि गीत ग्यवह सत्०

४ छय्ञमच् सो आशव पाशव सान आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव ! थ'वमै म्य आशवै सत्०

५ पानस पानै छु मेलनुय गिंदुना छ गिंदुन त. गेलनुय
सोन नेरि नार मंज़ गलि ज़वह स,त्०

६ देह दष्ट गलि च़लि अभिमान अद बनि सत् स्वरूप ज्ञान
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्धवह सत्०

७ युस इछ़ि सुय सुय तस इछ़े गछ़ यस सुय सुय तस गछ़
इछ़ि पछ़ि त'मिसय प्रारवाह सत्०

८ लोलय छु योर मुलवनुय लोलय छु और योर लववुनय
लोल सू.ति सुय लोल ललवह सत्०

९ केंह छुन लोल रुस्त आसवुन लोलय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश गट कासवह सत्०उ

१० लोल वीज़ बोञ बोवनै लोलय छु च़ोदाह भवनय
शोलवुन छु लोरुय लोलवह सत्०

११ लोभ सू.ति उलसन आयि ज़ग लोल सू.ति छम भ'रित पय
लोल परमानन्द प्राववह ता'य रग सत्०

१२ 'परमानन्द' बीज़ दय गत बो.य त्राव सा'र्य मत मो.च़ मत
कथ बोज़ नत. क्या यि क्रव क्रवह सत्०

० ० ० ०

भजन न० ११८

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गोपाल ।
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन लाल ।।

१ मेरा मन है जभुना जी वृत्तियां गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से माला माल
उसमें नहाओ खेल बनाओ बालकपन की चाल गोपी०

२ देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आंखें लाल
उसको पकड़ो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
इस सिंह आसन के ऊपर अपना आसन डाल गोपी०

३ हम तुम पर अर्पन करते हैं तम मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यार हो न्यारा हो अकाल
हमको मोह से मद भ्रम से दुख से गम से टाल गोपी०

४ क्या करे हमको मथुरा काशी गोकुल ब्रज गोपाल
साड़ी चित्त नगरी में बसिया तुम हो दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल गोपी०

५ हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया जाल
फकत तुम्हारा आसरा है देख हमारा हाल
कृष्ण' को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल गोपी०

० ० ० ०

भजन न० ११६

राम. लीला चा'ञियवनय श्याम. सुन्दर नारायणाय
तन. मनय अर्पण बनय श्याम. सुन्दर नारायणाय
निर्गुणाय निरञ्जनय श्याम. सुन्दर नारायणाय

१ चानि लोलुक छुम होल गोमुत
देह.किस ज़िसिस.य मंज़ ब. प्योमुत
वन. कस दुख म्य छुम क्षण क्षणय श्याम०

२ यमि योनिये छम ह'जि का'र.य
गोस. त्राव वो.ञ म्य छम को. सत्ता'र.य
मुख हाव दुख क्यन आस ह्यनय श्याम०

३ नट ब'नि ब'नि नाटक हा'विम
ईश. ! कम कम वेष बदला'विम
निन. आस ग'छि ग'छि इन. इनय श्याम०

४ कृतिस कालस वो'ञ बो प्रारय
वोज़तम आ'च'र ज़ार. पारय
आर इयिनय रघुन्न दनय श्याम०

५ यथ वेषस मंज़ मो.कलावुम
योगानन्दस मंज़ म्य सावृम
मोच़. आनन्द निर्बन्धनय श्याम०

६ नाश. स'स्तिस यथ संसारस
कमि बापत पत्त. पत्त लारस
अत. गत पठ च़टम पन. पनय श्याम०

७ कालस छन. करार क्षणस
ग्रास करान रातस त. दिनस
चानि दर्शन. अमर बनय श्याम०

८ कालस निश उपदान संसार.य
का'ली तथ बनान आहार.य
मंग. क्या तग. आस मरण. ज़्यनय श्याम०

९ भोगन मंज़ तृप्ती म्य न आये
युथ मृगिञन मृग तृष्णाये
अमृत चन.कुय छुम म्य विनय श्याम०

१० श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनञे ज़स्म. ब्रकान
रस रतुक तस हे रस गणाय श्याम०

११ कोमल पादि कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
कोत ब. च़लय च्य निशि रोज़ छ़यनय श्याम०

१२ सुख केवल चा'ञिय स्मुरण
सुख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्धन्द्ध. आनन्द गणय श्याम०

१३ 'ठाकुर' च़.य हृषी केशय
बुद्धि पर युस निश. चल राग. द्वेषय
सर्व आत्मा च़.य सनातनय श्याम०

० ० ० ०

भजन न० १२०

राथ ग;यि सा'रय प्रकाश नोन द्राव।
मा'ज भवान्य आ'रतिस म्य दर्शुन च़ हाव।
लूसस वुछान वुछान रा'त्य रातस,
ज़ागान रुदुस बो ये'थ्य सातस
कर सना वुछि बो' चानि मोखकुय प्रभाव।।

मा'ज्य भाव'न्य आरितिस म्य दर्शुन च हाव।।
प्रारान वोतुम स्यठा यचकाल,
मा'ज भावन्य योद छरव च दीन दयाल।
दासस म्य प्यठ थाव च अनुग्रेंह स्वभाव।।
मा'ज भवान्य आर'तिस म्य दर्शुन च हाव।।
गाशा आव चोपार सार्सय जगतस,
म्यय या'च गट छम अन्दर हृदयस।
गट, कास अन प्रकाश हृदय म्य फोलनाव।।
माज़ भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
कस वन च्य रोस माज कुस छु म्योनुय,
आशा वोमेद सथ डोख में चोनुय।
दित में भवसर तार, तार म्यान्य नाव।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।
भवसागरस मंज़ छुस बो फोटमुत,
थफ़ करुम नत यिर छुस सपुदमुत।
कड न्यबर म्य अमि मन्ज़ वोन्य म्य मोकलाव।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।
छुस अनाथ मा'ज म्योन यीतनय च्ये आर,
चानि दयाये बापथ छुस बुँ बेमार
मिसकीनस दया दृष्टी म्य त्राव।।
म'ाज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन चुँ हाव।।
छम म्य यन्द्रेय पननि करान छ्रट छ्रट
तंबलावान छम में वेषयन प्यठ।
सथ संगचे नावि वोन्य म्य बेहनावं।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
छुस मुसाफिर बो द्रामुत सफरस।
छुस दिवान कदम कदम बो यथ्य मज़िलस।।
वार, पा'ठय म्येन सफर अंद च वातनाव।।
मा'ज भवा'न्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।

नावि छुस बिहिथ भवसागरस,
पय छुमन, लग कोत त कथ तरफस।
परम पदसय कुन च लाग म्यान्य नाव।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।

--०-

भजन न० १२१

१ लत ला'इथ ससारस-पत. लारस ल'तिये ।

२ हंस. नादकिस जानवारस ना'लि जाम. छिस छ'तिये
वुफि तार्यम हंस. द्रारस पत०

३ सूर कोर त'मि अंधकारस युस वोर सूर म'तिये
बु.ति धारणाय ध्यान धारस पत०

४ अथ तेज़ रूप आकारस फेर ब्रो'ठि ता'य प'तिये
पोंपुर ज़न गत. मारस पत०

५ लोल फंबकिस अंबारस रेह म्य दिच़ सूर. म'तिये
स्नेह म्य छुम वोञ कति प्रारस पत०

६ आरवल मंज़ लोल नारस द'ज़मच़ 'प्रियम सू.तिये
शेहजारस मंज़ छु आरमस पत०

७ नित्य लग. हो सत विच़ारस सत भास्नाव स'तिये
स्वर फिरत. चित्त सेतारस पत०

८ वंदुन छुम पान यारस अंदुन छुम य'तिये
चन्दुन गोम देव. दारस पत०

९ ग्रज व'छ सोंद.य नारस यति आ'सित छु त'तिये
वन. वन स.य कन धारस पत०

१० छाल मा'र्य मा'र्य लोकचारस क'र्य म्य पोशन फो.तिये
शेरि लागस जटा धारस पत०

११ 'कृष्णन' दुप बाल यारस करहस नाल य'तिये
मेलि श'स्तर त. संगि पारस पत०

० ० ० ०

भजन न० १२२

ललवान सिरि हक ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि बो.न
छम वज़ान ज़ीर बम तार

ह्यसक्य मयखान. मस य'लि ब. चोवनस
भोवतम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दाम. चोक
शौकन को.रुक मिलचार

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान

गाह गट. गाश गाह प्रकाश नूरान
यक्सान सोरि समान

रंग. रंग. बेरंग सूरत सो. मूरत
न'ञ द्रायि दर बाज़ार

गगनयि पवनयि लागनयि भागनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि
मो.लवान ह्यथ खरीदार

पननुय ह्यो.न द्युय पननुय बाज़ार
पानै ग्राक त. सौदागार

हरद. सोंत. कुञरस वोंत कुनि लो.भमस न.
दरद. नयि फयूर शेहजार

इम सत परद. चटिथ.य हूर (म्याज) द्रायि वनवान
पोशन क'रिक तूमार

ग्रक ल'जि सो.दरस दरवाज खुल. गयि
अनुग्रह. द्युतुक अंवार

कंद पुरी जून. डवि शश त. रव सा'विथ
ना'वित अंदरिमि तों दर प्राण

गटि मंज़ ''भास्कर'' सास मासना'वित
सुय प्रावि शांत आकार

o o o o

भजन न० १२३

लाल. लगयो बाल. भावस राम. नावस पार्य लगय ।

१ टंग ओ.ननस विवहारन रंग. बुलबुल गोम को.ल
गंग. बोञ चाव मंज़ यत तावस राम०

२ भक्ति भावथ्य नाद लायय अर्द्ध. रातन सुन्दरो
चानि दर्शन कुय छुम म्य हावस राम०

३ हे मुरारि ! वील. ज़ारी म्या'ञ बोज़ख ना कनव
छुक च़. टोठान भक्ति भावस राम०

४ त्रटि ह.न्दे सायबानो गटि ह.न्दे गाशरो
मोह. अञिगटि मंज़ लोगुस दावस राम०

५ गो.व गोमुत बोर पापुन दोह लो.गमुत छुम दरय
नाथ ल'जिम च़. मंज़ व्यथ. वावस राम०

६ हे शेव ! छुक सर्व. व्यापक ब्यपि छुक विश्वम्बरय
केशव. तार दिम वर्जनिस वाबस राम०

७ क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस ससारुक लंगरय
ख्यम. क्या छुम न. केंह ति छावस राम०

८ बाल. भावय व'नि म्य दितिमय वनि नो आहम् च़. ज़ाह
वनि इतमों ती छुम म्य हावस राम०

९ शयि शये शय च़.य छुक शय नो ब्ययि रोज़ि कांह
शयि रुद यलि टोठयोक कावस राम०

१० 'आनन्दो' भक्ती त'मिस.ज ज़ान पननुय मोक्ष उपाय
व्रत्त त'मिस.ज़ धर पुन्यं त मावस राम०

० ० ० ०

भजन न० १२४

लल वा'ख (लल्लेश्वरी)

१ अभ्यास किनि व्यकास फोलुम,
सौ प्रकाश जोनुम यिहोय दीह ।
प्रकाश द्यान मौख यी दोरुम,
सौखय बोरुम कोरुम तिय ।।

२ गौर. कथ, हृदयस मंज़ भाग रटम,
गंग ज़ल नाविम तन त मन ।
सौ दीह जीवन मोखतय प्रोवम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख ।।

३ पानय आव पानस सतिय,
पानय पनुन कोरुन व्यचार ।
पानय पनुन पान नेछि नोवुन
पानय गुपुन पनुन पान ।।

४ ल्ललि गौर ब्रमांड प्येठय किन्य वुछुप.
श्यशकल वाच़म पादन. तान्य,
ज्ञानकि अमरयत प्रकरथ बग्म ।
लूबय मोरुम अन्द वन्द तान्य ।।

५ क्रया करम दग्म कोरुम,
तिरथन नावस पननिय काय ।
पापन सौंबरिथ बसम क.रुम,
तति कुस ओस तय योत कम. आय ।।

६ पवन त प्राण सोमुय डयो.ठुम,
मीलिथ रूदम शेर खोर तान्य ।
दीह यलि मोठुम अद कयाह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्राण ।।

७ मनस स'तिय मन.य गोंडुम,
च्यतस रटम चौर्पाय वग ।
प्रक्रच. सतिय पौदुय बोलुम
सर. मे कोरम लबम बथ ।।

८ कथा बूज़म कथय करम,
कथाय करम चौपार्य सथ ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़म,
कथायि हावम सतच वथ ।।

९ पूरक कौंबक रोच़क कोरुम,
पवनस त्रावम प्यठय किन्य वथ
अनाहतस बसम कोरुम,
केंह नो मोतुय सौय छम कथ ।।

१० केंहनस प्यठय क्या छुय न. चुन,
मौचिय केंह न त न. चुन त्राव ।
पोत् फीरिथ छुय तोतुय अ़ जुन,
यिहोय व.चुन च्यतस थव ।।

११ ज़गस अन्दर कऽ त्याह पऽलिम ।
सारिय छि छांडान दयि स'ज वथ,
लछि मं.ज़ अकिस दया ज़'निम ।
मऽनिम यी दप्यजि ईश्वर गथ ।।

१२ गायत्रेय अजुपा छल. अकि तऽजिम ।
सूहम सतचिय क'रमस थक.
अहमस लोत पऽठय जठरय वऽजिम ।
गौर कथ पऽजिम च.ऽजिम चख ।।

१३ कौल तय मौल कथ क्योत छुय ।
तऽत. क्योत छुय शांत स्वभाव,
क्रयि हुंद आगुर बति क्योत छुय ।
अन्तः क्योत छ़य गौर. सोंद नाव ।।

१४ श्रान तय ध्यान सन. करिय ।
च्यतस रठ त्रकरय वग,
मनस त पवनस मिलवन कर.य ।
सहज़स मज़ कर तिरथ स्नान ।।

१५ प्राणस सतिय लय यलि करम,
ध्यानस थवतम न रोज़नस शाय ।
कायस अन्दर सो.रुय वुछुम,
पायस पोवुम कडमस ग्राय ।।

१६ मनस ग्राय चज़ पजिकुय अन्न ख्योम,
तब कुय बल गौम करमस क्रय ।
आगुर वातिथ अमरथय ज़ल चोम,
छलवनय मन गोम वरमस प्रय ।।

१७ म्यथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश ।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष ।।

१८ कायम बल छुय मायस ज़ागुन,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप ।
आयस बल छुय तत्व व्यद जानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य ।।

१६ गगनस भूलस शिव यलि डयूठम,
खस लवि न रोज़नस शाय ।
सिर्ययिकि प्रभाव. व्यशमय. ज़ोतुम,
ज़न गव थलस सत्य मीलिथ कयाह ।।

२० वा.ब.च ग्राया पानस वुछिम,
वानस डोठिम सोरि रंग वस ।
ध्यानस अन्दर. दम. दम. मीलिस,
गौनन त्रोवुम मुचरिथ बर ।।

२१ ऊँ कार शरीर कीवल ज़ोनुम ,
शब्द रूप रस गंद्य स.तिय ह्यथ ।
आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम तौथ दोरुम शेरस प्यठ ।।

२२ जन्म प्रावित कर्म सोदुम,
धर्म पोलुम सौय छुम सथ ।
न्यत्रन अन्दर प्रयम् दोरुम,
चोरुम त मोनुम यिहोय अख ।।

२३ मनस गुन छुय चंचल आसुन,
च्यतस गुन छुय ग़छुन दूर ।
जीवस गुन छुय ब'द्धि त्रेश आसुन,
आत्मस गुन छुय न आसुन लीफ ।।

२४ शिव त शक्त कत्यु डोंठिम,
तिमव रटम कामंस जाय ।
दायस दऽर ससि सने मीठम,
तीलिथ रूजम त्राविथ लर ।।

२५ शेरस सतिय सोदा कोरुम,
हरस कौरुम गौड सीवन ।
शेरस प्येठय किन्य न. चान डयूठम
गछान डयूठुम आयम पछ ।।

२६ कु नु य अछुर वु वरि पोरुम,
सोय म्य रोटुम हृदयस मंज ।
सोय म्य लोत पाठ'य गोरुम त चोरुम,
आ स़ स सरतल ग़यस सोन ।।

२७ हचिवि हा'रंजि पेचि़य कान गोम
अबक छान प्याम यथ राज़दाने
मण्ज़बाग बाज़रस कुल्फ रोस वान गोम
तिर्थ रोस पान गोम कुस मालि ज़ाने।

२८ अमि पन सो'दरस नावि छस लमान
कति बोज़ि दय म्योन म्यति दिय तार
आम्यन टाक्यन पोऊ ज़न शमान
जुव दुम भ्रमान घर गछ़हा

२९ अ'सी आ'सि तय अ'सी आसव
अ'सी दोर क'र पत वथ
शिवस सो'रि न ज़्योन त मरून
र वस सो'रि न अतय गथ।

३० गरून वो'नन म कुनुइ वचुन
नेबर दो'पनम अन्दर अचुन
सुई ललि म्य गव वाख त वचु न
नवय हे'तुम नंगय नचुन।

३१ अकुय ओंमकारयुस नाभि दरे
कुम्बुय ब्रह्मांडस सुम गरे
अख सुय मंत्र युस च़्य'तस करे
तस सास मंत्र क्या ज़न करे।

३२ मल वो'न्दि गोलुम
जिगर मोरूम
अद लल नाव द्राम
यलि दलि त्र'वमस तती

३३ खे'न खे'न स'त्य कुन नो वातक
न ख्यन गछ़क अहंकारी
सो'मुइ खे'त मालि सो'मुय आसख
समि ख्यन मुचरन बरन्येन ता'रि।

३४ अन्दरी आयस च़न्दरी गारान
गारान आयस हियन ही
च़य्य ए नाराण च़य्य ए नाराण
च़य्य ए नाराण इम कम वीह।

३५ शय वन च़्यतनिथ शशिकल वुजुम
प्रकथ हुँजुम पवन सू'त्य
लोलकि नार वालिंज बुज़म
शँकर लौ'भुस तमी सू'त्य।

३६ ब क्या कर इमन पा'चंन दहन त काहन
इम यथ ल्याजि वो'खशुन करित गये
सा'री समहन अकिस रज़ि लमहन
अद क्याज़ि राविहे काहन गाव।

३७ गो'रस प्रिछ़याम सास्य लटे
यस न केंह वनान तस क्या नाव
प्रिछ़ान प्रिछ़न थचिस त लूसस
केंहनस निशे क्याह ताम द्राव।

३८ लल ब च़ायस सो'मन बाग ब'रस
बुछुम शिवस शक्ति मीलिथ त वाह
लय करमस वा'च़स अमृत सरस
जिन्दय मरस त म्य करि क्याह।

३६ योसय शिला छय पीटस त पटस
सोय शिला छय वो'तमो दीश
सो शिला छय फिरव'निस ग्रटस
शिव छुय कष्टो त चेन वोपदीश।

४० ल'ज़ कासी शीत निवारी
त्रन ज़ल क'रि आहार
इ कमि वोपदीश को'रूय बटा
अचय्तन वटस सोच्यतन कठ द्युन आहार।

४१ धो'बि यलि दिचनम साबन त स'चइ
ज़म म्य डीशिथ गयम सथ
स'चिय यलि फिरनम हञि हञि का'चइ
अद ललि प्रावुम परमई गथ।

४२ परून सुलभ पानुल दुर्लभ
सहज़ गारन सिक्ष्म त क्रूठ
अभ्यास कि गनिरय शास्त्र मो'ठुम
चैतन आनन्द निश्चय गोम

४३ परान परान ज्द्यायव ताल फो'जिम
च्य्य युग्ये क्रय तजिम न ज़ान्ह
सुमरन फिरान न्यी'ठ त ओंगुज गजिम
मनच द्वई मालि चजिम न ज़ान्ह

४४ लल बो द्रायस लो लरे
छांडान लूसम दय्न क्यो रात
वुछुम पंड़ित पननि घरे
सुय म्य रो'टमस निछत्तुर त साथ।

४५ कुश पोश तेल दीप ज़ल ना ग'छे
सद भाव गो'र कथ युस मनि हे'ये
शम्भोसह सो'रि नत पननि यछे
सुय यी दपि जि सहज़ा करे

४६ शिव शिव करान हमस गथ सो'रिथ
रूज़िथं व्यवहा'री द्यन क्या राथ
लागि रो'स्त मन युस उदय करिथ
तस न्यथ प्रसन्न सुर गो'र नाथ

० ० ० ०

भजन न० १२५

विनत बोज़म च. राधा कृष्ण. लागय लोल. नादा बो ।
भरय लोला परय लोला करय हो हो करय हो हो ।।

१ च़. छुक योगुक ज्ञानुक गुल ब. छस ना भाव कुय बुलबुल
च़. लोब रोज़न ज़रय मा बो करय०

२ च्य छय पंपोश पाद. च द्रूय वरुम छस भक्ति बाग.च हिय
च़. नय डेंशत हरय मा बो करय०

३ च़. छुखना प्राण बो छस तन सत्ता चा'नी छि दो.न मिलवन
च़. नय आसक मरय मा बो करय०

४ ज़लस मंज़ गा'ड ज़न छस ब. छस च्यय स.ति ज़ल छुख
ब.य च.य
च्य' रुस्तुय वो.ञ दरय मा बो करय०

५ ब. छस च्यय मेघ. वर्णस मोर र'टिथ छस खोर रासस मंज़
नच़य लूकन खरय मा बो करय०

६ च्य सर्वस छस ब. कुम.री ज.न करन छस बूलि म'शित हन हन
छनय त्रावि'त घरय मा बो करय०

७ च छुख चन्द्र' ह्यु ज़ोतन ककुव ज़न छस च्यं कुन बोलन
वुछुत नय अ'छि ज़रय मा बो करय०

८ च्य 'श्रीकृष्णस' ब. छस प्रारान दितम दशुर्न इतम लारन
च्य रुस्तुय वोञ बरय बो करय०

० ० ० ०

भजन न० १२६

वुछित गत चा'ञ दैवागत च्य विन दयि नो सोरे लो जो ।
म्य अन्दर कर पनुन मन्दिर ब. च्यस पूजा करै लो लो ।।

१ ब. चाञे वेरि सों.बराबय अ'छित किञ रंग. रूपक रस
कनव किञ शब्द. साजुक मस अ'नित खाम्यन भरै लो लो०

२ म्य कुन वुछि वुछि असान छुक दूरि रूज़ित आस्मानन मज़
गुपित छुक दास्तानन मज़ ब. दूर्यर नो ज़रै लो लो०

३ फिज़ा त्रा'वित म्य खनियमित ज़मीनस तल त. पूर.णि छिम
स्यठा देवार लूर.नि छिम च्य रुस्तुय क्या करै लो लो०

४ ब. छुस पोंपूर च्य दीपस पत चटित इम जाम करहै गत
दिहंनै जाम. चटन चि वृत्त क्यो.मा ह्युव मा मरै लो लो०

५ म्य निम पंपोश. पादन तल तिमन हुंद बों.बरा सूज़ित
कंडय्न प्यठ छुस मरे रूज़ित ब. चाने आसरै लो लो०

६ ज़मीनस जन्मकिस व'विम.ति अशिकि दुर्दान. केंह भ'विम.ति
अ'छिन मंज छिं र'छित थ'विम.ति तिमै खावे जरै लो लो०

७ इमन जोयन अन्दर यो.दवय छु चाने सहज़ धर्मुक जल
बठय्न हुंद छक सम्योमुत मल म्य चावुम आगरै लो लो०

८ पनुन म्य तेज़.कुय आगुर इमन ज़चन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित दुई कासुम गटे हंदि गाशरै लो लो०

० ० ० ०

भजन न० १२७

द्रौपदी विलाप ।। जय राधा कृष्ण ।।

श्लोक :- हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वासि यादव नन्दन ।
इमां अवस्थां सम्प्राप्तां अनाथां किं न रक्षसि ।।

वलो श्याम. लालो ब. कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम कडान जाम. नाल ।

१ ल'जिस वो.परन मंज़ व'जिस क'मि ब. शापन
ग'जिस शर्मि दावै ल'जिस गिस ब. ज़ालै०

२ म्य वुञक्यन करान छुमन. कांछा हिमायत
यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत म्य कपालै०

३ च्य रुस्तुय रछयं कुस असल छस ब. ना'री
च़. रछतं त. वुछतं छसै कमि हालै०

४ प्य'यिय मा न्यंदर च्वय सदा छुक न. बोज़ान
ग'यि को.त दया व्ञकयनस हे दयालै०

५ च़. छुक दन बन्धु म' म'शराव दीनस
हृषाकेश. अशञे हरान छसया चालै०

६ म्य वोञ रूज़मच़ छम न. कांसि हं.ज. आशा
तमन्ना म्य टाठि छुम त. रट.हत ब. नाल०

७ सभासद बनेम.ति छि मोनिक चि़त्र ज़न
दया छकन. व्ञक्यन इवान हे दयालै०

८ दया सागरो कर दया ''नील-कठस''
च़. दिस पान. दर्शन यिस अन्त. कालै०

० ० ० ०

भजन न० १२८

१ वन्दयो मुञ च. पादन छारथो राम. राधन ।

२ विच़ार ना'गि वति लारै नुनर.कि तार. प्रारै
ब्रह्म.सर. किञ दिमै वन्य छ़ारथो०

३ अ'छिन हुंद गाश म्योनुय खुश इव.वोन नुँद. बोनुय
का'लि राव्यम हिये तन छ़ारथो०

४ कश. तीर लोयथं म्य लशि छम नार.च रेह
अशि फय'यन ईयैम तन छ़ारथो०

५ महा'लिशि किञ इमा'यो हरमुख व'नि दिमा'यो
हंस. द्वार. ग'छित रटै वन छ़ारथो०

६ च़. रूदहम कथ शाये क्रेंक न'दिय वो.ठ ब.लाये
गंग.बल युन छु आदान छ़ारथो०

७ गोस. नो कैंह म्य चोनुय दयन य'लि बान. ज़ोनुय
चार. नो ला'नि वादन छ़ारथो०

८ च़. क्य ज़ि गोक म्य निश दूर इज़ि त्यलि यलि गछ़यं सूर
वुज़ि पोञ नाग. रादन छ़ारथो०

९ नाव तन त्राव कीनह भाव मीर दो.द म्य सीनह
हाव मुख थाव लादन छ़ारथो०

१० बरञि बल युथ न. रावै राम. राम क्रख त्रावै
आलब दिज़्यम म्य नादन छ़ारथो०

११ नेत्रन मंज़ रटै पाद बुथि शेरि किञ दिमै नाद
मरयो वुञि छु आदन छ़ारथो०

१२ नारायण नाग. प्रारै वांगत जाय छ़ारै
प्रारै सू.ति साधन छ़ारथो०

१३ सिर्यस छु गाश चोनुय तस छु "प्रकाश" चोनुय
सो.य छै योग. साधन छ़ारथो०

o o o o

भजन न० १२६

पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय

वीरबद्र कासवुन छुरव असि भय
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।
भक्त्यन छि गरि गरि चानी लय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

यति आसि श्री राम सुन्द कीतन
तति आसि बलवीर सुन्द वर्णन।
दर्शन चानि गछि पापन क्षय ।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

चानि डेडि तल युस लायान नाद
बोज़ान तस छुख चय फर्याद।
सोख, मोख तस गछ़ान मंज़िल तय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

पज़ि मन येछि पछि आयि लारान
राम राम कर्यथय ध्यान धारान।
पनुनि भक्ति हुंद दित असि पय ।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

छालि अकि चेय कोरुथ समन्दर पार
रावनस त लंकायि कोरुथ लुर पार।
राक्षसन प्रलय गव चानि ग्रजनय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

नाम स्मरणि चानि मन छु हर्शान
दोख चलान अंद वंद सोख छु सपदान।
शांती छे वोपदान स्यज़र पज़रय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

चानि दरबार कुस खाली द्राव
यम्य योछ़ यी तस ती बदस आव।
येम्य थव क्षन क्षन चानी शय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

बति आस चानी आशाय योर
ज्ञानचन बरन्यन मुच़राव तोर।
श्रदायि म्यानि द्यव नेरि न्यरनय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

दर्शन चानि फोल मन पम्पोशे
गट च़लि गाश फोलि लयि यियि होश।
प्रयम सेतारस अद वोथि खय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

दामन चोन रौट मटि छी च़ेय
च़य छुख रक्षिपाल रछतम च़ेय।
अर्पन जुँ करय त प्राण आलवय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

च़रनन हटिकुय रथवंदहय
आंगनच गर्द अऽछवय बे डुवहय।
सुब शाम प्रयम पूज़ा बुँ करहय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

भाव कोसम ह्यथ हलमस क्यथ
छुय यिवान सांयिल ननवोर न्यथ।
मोख हाव अद वुछत क्याह बुँ-तोशय।।
पवन पुत्र हनूमान भव्यनय जय।।०।।

--o-

भजन न० १३०

वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः

१. वंदे शिला त्वम ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः।
म्यहरे चराचर सुंदरी श्री शारिका देवी नमः।।

२. अव्वल तुई आखिर तुई बातन तुई ज़ाहिर तुई।
गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका देवी नमः।।

३. जगरा शसे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई।
जिस में जहां व जान तुई श्री शारिका देवी नमः।।

४. लक्ष्मी जहां आरा तुइ ममाई देश अपज़ा तुई।
बुद्धी महा विद्या तुई श्री शारिका देवी नमः।।

५. देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरू दाता तुई।
माता पिता भ्राता तुई श्री शारिका देवी तमः।।

६. हाजत खाऐ आलमे शाहे शजाअत अक्रमे।
कायम मुकामें दाम में श्री शारिका देवी नमः।।

७. अजहर से करान बर्तनी दरहर से आलम सर्वरी।
बरफर कि इन्द्र मुश्तरी श्री शारिका देवी तमः।।

८. सीमवो जरो बहरे दुरी लोलाए लाला गवहरी।
ज़ेबे दु आलम अनवरी श्री शारिका देवी नमः।।

९. सहम व गजन फर वा हनत शिवजी अस्त ज़ेरे आसनत।
लालो जवाहर दामनत श्री शारिका देवी नमः।।

१०. तू चार दह रत्ले गिरा तू नव निदाने बेकराँ।
तू कानि गवहर दर अमा श्री शारिका देवी नमः।।

११. शक्त तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका देवी नमः।

१२. नागे त्रिलूको तिरथ जात सरचश्मे आबे हयात।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका देवी नमः।।

१३. गरदे रहत् कोहलये बसर खाके दरत् नूरे नज़र।
संगे समीरत सीभव जर श्री शारिका देवी नमः।।

१४. नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहरे अनवरी।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री शारिका देवी नमः।।

१५. चिकरी शरव् हाजत रवा साजद् गदा रा पादश।
वाह-वाह चह लक्ष्मी थापना श्री शारिका देवी नमः।।

१६. रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी।
चहरव् कुनम ज़रदोजरी श्री शारिका देवी नमः ।।

१७ दर बारगाहत रोज़ व शव नारद मुनीशर बाअदब।
दरबानि दरगाहत् तलब श्री शारिका देवी नमः।।

१८. गुल अज़ सरे खुद मी कुनम, ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्।
पूआयतू खाहम कुनम श्री शारिका देवी नमः।।

१९. अफ सुरदा अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा।
दस्तम बिगीर अई देवता श्री शारिका देवी नमः।।

२०. ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्णाकर।
गोयद त्वता जोयद दया श्री शारिका देवी नमः।।

(श्री कृष्णाकार जी)

--o--

भजन न० १३१

शरनागत्स करत्म दया
माता उमा देवी नमः
१ लक्ष्मी त काली सरस्वती
गंगा त यमना भगवती

च्य हय पार्वती शिवस प्रिया
माता उमा देवी नमः

२ पापकि वालिथ हय बोर
च्य भऽखुँत्यन दिवान छक तार
च्य कासान दिलक छक बोड़ गमा
माता उमा देवी नमः

३ युस प्येी परन च्य लोलसान
तस मंगला छख च्य ढोठान
बिति हय पादि कमलन तल प्यमा
माता उमा देवी नमः

४ च्य निश बुँ लारान छुस इवान
च्य निश पनन दोःख छुस फिरान
कास्तम मे दोःख आशा छमा
माता उमा देवी नमः

५ दूर छक करान च्य आपदा
च्य छक दिवान सुख त संमपदा
च्य छक करान दादिन दवा
माता उमा देवी नमः

६ देवता छी चान्य गुण सुरान
विषणु छु चान्य सुमरन करान
शक्ति शिवस निश छा जुदा
माता उमा देवी नमः

७ माता दया युदवय च्य करख
छऽनी भानुँ मोक्त सूत्य बरख
शाह बनी क्षण मात्रस गदा
माता उमा देवी नमः

८ च्य छक दया सागर बनान
च्य माता कृपा सागर वनान
हे दीन बन्द्ध कर दया
माता उमा देवी नमः

९ माज्यि रुस्त वोन कुस बोजी म्योन
हाज़त कडुक हाजत छमा
माता उमा देवी नमः

१० जाफिर गुलाब बे मसवल त हीय
लोलसान बुँ शेरस हऽय लागयय
लोल अशि पादन गो'ड दिमा
माता उमा देवी नमः

११ दास कति सामरथ अने
विस्तार पअठ चाञ्य गुण सुरी
शुर पअठ करान छुस चाञ्य तोतः
माता उमा देवी नमः

१२ शरनागत्स करुम दया
माता उमा देवी नमः

--o--

भजन न० १३२

(गज़ल)

शरीर ज़ोलनं अ'मि मदनवारन. बे आरस आर नो छुये ।।

१ प्राण ज़ोलनं पवन.कि नारन शशि कलि हुंद म्य नार छुये
सामह कोरनं म्य उँकारन बे०

२ ल.यि लोसं म्य तोस चारान रुम चा'र्यमस म्य मोयि मोये
दम.किय पन ज़न छस खारन बे०

३ बडि मनसर.यार छस ब. गारन माह ईश्वर अथ मंज़ छुये
काम क्रोध लोभ मोह छस ब. थारन बे०

४ वुछत मार कूति क'र्य अंहकारन नार गोंडनक हा मोयि मोये
फान कोरनस अनफासकि नारन बे०

५ बदन ज़ोलनं अ'मि मदन वारन हये व्य'सि यार इयम नाये
विचार मनसर. गारहोन विचारन बे०

६ शास्त्र बल छसया गारन ना'लि 'रा'हिमस' शास्त्र छये
ताज बरसर शास्त्र दीन दारान बे०

० ० ० ०

भजन न० १३३

१ शिव नाथस प्यठ सपज.क स'तिये ।
श्री पारव.तिये भ'विनै जय ।।

२ पूजायि पोश लागय लव' ह'तिये
अ'किन गामि आसव.ञ छक शिवा
रक्त बीज मा'रित छक पान. त'तिये श्री पारव.तिय ०

३ पोश सोंबना'विम वो.ज़लि नीलि छ'तिये
पूज़ा करहय इष्ट देवीये
ज़ार. पार.वार बोज छिय आर.क'तिये श्री पारव.तिय ०

४ अमर नाथ कैलासकिस सूर. म'तिये
व'रनक त. क'रनक अर्ध शरीर
नित्य छक आसव.ञ तस सू.ति सतिये श्री पारव.तिय ०

५ अष्ट. स्यज सू.ति छय व्र'ठि ता'य प'तिये
शिव शक्ति रूप. छक सर्व व्यापक
'कृष्णास' टोठ छक बोज़ान य'तिये श्री पारव.तिय ०

० ० ० ०

भजन न० १३४

शुभ मुख हाव म्यति अमृत चावतं ।
सत्गुरु हावतं गटि मंज गाश ।।

१ गो.ड सत्गुरु सु'द ध्यान सो.रनावतं
दम. दम. वद. च्यय कुन नम.हा
रात दिन अक क्षण छयन मत थावतं सत्गुरु०

२ ज़म्नमस इथ कर्म खुर संभालतं
मत. दिषिरावतं साधन मंज़
मन चे कलि इन्‌ि य चूर पावतं सत्गुरु०

३ दह शो.मरा'वित मद हो.स्त पावतं
काहन हावतं कुञ्यि वथ
सोऽहं शब्द. निशि भ्योन मत थावतं सत्गुरु०

४ शिशराम नाग. सर. तन नावनातं
मत. वुछत म्यानिम कुकर्मस कुन
मोहञे सिंधि म्य'ति अपोर तारतं सत्गुरु०

५ क्षण. क्षण. पननुय ध्यान धारनावतं
सोर.नावतं ती यी पज़िहे
कामदेव. श्याम सुन्दर. लट. मत. दावतं सत्गुरु०

६ विश्वंभर. पननुय शुभ मुख हावतं
रोज़त तं. भावहा'य पननुय हाल
म'शरोवमुत नाव चित्तस पावतं सत्गुरु०

७ वनमाल धा'रित दर्शन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गेम लूसित मत. प्रारनावतं सत्गुरु०

० ० ० ०

भजन न० १३५

श्याम सुन्दर. बेह सुन्दर जाये ।
वथरै मन मथुराये लो लो ।।

१ प्राण. पवन. स.तिन मुचरन. आये
नव द्वार देह द्वारिकाये लो लो
वृ'च गोपियि च्यय वुछने द्राये वथरै०

२ बाल. रठ नाल.मति स.ति पालनाये
सात्रि भख्यि हंज़ि कुब्जाये लो लो
निष्काम. सिद्ध कर. मन. कामनाये वथरै०

३ टोठयोक गज़ेंद्रस कथ विद्याये
आहिरस कथ श्रद्धाये लो लो
कमि श्रोचि़ खुश सां'पनुक शिवराये वथरै०

४ केवल बख.च हुन्द कर म्य उपायें
स.ति पननि प्रेम. त माये लो लो
वासुदेव. वास कर मंज़ वासनाये वथरै०

५ राज. द्वारस चा'निस भिक्षाये
आधीन कर्म हीन आये लो लो
चार. कर म्य आर.कचि़ सुशीलाये वथरै०

६ सुदाम ज़ा'नित कर म्य उपाये
वो.लमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
छो.चर.य म्योन पुर स.ति पूर्णाये वथरै०

७ बान. रो स्त द्रा'मुत छुस भिक्षाये
वूंचमुत दैव सपताये लो लो
भिक्षुकस त्राव राज़ हंसुन साये वथरै०

८ फल. दायक. चानि खल. किन आये
अनुग्रह तोत पूरि त्राये लो लो
वो.वमुत कैंहति छुमन.कर्म भूमिकाये वथरै०

९ शो.ज़राव संकट ग्रह दशाये
उल्ट, समयस प्यट ज़ाये लो लो
फिरथुर कर च़ सानी कर्म लेखाये वथरै०

१० भाव. मुचकन्द म्योन पननि इच्छाये
सांव मंज़ मोह. निद्राये लो लो
वुजनाव मंज़ स्मृच़ गुफाये वथरै०

११ पानस पत. दोरनाव म्याञि राये
सियि रूप. ज़न पो.त छाये लो लो
ज़ाल मद़ कालयवनस कायाये वथरै०

१२ मारका'ण्डी ज़न चाञि आशाये-
आयस मंगने च्य आये लो लो
कालम ग्रास कर भास जायि जाये वथरै०

१३ आत्मा राम. निवृ'च़ हंज़ि राये
स.ति पक शांत सीताये लो लो
दण्ड कर प्रवृ'च़ शूर्पणखाये वथरै०

१४ गाल मोह रावणास त. क्रोध. सेनाये
ज़ाल लोभ.चि लंकाये लो लो
विवेक. मन. लक्ष्मणने भाये वथरै०

१५ सत्गुण प्रकृ'च़ कौसल्याये
मुख हाव स.ति दयाये लो लो
राज्य कर आनन्द. अजोध्याये वथरै०

१६ ज्ञान. ताज दित द्याऩ धारणाये
स.ति स्वतंत्र.ताये लो लो
चित्त तख्तस बेह ह्यथ समताये वथरै०

१७ होशयार रोज़ मंज योग. निद्राये
ह्यत समदृष्ट एकताये लो लो
तुर्या रूप. मंज़ राज़. सभाये वथरै०

१८ अज़ ताञ को'त्याह गयि क ति आये
वत.गत यत यात्राये लो लो
एक. कुस वोत चाञि अनेकताये वथरै०

१६ वीर.क'र्य ईर. चाञि विष्णु मायाये
बडि दय. बेपरवाये लो लो
इम त'र्य तु. तिम ता'र्य चाञि कृपाये वथरै०

२० म्य'ति तार भव.सर. आवल.नि जाये
स.ति विवेक. उपाये लो लो
युथ देह. डँग, सोऽहं हम. वाये वथरै०

२१ केशिव नाव ज़पनाव भावनाये
अज़पा ज़प मलाये लो लो
मन नाव. आत्म तीर्थ.चि चमुनाये वथरै०

२२ राम.चन्द्र. शिव लगहोय एकताये
हर'वित चन्द्र कलाये लो लो
मोह गट. कास म्याञि बोज़ मीनाये वथरै०

२३ सावधान मन कर य'ज़मन-भाये
योस द्रायि मंज़ प्रज़ाये लो लो
वर तस बो.ञ वा'णी कन्याये वथरै०

२४ विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्म. लेखाये
स.ति नाना वणाये लो लो
शक्तिपात, दष्ट थव प्यठ निष्ठाये वथरै०

२५ कर्णेश्वर्यन हंज़ गूर्य भाये
रास खेल.नि नञि द्राये लो लो
थफ कर कृष्ण.ञि' राग. राधाये वथरै०

० ० ० ०

भजन न० १३६

श्री महाराज्ञी स्त्रोत्रम्

१. स्मृैव अन्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकल मलम।
जयत्येषां महाराज्ञी भक्तानां कामदायिनी।।

२. त्रिजगत् मोहिनी ईडये मिहरीभूत सद्गुणे।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहि मां शरणा गतम्।।

३ शेषा शेष मुखा गण्य गुणे गुण गण प्रिये।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहिमां शरणा गतम्।।

४ सुरा सुर नर सिद्ध वन्दनीय पदाम्बुजे।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहिमां शरणा गतम्।।

५ चराचर जगत् सृष्टि स्थिति संहार कारिणी।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहिमां शरणागतम्।।

६ भक्त कल्प लतेऽनल्प वाङ माधुर्य जितामृते।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहिमां शरणा गतम्।।

७ ब्रह्म विष्णु महेशान वन्दिते गिरिनन्दिनि।
नमोऽस्तु ते महाराज्ञी पाहिमाँ शरणागतम्।।

८ भक्तानां भीम संसार पारोवार प्रतारिणी।
नमोऽस्तुते महाराज्ञी पाहिमां शरणागतम्।।

९ निर्गणेनिष्क्रये नित्ये सत चित् आननद रूपिणी।
नमोऽस्तुते महाराज्ञी पाहिमां शरणागतम्।।

१० राज्ञी स्तोत्रं इंद पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत्।
असंशयं अशेषेण वशेत् च अखिलं जगत्।।

११ या द्वादशकि परिमण्डित मुर्तिः एका
सिंहासन स्थितिमंती उरगै वृतांच।
देवी अनन्य गतिः ईश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवेपुंषी परमार्थराज्ञीम्।।

१२ उद्यत् दिवाकर सहम रूचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनो परिगतां उरगो पवीतां।
खंडाम्बुजाडय कलश अमृत पात्र हस्तां
राज्ञी भजामि विकसत् वंदनार बिदाम्।।

० ० ० ०

भजन न० १३७

१ श्री निराकारै त्रिभुवन सारै प्रारै पनने यारै बल ।
मस्मा धारै छम चा'ञ लादन साधन प्यमयो पादन तल ।

२ लमयो जामन रटयो दामन शिवनाथ छम चा'ञ मन कामन
त्रिज़गत्पालै इत सानि सालै चावतं प्यालै अमृत ज़ल०

३ त्रिभुवन सारो हनि मंज छुक मायायि सू.ति छुकन इवान द्रेंठ
सत्चिन आनन्द गोविद केवल जाय चा'ञ हदयुक पंपोश डल०

४ मनकिस बागस फुलया द्रायै रछव.नि लछ.नावि अछपोश छाव
शोक चानि प्रेमक बुलबुल
छु नालान बोलन लोल.नै दिदरित. जल०

५ हे 'कृष्णा' ! वासना शुद्ध थव
स्योध थव बुद्ध थव सतसय कुन सन्निधान
सतस.य कन थव सतस.य
मन थव सतकिस कुलिस वसि आनन्द फल०

० ० ० ०

भजन न० १३८

श्री राज़-राज़ेश्वरी आम.ति शरण छिय।
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय ।।
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१ जगत अम्बा च़.य छख मंज़ वदनस असनाव
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हु'द दामान प्यठ, त्राव
कल्याण. सोस्त थाव स.ति अश, फ्यरन भरन छिय पू०

२ बाहन सिर्यन ज़चन चान्यन हुन्द प्रकाश
च़रण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
तिह.न्ज़े गर.दि स.ति देव मुकट. जरन छिय पू०

३ लोका लोकन ह.न्दि सत.जन कारण देव. गण
सिंहासन चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दाम.कि पुरुष प्यवान परन छिय पू०

४ षट्चक्र, रूपी चक्र नागस छि ना'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो.पा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान धरन छिय पू०

५ बुद्ध छन. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्यय मन, कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्धायि स'स्ति आयि स्तुतायि परन छिय

६ पनन्यन भक्तियन दासन हु'दय प्ययनय पास
तिहन्दे पासै कुकर्मन हन्ज गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छय च्य भूतेश्वर.ञ द्र.य पू०

७ भगवत् मायायि हं.दि रंग चा'नी छि. रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संत्संग
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करन छिय पू०

८ महा माया च.य छख चट असि माया ज़ाल
असि वो.लमुत छुय गृहस्थ.कि काल. सर्पन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय पू०

९ कम भक्तियि किञ भक्तावरान खरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि ज़िन्दै मरन छिय
च.इ टोठ स'च़ चाञि स.ति अ'सि दिन दिन भरन छिय पू०

१० प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन ह.न्दि अपराध
सब्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश. पद
इम तिम स्वरण यथ भव.सरस तरन छिय पू०

११ चाने सूती सृष्टि गयि न'ञी जय भ'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सां'प.नी जय भ'विनय
कलर जु.गच महाराज. रा'नी शरण छिय पू०

१२ कुनुय यलि ओस वुछन बोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
चित शक्ती चाञे एक अनेक स्वरण छिय पू०

१३ च्यय अज़पा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निस्त्रिगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.ति कार अन्तःकरण करन छिय पू०

१४ अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष. नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि महा पुरुषय वरन छिय पू०

१५ च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
च्यय निश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय पू०

१६ चाञे दयायि स.ति क'डि बडयूव ब'डि ब'डि नाव
निष्बुद्ध 'कृष्णास' निश वा'णी हुंद अमृत द्राव
परण वाल्यन ज़न्मस ह.न्दि दुख हरण छिय पू०

० ० ० ०

भजन न० १३६

सखियव रूठुम हा'य रूठुम हा'य ग'छित ब्यूठुम हा'य गामन. य ।
तति विगिञख्व डयूठुम हा'य ब. चाक दिमना जामन य ।।

१ सिंघ ज़ल. तन नावसा'य ब. सीर पननुय भावसा'य
क्याज़ि ला'जिथस पाम.नय ब. चाक०

२ बाल.प्यठ. नादा लायसय ब. साज. सेतार वायसा'य
छो.ञ छो.ञ करस रुञ. दामन.य ब. चाक०

३ तारा मंडला द्रामतुय जूनि नादस आमतुय
रो.व हा'य करव. सुबह शामन. य ब. चाक०

४ वन ना'गिञि द्रामच़ा'य डल सा'लस आमच़ा'य
जूला ज़ालव रंग. नावन.य ब. चाक०

५ स'खियव मनवित अ'नितोन आदन बोज म्योनं नुंद.बोन
वो ञ नय कां'सि बो हावन.य ब. चाक०

० ० ० ०

भजन न० १४०

सतज़न वन मन कर कैंलास.य बस्तियि मंज़ वनवास.य रोज़।।

१ चि़त्त. किञ भस्म मल वल अतलास.य
साधु प्रकृच़ सन्यास.य रोज़
ओं शिव शंभू कर अभ्यास.य बस्तियि०

२ विषय त्यागुक धर माघ मास.य
सत्संगकुय उपवास.य कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह.मस कास.य बस्तियि०

३ पान प्रज़ना'वित पानय म. आस.य
सर्व संकल्पन ग्रास.य कर
तल. प्यठ. त्रा'वित त्राव तलवास.य बस्तियि०

४ महामाया ह्यत रछवुन दास.य
शिवनाथ हृदयावास.य छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यास.य बस्तियि०

५ श्री कृष्ण महाराजन ख्यूल रास.य
गोपियि शुराह सास.य ह्यथ
बाल. ब्रह्मचा'री तोति नाव द्रास.य बस्तियि०

६ 'कृष्ण' अ'दरिमि त्याग. मल सूर सास.य
म्य'बरिमि राग. उल्लास.य कर
शुकदेवस गव यी व'नित व्यास.य बस्तियि०

० ० ० ०

भजन न० १४१

सन्यास बे परवाय मस्तानै, पा'र्य हो लगै म्यानि जानानै

१ कावन अथि हम श्यछि सोज़ानै पोज़ बोज़ डंजि छमन रोज़ान दिल
रोज़खै त. बोज़क लोल अफसानै ज्यूठ नो वनै म्यानि जानानै०

२ लूख क्याज़ि कन तलके दुर्दानै ओरुक योर म्योन वननै हाल
ब्याक मा छ ब्य'य सुंद दोद ज़ानानै पान. हो वनै म्यानि जाननै०

३ मोहन च्यति छिया मन मोंहानै चानि खोत. सुंदरातिं उपद्यव कांह
च्य'ति छुयना सुवील. ज़ार बोज़ानै आंर इयतौ म्यानि जानानै०

४ अं'दरिमि राग अग्न धूत्र प्रज़लानै लोक़ त्याग छय न्यबर मोलमुतसुर
ओबर तल यि वुज़मल छय द्रेंठ ईवानै सूर गोसात्रि म्यानि जानानै०

५ यं'बरज़ल चश्मन रुद अरमानै शबनम रोस्त कुनि वुछहोक ज़ांह
सों'बलस़ कस छि तिम पाद पूज़ानै पूज़ हो करै म्यानि जानानै०

६ घरि घरि सोंरहक देव सु'द द्यानै क्याज़ि रटहक गोफ त. बाल
मन म्योन क'र्यज़िहे खल्वत खान चूरि हो थवत म्यानि जानानै०

७ दूरि रूजित दोल. लोयथ कानै छिह ल'गित ब्ययि ब्यूठ ज़ख्मन क्रोर
यति योर स्योध कर तीरि मिजगानै सीन. धारयो म्यानि जानानै०

८ रंग रूप प्रतअंग छुक खोबानै देवता स्वभावस वातिहिय न. कांह
हंग मंग नय आसहक रोशानै आशु तोष हा म्यानि जानानै०

९ मन क्याज़ि योर कुन छुय न. नरमानै कोमल तनि चा'ञि पश्मोन पोट
फर्यशर मोख छिन नख.ठहरानै नाजुक बदन म्यानि जानान०

१० यूत नय च़ आसहक शेर नोमरानै कद चोंन ओस खास र्स्वगच थ'र
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानै अभिमान रस्ति म्यानि जानानै०

११ शनन प्यठ केश छुय परैशानै तालि प्यठ गंडित जट. सर्पाकार
काल बंबूर गण ज़न छु नां'पानै अबर मोय म्यानि जानानै०

१२ कोंग तेहजव छू बोड प्रोवमुत शानै कार्तिक मास पूर्ण चन्द्रस मज़
निथ वुछवनि सु खाल केंह भाग्यवानै पूर्ण चन्द्रम म्यानि जानानै०

१३ ज़ाविलि वोज़लि वुठ कुनि २ आनै असनचि त्रायियलि कुमलानछिय
दा'न पोश बर्गन छि मंद छावानै वुठ कुमलाव म्यानि जानानै०

१४ मा'सूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानै परम राग रंग कति प्रज़लान छिय
नम चा'नि छा अक़ीक़ किन मिरजानै आदरच सुँदर म्यानि जानानै०

१५ यथ हुस्नस न. ज़ेवरुक एहसास खा'लिस सोनस मूल मायि त क्या
युथ रूप छा भूषणस ओरुज़मानै साद शाहज़ाद म्यानि जानानै०

१६ इम चानि खतुखाल याद पावानै दूरिरुक दोद नाम म'शरान छुस
दोद बलि यलि वैद्य आसि वातान दा'दिस वात म्यानि जानानै०

"सव० मास्टर ज़िंदा कौल"

० ० ० ०

भजन न० १४२

१ सिर्यि वुज़नोवुम चंद्रम. सोवुम
तारकन दोवुम शून्य मंज़. थान ।
गाश. सू.ति गाशुक गाश प्रज़नोवुम
सुबह रूप होवुम श्याम. लालन ।।

२ दिन त. रात पा'द गयि सिर्यि प्रक्रम. सुबह०
चन्द्रमन प्याल. मय' शबनम सू.ति
तमि प्याल. श्याम. लाल दामा चोवुम सुबह०

३ मन गुलि आफताब ज़न फो.ल नोवुम
सिर्यि गंज़रोवुम परमात्मा
तत कुन सुख हा'वित सुख प्रोवुम सुबह०

४ आत्म. तीर्थ. मार्तण्ड. मंज़ तन ना'वम
पितृ लोकस दा'वम तृप्ती
तमि कर्म.त्र्यन हुंद ऋण मो.कलोवुम सुबह०

५ निर्वासनकुय आसन प्रोवुम
तति बेहनोवुम प्रत्यक्ष देव
निर्मल पंपोश. डलज फोलनोवम सुबह०

६ श्री 'कृष्णास' सू.ति दोह गुज़रोवुम
शामन होवुम त'मि श्याम. रूप
सुबहस सू.तिम शाम मिल नोवम सुबह०

० ० ० ०

भजन न० १४३

सुख शब्द दर्शन. चाने, आनन्द घन टाठि म्याने

१ रात दिन करान छुस चिन्तन
क्षण. क्षण. छुम चंचल मन
ईश्वर. दूर्यर. चाने आनन्द०

२ राग चोन युस छुम मनस.य
सात. सात. रातस दिन.सय
म्योन दोःख च्य रुस्त कुस ज़ाने आनन्द०

३ राज़न ह.दि महाराज़े
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्या ओस लाने आनन्द०

४ यो.दवै च़. म्या'ञ कथ बोज़क
दूरि दूरि चूरि क्याजि रोज़क
रोज़ चूरि ह्रत गुहायि म्याजे आनन्द०

५ य'च़ कोल च्य त. म्य दूर्यर
क्यथ ज़ोरुत यूत कोरुत न. पूर्यर
अद. कर यि ज़'ट यलि प्राने आनन्द०

६ ओसुस ज़ल बो.य निर्मल
मोह. कठक'शि कोरनम छल
वचनम कच. शीन. माजे आनन्द०

७ त्रेश. ह'तिस.य मनस त्रेशा
अमृत वर्षण बु डेंशा
गलि शीन अकि कटाक्ष, चाने आनन्द०

८ कर्म किनि वेष कम धा'रिम
गर्दभ बुथि बा'र्य सा'रिम
वृषभ, वेष, तल अलबाजे आनन्द०

९ कामनायि आतुर कोर.नस
अमृत भास्योम वेह. रस
श्री.परोवुम दाजि दात्रि आनन्द०

१० कन थोकुम न. सतगुरु शब्दन
ज़र छुनुम खो.टि प्रारब्धन
कर्मव को.डुस पयैनि छाने आनन्द०

११ आनन्दस चाव अमृत. रस
संमार. निश. बनि बेह्यस
बनि नो.न अनुग्रह चाने आनन्द०

० ० ० ०

भजन न० १४४

सुन्दरो सो.न. संदल गरय. हो हो करै श्याम. सुन्दरै ।

१ गोपिय प्रारान गोकुलै वेरि चाञि फेरान निर्मलै
खेलव त. मेलव अमरै हो०

२ जसोधा वुछतोन भाग्यवान टोठेय यस इम ज़ संतान
बलभद ब. ब्ययि कृष्ण. गंदरै हो०

३ अंतरे पलंग पा'रावयो पा'टिय करछ वथ वथ.
रावयो
अंज़.लि दर्शन मोक्त. हो जरै हो०

४ गलि गलि दो.ध बो चावथो फलि फलि नावंद ख्यावथो
बादाम कंद चंद हो भरै हो०

५ आसान छुक कैलास कोह भासान छुक यति रात त. दोह
हरमुख. क्यय गंगा धरै हो०

६ ना'लि माल. खा'लि कनवा'ली रंग. रंग. जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीतांबरै हो०

० ० ० ०

भजन न० १४५

संकट कट अथ रठ दयालै ।
चुट सोन माया ज़ाल ।।

१ वो.लमुत छुम अमर अकालै भ्रम. काल. सर्पन नाल
मो. कलाव चलनं काल.ञि ज़ालै घट०

२ ताप रुस्त तर. फो.जि संगरमालै खसनस छुम बो.ड बाल
निष्बुद्ध वृद्ध छुस दिम कल छ़ालै चट०

३ शक्ति पात सू. तिभिक्षुकस कृपालै दात. वन. छुस कंगाल
ज़ीठिस मज़िलस वात कमि हालै चट०

४ अख अ'छि नाठा करत श्याम लालै अशि सू.ति भ. रिथय छि लाल
ना'लि छुनहोह भक्ति भाव मु.क्त मालै चट०

५ नेर.हा मंज गरि के ज़जालै टोठ छुम अन्न धन माल
तत मंज़ थावत त्याग. ख्यालै चट०

६ हाव. का'चाह देह. भ्रमचिय चालै का'लि मा मुख हावि काल
सूक्ष्म स्थूल म्योन रछ त्याग. संभालै चट०

७ अन्नज़ल असि सान भोग इत. सालै भरनाव अनुग्रह थाल
आत्मा तृप्ती दिम बो.छि क.च चालै चट०

८ असि कर्म. हीनन दीन. दयाल काम क्रोध लोभ मद गाल
दुख हार गगनस खार पातालै चट०

९ का'त्याह बलवीर समयिकि हालै स.ह आ'सित गयि शाल
राज़न नाव प्यव खरि दज़ालै चट०

१० पुन्यवान थव शांतियि व्रत पालै स्योद कर हो.ल कपाल
नत. कर्म. लेखा क्यथ. पा'ठि डालै चट०

११ या'र ह्यु सब्ज़ कर मृत. हर्द कालै पशु भाव.चि लशि ज़ाल
मा.क्त बनाव त्राव अषत्रे चालै चट०

१२ प्रेम.चि जमुना वंछ नाल. नालै जन छुस माला माल
तन नाव गोपियि ह्यथ गोपालै चट०

१३ ज्ञान मुख हाव त्राव मलालै म्य म. बनाव गा.फ शाल
स्फूर्नायि सीमिञि म'शराव छालै चट०

१४ फीर्य फीर्य क़्या वाति ब्रज बंगालै ह्यथ काशी नैपाल
मुख हाव पननि देश, प्यठ बंगालै च़ट०

१५ प्रवृ'च़ मंज़ निन्ष्कल. कल वालै निवृ'च़ नश. दित डाल
'कृष्णस' मोक्ष मस चाव प्याल. प्यालै च़ट०

० ० ० ०

भजन न० १४६

स्मरण पन.ञ दिच़ा'यनम प्रेमुक निशान, व्य'सिये ।
र'छ़रुन तो.गुम न. रोवुम ओसुम न. बान. व्य'सिये ।।

१ पत कालि छुम न द्युतमुत सो.न मोखत दान व्य'सिये
अ'नि सारि क्या लभक बोञ तिम मोखत दान व्य'सिये०

२ वां'लिजि मंज़ थवुन गोछ हावुन थोवुम अथस प्यठ
राह कस छुक कोर म्य पानस नुकसान पान. व्य'सिये०

३ हावुन छ राव रावुन चावुक समर छ. खा'मी
थावान ज़ि छाव. बापत बानन छि ठान व्य'सिये०

४ यन सुय निशान सोवुम तन म'च़ ब. फलबाल
न्युन ह्योन न कैंह ति फ़ेरान छर, वान. वान. व्य'सिये०
उत्तर

५ व्यसरुन पनुन वनस क़्या वननस ति वार मा छुम
बुथ मा सम्यस दोहस तुथ्य गछ कोत शबंन व्य'सिये०

६ यछ पछ म. हार ब्याखा ह्यत यूर्य वार्ति कांछ़ाह
तस छा क'मी निशानन भ'र्य भर्य खज़ान व्य'सिये०

७ डोलान कोहन वनन मंज़ शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़ क'त्याह निशान. व्य'सिये०

८ व्य'सरित ड'लित पथर प्यथ बुथ क्या दिमव त'मिस निशि
पुत फेरनुक पकान छा युत ह्युव बहान. व्य'सिये०

६ मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पोत छोर्या तसुँद मुहब्बत
पैबंद यि आदनुक छा शुर्य कारखान व्य'सिये०

१० दिल फुटिम.त्यन छु तोषन य'च गारि'मत्यन छु रोशन
गछ व'र्यमत्यन सुदामन- प्रिछ गा'यबान व्य'सिये०

११ अंदि प'खि तति छु आसान वोद. ब्रोर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित लौलकि तरान, व्य'सिये०

० ० ० ०

भजन न० १४७

१ स्मरणि चाञि पाप सा'री हा'री-हारै पर्वत.चि हा'रिये ।

२ संकट कट छक हे मुकट धारी
तेज़ चानि प्रज़लन आव संसार
सिंह आसन चिय़ छय सवा'री हारै०

३ गौरी नावस लगोय पा'र्य पा'री
चाव प्रेम दो.ध चडवा'रिये
ज़ाञनक अभिनव गुप्त आचारी हारै०

४ न'टि लछलि आकाशन ग्रटन ता'री
नोन नीरित बोन महिमा चोन
परम शक्त मा'ञिक शंकराचा'री हारै०

५ शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो.पा'री
गुलि ग'डित नन्य वुन्य या'री म्य कर
ह्यथ नखस नियनक मं'ज़ कष्टवा'री हारै०

६ नित्य सुमेरुस ता'ञ ला'र्य ला'री
कति आ'स वातन.चि शक्त ओस सख्त
पर्वत. प्रदक्षिण. पाप निवा'री हारै०

७ शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो.व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल भोव वाल पापन हंदि बा'री हारै०

८ आद्य शक्त पान.छुक सर्व अधिका'री
पूज़ा करव.नि सा'रिय च्यय
साध सत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचारी हार०

९ चक्रेश्वरस य छु जय जय कारय
सार्यव.य रो.ट दरबार.य सुय
सिद्ध पीठ प्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री हार०

१० चानि सू.ति सा'र्य देव जीव व्यवहा'री
चानि सू.ति उल्लसन आव संसार
चानि सू.ति सा'नी छय दुनियादा'री हारै०

११ अष्टादश भुज़वय सू.ति पर्वत.
हित.कार. पुछि बत. बा'गरान
सर्व व्यापक छक सर्व उपका'री हार०

१२ कर्म लेखा छक पान. परम शक्ती
कर्म सान्य पनत्रिय भक्ती लेख
क्रत कर्म फल छक दिव. व.नि सा'री हारै०

१३ अज़पा गायत्री ज़पहोथ अंन्दरी
श्री सुन्दरी योग. न्य'न्दरे मंज़
मन. प्राण. ध्यान ज्ञान. विचारी हारै०

१४ परमात्म. रूप. छक ज़गत.चि साक्षी
जितेन्द्रिय इन्द्राक्षी छक
प्राण शक्ति सू.ति छक पान. व्यवहा'री हारै०

१५ पान. छक योगी पान. ज्ञा'नी
वाणी रूप भवानी छक
बुज़ सू.ति ह्यस रटन.चि विस्ता'री हारै०

१६ चामर लाग. होय पोश चा'र्य चा'री
चण्डी च.य छक चेतन स्वरूप
चित्त शक्त छक चेनव.ञ चोपा'री हारै०

१७ मोह ज़ाल मंज़. नेरनुक उपाया
कर राज़. हंसुन साया त्राव
हंस नाद सू.ति तार यमि हंस द्वा'री हारै०

१८ हीमाल पर्वत.ञ राज़. कुमा'री
चरणान लगोय पा'र्य पा'रीये
'कृष्णाञ' भक्ति बोज़ कन धा'र्य धा'री हारै०

० ० ० ०

भजन न० १४८

सनियासय हा गोसाञे कुञि कञे इखना वञे।

१ जटि मंज छय गंगा जा'री जन छि वसान अमृत धा'री
सूर. भस्मा मलिथ छु तने कुञि०

२ डय्कस प्यठ छिय इम त्रे नेथर शूभवञ ज़न पंम्पोश वत्थर
वासुक नाग छुय योञि कञे कुञि०

३ जाय च्य रटथम शिन्या शियन छायि छय्क ह्यथ रूदहम नयन
सर्व व्यापक छुख हनि हने कुञि०

४ खास वृषभा छुय वाहनय सैर. करान छुख त्रभवनय
छुय च्य उमा खोवरि कञे कुञि०

५ पान म्यान्यो मो नाज़ तने काल वरिथ य ऽथ सु.र बने
शिव च. गारुन मंजबाग मञे कुञि०

६ आ'रतिस कास्तम आ'रचरय घट. कास्तम अमरीश्वरय
मु'ख म्य हावतम हरमुख कञे कुञि०

७ चोन भुज़न छिय आयुधा शंख चक्र कपाल गधा
सारिन.य मंज छुख अन्दकञे किञ०

० ० ० ०

भजन न० १४६

१ समया स्यठा गोम ललनावान यथ अरमानस
माज्य शरिकाय कर लागेय लोल पोश च्यानिस पादस

२ ओसुस बुँ बालक, निशबुद्ध अन पड़ तू अज्ञानी
ओसुस न ज़ानान ज़गतस मन्ज़ कुसछि म्योन माज्यी
वऽन हसि आसे छुस बुँ आमुत च्यानिस द्धारऽस
माज्य शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

३ अन्य गट करनम, मोह मायाय यथ ब जासय
अमि चानि कृपाय, अमि गटि मन्ज़ नबऽरर द्रासय
आसे च्ये निश योर, खोर थावतम हृदय किस मकानस
माज्य शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यनिस पादस

४ आमुत शरण सुछ मत त्रावतम पानस निश दूर
लुटावानम नत, पत लारान छम इन्द्रय चूर
दिमतिच बुद्धी बनि म्य तिच शुद्धी अन्तः करणास
म्याज शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

५ संसार कुय ज़ाल वारिथ छुम म्य ब्रोठ कणे
वुछ वुछ अथकुन, छुस बुँ ग्लान हने हने
म्याज़ भय कास्तम, रोजतम सन्तृष्ट म्य अनाथस
म्याज़ शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

६ यथ संसारस बढ़ि बढ़ि बलवीर विछुम इराण
च्यानि दयाय रसतुय आसि युस सुई छुय हाल हराण
तऽर भवसरस तिम, थप यिमब कऽर च्यानिस नादस
म्याज शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

७ यस कर्म पूरय आसि तमिस च्यानी दया
जगतस मन्ज़बाग ननि प्याठ तस बनि जया
करतम म्य दया युथ बूँ रोज़य मन्ज़ शरण भावस
म्याज शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

८ म्याज क्या गछी कम, यलि च़ बोजख म्यानी ज़ऽयरी
गछि हयम ज़ानी, चलिम म्य खाऽरी बनिहम्य याऽरी
करह बूँ स्मरण चानि नावुक दोहस त रातस
म्याज शरिकाय कर लागय लोल पोश च्यानिस पादस

--o--

भजन न० १५०

सुःख त सम्पदा दाध्यन दवा, माज्य भग्रान वुन्किनस
दाध्यन दवा रोगन शफा माता भग्रान वुन्किनस

१ क्या छु गम यस नखि आसख
सपदन्स मुशिकिनल हल
यीर गमितन भव सागरस
माज्य तारान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

२ पूर्व पच्छिम किन दक्षिणी उत्तर किन
माज्य रच्छवुँय पानय
आसवुँञ मुख खसवुँञ सुँहस
माता फेरान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

३ गुल्य गंडित आमुत गदा
लायान ड़ेड़ितल सदा
ज्ञानिक तअरि पनन्वि अथव
माज्य मुच़रान वुन्कनस ।।०।। सुःख०

४ साहसि बज़ नरि योस छि दार्वुन्य
रच्छवुन्य यस छः दासन
क्षण क्षण माज्य कर्मक न्याय
माज्य अंजरान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

५ यस करान छक पर्दपूशी
वुच्छि कति सुय सखती
शर्णा गत्न रोन्यि दामान
माज्य त्रावान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

६ छक चः आसवन्य ज्ञानरूपी
मुखय दाता ईश्वरी
त्रयशि हत्यनय यूग अमृत
माता चावान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

७ भय र्हवनय छक चय माता
पापमोचन चण्ड़िका
खोफजदनय खोफ ज़नमक
माज्य कासान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

८ त्रशूल सीतन खड़क सीतन
माज्य रच्छवुन्य भक्तिन
ज़ार सान्य पनन्वि कनव
माज्य बोज़ान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

९ रंग रंग माता तंग आसय
अज़ बासयोम डोऽख चोन
पान पुश्रित च्य बुँ अर्पन
माज्य गंज़रान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

१० वारे वारे सअरी ईवान
दुःख त द्येद माज्यि भावान
सर त्रावान तल पादन
माज्य टोठान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

११ कर्मच्य वदल जन्मच्य हान
विज़ि विज़ि करान नीमज़ान
साकिया मुय फिर म्य बानन
माज्य चावान वुन्किनस ।।०।। सुःख०

१२ कोमल आमुत छु पोश हय्त
हुर अठम दोह सु योर
पोशमोत मित च्यार चाऽरी
माज्यि लागान वुन्किनम ।।०।। सुःख०

--o--

भजन न० १५१

सत्गुरू रछतम पादंन तल

१ सत्गुरू रछतम च्य पादन तल
बु लागय पूजाय ही मसवल
ज़ार पार च़ म्योन ग्वर बोज़ जल जल
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

२ पूजा करहे बुँ भावनाय सान
अरपन बुँ करहे तन मन त प्राण
भिक्षाय प्राराणा छुस बुँ बरतल
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

३ जन्मस बुँ आमुत कर्म हीन
भक्ति मंगान छुय भक्ति हीन
अनुग्रह च्यानि च्यलम हृदयस मल
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

४ च्याने दरबार नेरै न ख़्याली
आमुत गद्या छुस च्य सवाली
गोब बोर नखि छुम म्य वाल जल-जल
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

५ कलियोगस मन्ज़ बुँ आसे जन्मस
मोह अन्दकारन बुँ कोरनस मस्त
कांस मोह अन्दकार बयि गागले
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

६ विनती म्येन बोज छुस नादान
वनय बुँ कूत पानै दिम म्य वरदान
भक्तिस मुश्किल पानै करसे हल
सत्गुरू रछतम च्य पादन तल।।

--o--

भजन न० १५२

सदा शिव सऽमियो कर म्योन चारय

सदाशिव सऽमियो कर म्योन चारय।
यि ब्रह्माण जन्म मा मेल्यम दुबारय।।

दया धर्मय विचारय सूत्य वारय।
सहा रोजतम तुँ बोज़तम कथ तारय।।

छिं अँख कँथ यी बनञिन गऽच्छ म्ये पनऽञ्य ज़ान।
यऽमी जन्मय नेरुन गोछ़ म्ये यि अरमान।।

सथयं बासुन तँ का सोऽन गोछ़ म्ये अज्ञान।
मरून गोछुस नँ पोष ह्युहँ मूर्ख नादान।।

मरण वख्तय स्वोरुन गोछ़ोस शिवय ध्यान्।
अचिथँ पथकुन गछ़िथ बुँ त्रावुन गच्छुँस प्राण।।

यह्यय कथ नऽञ्य किथ कऽञ्य छय संगपारस।
चन्दुँन छेंय यि हऽट तें तथ् कोरुण सोऽँन।।

सो हऽट यथ लऽज़ि तॅ तथ् तोरुण पनुन गुण।
हॅचि तॅ कऽिन यॅलि युथ आसि युथ स्वभाव।।

वनै क्याह आसि क्युॅथ अॅदऽ शिवसुॅन्द्य नाव।
छुॅ अस्तोत म्ये दोहय शिव शिवय कोऽॅर।।

छुॅ अस्तोत म्ये दोहय शिवय वृथय् दोर।
छुॅ अस्तोत म्ये दोहय ओस शिवसुन्दय लोलॅ।।

छुॅ अस्तोत म्ये शिवय ज़ोन मोजॅ त्य मोलॅ।
तुत्ता चऽॅनी म्ये यिछ़ पंऽज़ या अपऽज़ वऽञ्य।।

यच्छ़ाये चाऽॅनि कॅऽड वॅऽणी म्ये निशं नऽञ्य।
नं ज़ानय पाठतय पूज़ा या सुख नादय।।

न ज़ानय जप व्रथ या च़न्द्रायम तापय।
सदाशिव सऽमियों कर म्योन च़ऽय चारय।।

यि ब्राह्मण ज़न्म मॉ मेल्यऽम दोबारय।
दया धर्मय विच़ारय सऽॅत्य वारय।।
सहा रोजत़म तॅ बोजतम जारपारै।।

--o--

भजन न० १५३

१ हलमव हलमव गुलाब शारिका पूजि लागय
व्यन् पोश बिय पंपोश राज्ञन्यायि पूजि लोय

२ पर्बतस प्यठ रोजान अरदाह भोज धारान
भक्तिन छक दिवानं वर शारिका पूजि लागय

३ च्यय ववान चक्रीश्वरी च्य हय माता पार्वती
शक्ति हजं छक सागर शारिका पूजि लोय

४ दुर्गा छुय च्योन नाव मनसय असि लोलआव
दुर्गति सअन्य दूर कर शारिका पूजि लागय

५ महिषासुर गोलथन पाताल च्य वोलथन
अरंत्यन असि दया कर शारिका पूजि लागय

६ करि युस चन्य सुमरणा दुःख कति तस रोजन
दुखनय च्य दवाकर शारिका पूजि लागय

७ बत्य छुस पत्थर पयोमुत मायायि भ्रोम रोवमुत
माता वन्य यय अथरोट कर शारिका पूजि लागय

८ चय हय म्योन मोल तय माज्य चॅं म्योन बन्द तऊ बांधव
चय सिवा काँह न सोर शारिका पूजि लागय

९ जंगद अम्बा चय वनान पापन चय गालान
पापन म्यनिन क्षय कर शारिका पूजि लागय

१० डेकि छुय सुन्सुंद ताज हटि छुय मुक्तय हार
छख सहस प्यठ चय सवार शारिका पूजि लागय

११ आमुत छुसय शरण चरणन प्यावान परनिय
चरणन तल म्य थव जाय शारिका पूजि लागय

१२ चय छख मूक्ष दाता चय हय माज्य सिद्ध दाता
अष्ट सिद्धि आधीन छय शारिका पूजि लागय

१३ पापव छुस वलमुत नाव च्योन जाँह न सुरमुत
पापन म्यानन नाश कर शारिका पूजि लागय

१४ आव युस योर सवाली दरबार द्राव न खाऽली
दिम दरशुन चलिम शर शारिका पूजि लागय

१५ कर्म खुर छक कासान हल्य अच्छर नाह वनावान
गछितन्य म्योन ज़रज़र शारिका पूजि लागय

१६ मनसय मंज़ राज़तम कष्ट संकट कास्तम
अलोक छुय वनान ज़ार शारिका पूजि लागय
हलमव हलमव गुलाब शारिका पूजि लागय
व्यन् पोश ब़यि पंपोश राग्न्यायि पूजि लागय ।।

--o--

भजन न० १५४

शंकर लीला

टेक हल मव हल मव गुलाब शंकर पूज़ि लागय
भंगमत्या भस्माधर शंकर पूज़ि लागय

१ रोजान धुख अमरनाथ छय उमा देवी च्य साथ
सूरमत्या भस्माधर शंकर पूजि लागय

२ नंगे मत्या सूरमत्ये राज़ान छुक च कत्ये
वनतम कति च्योन घर शंकर पूजि लागय

३ रात द्यन हामयो ज़ाग प्रारय शिशरम नाग
च्यानि नावि मंज सीत बुँ तर, शंकर पूज़ि लागय

४ आसान च कालाश कोह, पानस मारान छोह
च्यानि दूनि हुंद सूर मल, शंकर पूज़ि लागय

५ नाव च्योन छिय मृत्युंज़य, पापन सानिन कर क्षय
च़्यय वनान छिय महेश्वर, शंकर पूज़ि लागय

६ हर मुख छुक रोज़ान जार सअन्य छुक बोजान
हर मुख के हरीहर, शंकर पूज़ि लागय

७ कैलास छुख आसान सूत्य सूत्य असि भासान
भक्तिन छुख दिवानवर, शंकर पूज़ि लागय

८ गंगा छय च्य जटनय, नाश करान संकटनय
छिय वनान च़्य गंगाधर, शंकर पूज़ि लागय

९ शक्ति छिय च़्यय सूत्यी तंसज छय च़्य प्रीती
बोल छिय करान जानावर, शंकर पूज़ि लागय

१० त्रिनेत्र यलि मुचरुथ, कामदेवस भस्म करूथ
देवतान चा़यि थर थर, शंकर पूज़ि लागय

११ वासुक छुय च्योव हार भव सागरस म्यति तार
छिय वनान च्य दिगम्बर शंकर पूज़ि लागय

१२ बोज़ कनदूर म्याने सूरमत्या गोसाने
गछितनय च्यअ म्योन, ज़रज़र शंकर पूज़ि लागय

१३ कर कयाह वन क्याह बुँ पादन वन्दन अऽछ जुँ
तवय हा गोस विस्मर, शंकर पूज़ि लागय

१४ शरमन्द छुसय स्याठा नाव च्योन सुरमय
गलती छम सरासर शंकर पूज़ि लागय

१५ अनुग्रह चिय नज़राह करतम मशरावतम न जांह
आमुत छुस स्याठा अर शंकर पूज़ि लागय

१६ पतिमि गरि छुट तय गुट तेलि करजिम अथरौंट
प्राणन यलि लग्यम दर शंकर पूज़ि लागय

१७ आरूत आस शरणाय, पादन प्यावान परनय
भविक मय मुचरूम भर, शंकर पूज़ि लागय

१८ बल्य पोश त धतर पोश शंकरस छिय करन खोश
दुछि दुछि लागर्य अम्बर शंकर पूज़ि लागय

१९ शंकर असि मसअ रोश, शेरि लागय भाव पोश
चन्य लीला च्य निश पर, शंकर पूज़ि लागय

२० ओरुत छुस वनान ज़ार शंकर यतीनय आर
च्य सिवा गछमा बर, शंकर पूज़ि लागय

२१ आलोक छुय प्रारान नेत्रव खून हारान
शिव शंकर महेशवर शंकर पूजि लागय
हलमव हतमव गुलाब शंकर पूज़ि लागय

--o--

भजन न० १५५

होश, पोश, नूल थव कन
वाणी वन हारि लोलो ।।

१ राधा कृष्ण कृष्ण वन लोलनि अशि दारि लोलो
रंग किञ तस ह्यू वन वाणी०

२ गु'ड कर मन बिंदराबन अद. नेर ब'रि त. दारि लोलो
श्याम रूप कुछ हन हन वाणी०

३ चाव वीद कामदीनन थन भखचि हंजि चडवारि लोलो
चथ बनि आनन्द गण वाणी०

४ तती व्रच़ गूपियन कुरमुत छु मन तारि लोलो
व्यापक वासुदीवन वाणी०

५ प्रेम सू.त्य कर मन बिन्द्रा बन नाद लायस प्यार लोलो
भक्ति भाव. अख बनि दु'न वाणी०

६ बुज जसुदा छ.स ललवन मूह पूतनायि मारि लोलो
यछ बबि दु'ध चन सतज़न वाणी०

७ भक्ती मंज वन अरज़न रथ. बान सुय लारि लोलो
किसि प्यठ छुस गोवर्धन वाणी०

८ मन. बाजे कृष्ण नाव खन धीर. अल्मास तारि लोलो
गलि पानय क्रूध. दर्योधन वाणी०

६ हिमसाये कंसस मारन सूक्ष्म दारे तलवारि लोलो
माझि यइम राज तस ह्यू ज़न वाणी०

१० खटयू खटयू छु नोन बासन अंदरिमि छपि छ़ारि लोलो
चित् वुज़मल. घट कासन वाणी०

११ वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो
सब्ज ज़न लगि च़रणान वाणी०

१२ दास यति राम खेलन व्यास नारुद त. लारि लोलो
बोलनावुन शुकदीव ज़न वाणी०

१३ यूगियब भूगिथ भूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो
निर्मल निष्कल निरगुण वाणी०

१४ कृष्णस टोठ विष्णारपन नत. यति क्या लारि लोलो
जान्य मंज तस ति सोहम अन वाणी०

० ० ० ०

भजन न० १५६

१ हतो ज़ीवो तसंज़ थव कल च़. प्रावक सर्वदा मंगल

२ खबर मा छै ब. कव. ज़ायोस करनि क्याह योर ब.य आयोस
सु मेहनत कर लभक रुत फल च़०

३ म. रावर क्षण त. दिन तस विन सोरुन हरदम च़ ज़ीनित मन
प्रेयम ज़ल च़य मनुक मल छल च़०

४ सतन सू.ति च़. सत् सांपन च़. सत् आ'सित असत् मो बन
अच़ल आ'सित म. बन च़ञ्चल च़०

५ क'रित तय वोथ च़. थानन फेर र'टित दम दम क'रित च़.य नेर
वज़िय ज्यीति वुज़ी शशिकल च़०

६ इमन अंदर नज़र था'वित पनुन तेज़ा दियम हा'वित
सिर्यि च़न्द्रम अग्न वुज़माल च़०

७ न्यज़ितहठ वठ च़. इन्द्रिय ज़ाल यि काम क्रोध लोभ त.
मोह मद गाल
उदासीन रोज़ त. भोग अन्न ज़ल च़०

८ गछुन युन योस गछ़िय च्यय हान
तम्युक काहण च़. ज़ान अज्ञान
विच़ार कर बनि सू मुश्क्रिल हल च़०

९ च़. भूतन करत. विसर्ज़न स्व आत्म चि ज़ान आबाहन
ज़्यनह मरण. चि च़लिय गांगल च़०

१० च़ मित्रस अथि पुनन जर थाव समुद्रस वस त. वस्वास त्राव
च़ लाल खारकत. लाग डूंगल च़०

११ हंस आ'सित च. मो बन काव हंस बन दीघ त. पोञ अंज़राव
स्व स्मृत अन सिरन मो डल च०

१२ अं'द.र्य किञ सारिकुय कर त्याग न्यब. र्यकिञ सारिकुय थव राग
वैराग तनि राग. जाम वल च०

१३ च़. 'नीलहकंठ' कर सन्यास नदी उपाध पानस कास
च. सू.तिन तत समुद्रस रल च़०

० ० ० ०

भजन न० १५७

हीमाल. पर्वतने घरि ज़ायक ।
आयक करने ज़गि पालना ।।

१ परम शक्त परम. शिव छ़ांड.नि द्रायक
कर्म.सू.ति सां'पञिक शिव शक्ति रूप
भगवत् माया बोज़न. आयक आयक०

२ परमात्म. सिर्यि मंज़. तेज़ा द्रायक
प्रज़ल.नि आयक संसारस
यमि मंज़ द्रायक त'थि मंज़ च़ायक आयक०

३ ज़गत.चि दाता छक फल दायक
यस च़.य दिख तस दियि शिवजी
सुय च़्य लायक च़.य तस दायक आयक०

४ वरण इयिथ ह्यथ वैकुँठ नायक
वीगिस खसनस छय छायक
मान.थैत्र पतिव्रता सती द्रायक आयक०

५ 'कृष्ण' लोल. तारव सैतार वायक
वाणी भवानी च्यय गछिय सिद्ध
सुय करि नाद बिंदु बोज़नस लायक आयक०

० ० ० ०

भजन न० १५८

हे कृष्ण, दया छय ना गछ़न, भ्रम दिथ मच़न गोख।
भ्रम दिथ मच़न न्यन्दरति हच़न, भ्रम दिथ मच़न गोख ।।

१ क्याह रुत समय ओसुय त्यले, यले च. राधा ह्यथ आ'ख
प्रेम. स.ति रास. मंडलस मंज़ नच़न। भ्रम०

२ अन्तर बहिर रातस दोहस, असि भाग्य. बुठय स.ति
तोलान प्रेयम बोज़ तारच़न । भ्रम०

३ दर्शन दि करूणाकर. भक्त. बत्सल, उदास क'रित गोख
अथ रो.ट कर व्रच. गोपियि क'च़न । भ्रम०

४ गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास
आशचर-इ कस ओस बो.ज़ मंज़ अच़न । भ्रम०

५ माया मोहन चा'ञ मन मोहन, मोहन भ्योन.न भ्योन. ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुन्यन । भ्रम०

६ अमृत रूपी दर्शन. मो.खय, व्याकजि गा'मच. छय
शुर्य ज़न बो.छे हच़न ब्रछन । भ्रम०

७ छ़यन कमि सो.नि साञि द्युतुय का'रिस, कन क'मि भ'रिय सा'नि
मन सोन इनस छुय ना पच़न । भ्रम०

८ अमृत. वषण. नारायणो, शेहलाब मन.य सोन
सन्ताप भव सागर. दज़. मच़न । भ्रम०

९ असि लोल चोनुय गन्योमुतुय, कमि सो.नि द्युतुय च्य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच़न । भ्रम०

१० व.रय च्य कर्यथ विश्वम्भरय, बरय अच़ख ना
छुय ना सोन ज़र. ज़रै गछ़न । भ्रम०

११ त्या'गित लजाथि क्रा'निस द्राये, सेवायि आये च्यय
पज़्या. अनह्यों.त लागुन ह्यच़न । भ्रम०

१२ आदीन अनाथ भक्त आ'र.ती, पालन छि धर्म त. दान
हितकार अपकार करान गछन । भ्रम०

१३ श्रीधर. करुणाकर. श्याम. सों, दर., ज़ानान च्य छि भास्कर
भ्यो.न छुख न सति सति आ'सित ज़च.न । भ्रम०

१४ प्रेमन त. वीणायि आनन्द स्वरन, भ्रम दित न्यून मन सोन
ब्रजवा'सी दा'सियि म'लि ह्यचन । भ्रम०

१५ प्राणो ! यी च्य क'र.थ वा'णी, फीरित ब. इमोव. सूर्य
दुबार.मो.ख होवुन न. मोह. हच़न । भ्रम०

१६ केशन त्रा'विथ भूषण पूरित, डेशन छिन. मो.ख चोन
दर्शन करन बाजे मच़न । भ्रम०

१७ ज़ाग़ी न. असि चा'ञ सेवा क'रित, पूजा त. तो.ता केंह
दया कर असि विचार रछन । भ्रम०

१८ पज़िहे नतय छा धर्म करुन, फीरित न. नज़र दिञ
त्या'गित मथुर्राय गोख अछ़ रछ़न । भ्रम०

१९ चित बुद्ध मन प्राण अर्पण क'रित, ध'रित छु चोनुय ध्यान
सुय ध्यान खेलान असि ज्ञान. वचन । भ्रम०

२० रछ असि क्षण, क्षण, सारिय निशे सारिय ज़न राज ह्यथ
'केशव' आव आपदायव त्रचन । भ्रम०

० ० ० ०

भजन न० १५६

हे दय. ! बोज़ म्या'नि लोल. नाद कूत गोमुत छुस बदाद ।
इथि दुख. मंज़ कर म्य' आज़ाद दयाल. बोज़. फयरयाद ।।

१ थि छु संसार भ्रम त. बाज़िगार अत ज़ोनुस न. कांसि अ'कि
ज्यूठ सो.दराह बे शुमार तार जोनुस न का'सि अ'कि
यथ न. अत आसि तत कति आद दयाल०

२ मोह. आवल नि फाट. नोवनस छ्रट. छ्रट. कर. नोवनस
गोस बांबरि थर थर छम नरि ज़ंघ. वाय. नोवनस
वांति लगनस दिम विवेक. पाद दयाल०

३ देह इंद्रिह त. छि परिणा'मी मन छु इहु'दुय स्वामि
अथ मनस पत. पत. दोरुन सो.छय बोज़ ह.य खा'मि
संकल्पन ह.ज छस उपाद दयाल०

४ चाञि आशायि च्यय कुन आस छ्रट. छ्रट. सकट म्य कास
छुस चोन दास प्ययिनं पास हृदयस मंज कर म्य' वास
ज्ञान. अग्न ज़ाल म्या'नि अपराध दयाल०

५ संकल्पन त. विकल्पन स.ति गव म्योन वर्तन
विवेक. नो.म शिल वासन चूरि नियहम हन हन
होश डालान छुम म्य' प्रमाद दयाल०

६ गोस. क्याह गो.य क्याज़ि रूठहं छायि छय्प दित ब्यूठहं
दूरि रूज़ित लावि मूरे नार ललूवन थोवथम
दिम दर्शुन मन गछ्यं शाद दयाल०

७ यम नित आसि सम. चि़त मन सुय ज़न गव संतज़न
श्रुतियन मज़ ति छि वखनन यी छ वोंन्मुत व्यासन
सुय छ तपज़प सो.य छ'य समाध दयाल०

८ आसि करवुन अज़पा ज़प धारणायि मज़त्रावि डाफ
अंतः किनि दूर को.रमृत संसारुक संताप
छुस न. शुमार छुस न. तेदाद दयाल०

९ हे दयालो. ! देह त्याग. विज़ि नेर सन्मुख पान
वृत्त म्या'ञय पज़ि रज़ि स.ति था'विज़्यन समाधानै
दुभर्ल छम पान. युन याद दयाल०

१० निर्वाण. पद दित. 'विष्णास' चावतन विज्ञान रस
रोज़ि अन्द. कनि शुमारस मन. कामनायि चलनस
हृदयस मंजं रटि चा'नि पाद दयाल०

० ० ० ०

भजन न० १६०

हे दय. ! बोज कनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ।
करयो अर्चनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ।।

१ ससार आवल.नुय यि छु सनि खोत. सो.नुय
अ'थि मज़ ह्यनै च्यये०

२ चोवनस मोह. मसै रूदम न. दान ह्यसै
उन्मत गोस तनै च्यय०

३ हरुम म्य कष्ट हन हन हरि हर छुक थवुम कन
आ'र्चर आलवनै च्यय०

४ सूक्ष्म निर्मल करुम वृत प्रत्यक्ष पा'ठिन ब. वुछहत
स.ति ज्ञान. लोचनै च्यय०

५ चितस सयकल करुम पूर अज्ञान मलइ गछयं दूर,
हे टाठि तिरज़नै च्यय०

६ पादन तल. ब. मरै चाञि.य स्तुता करै
वार. बार आ अनै च्यय०

७ वासनायव नाल. रो.टहस संकल्पव व. चोटहस
कोडहस पन. पनै च्यय०

८ दित सत्सग म्य हरदम इयं शांती त. शम दम
ब'नित आज़ाद बनै चयय०

६ 'विष्णा' थावतन समाधान चल्यस यत्र. देह. अभिमान
मंगन छुय क्षण. क्षणै चयय०

० ० ० ०

भजन न० १६१

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो ।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो ।।

१ कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लु.गमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज़ छम गांगल. लोलो अनु०

२ लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः कारणान
विवेक. पाञि पान बो छल लोलो अनु०

३ जान ज़ानी ज़ांह तिनो ज़ोनमख च़य
ज़ान दिम तिछ़ ज़ा ज़ा'नित तव गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह डल. लोलो अनु०

४ छुस ब. लो. गमुत संसार. सर.सय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मशअल. लोलो अनु०

५ प्योमुत छुस गटि मंज अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी छम चा'ञ अख वुजमल. लोलो अनु०

६ बान. हीन बो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७ यम्बर ज़ल बो.म्बरो छस यो प्रारान
वेरि चाञ पान छस पा'रावान
वन वन. छस व्र'च़ आरवल, लोलो अनु०

८ लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलज़ार
पोशनलो अज़ बलो छावु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो अनु०

९ हा 'विष्णो' पननुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि वनि सरतलि सो'न
चि़त आ'नस करत. स़-कल लोलो अनु०

० ० ० ०

भजन न० १६२

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल ।
ज्ञान कुय लाग अ'छि म्य अंजन अज्ञान कुय पोह म्य गाल।।

१ भवसरै फो.टमुतुय छुस मोह मायायि वो.ल म्य नाल
छुस न. ज़ानन बोठ ख'सित वोञ अथ, रोट करतम दयाल०

२ सत् असत् विचार छुम न काम. य'न्दिलि छिम पतै
असत.चि हाँ'कल म्य चटतम हावतं सतचिय वथ.य०

३ काम क्रोध लोभ मोहन छुस ब को.रमुत ज़ेंरबार
भवसागर दुख घर, मंज़ अथ. रो.ट करतम दयाल०

४ दीन वतसल रछ पद्यन तल आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव किञ शांती म्य बनिहे वैर. भावस गछि अभाव

० ० ० ०

भजन न० १६३

१ हे प्रभु ! अज्ञान का'सित योग दिम विज्ञान दिम ।
अंग हीनस दिम म्य काया मुर्द जिस्मस जान दिम।।

२ शक्ति र'स्तिस दिम म्य शक्ती भक्ति र'स्तिस दिम म्य भक्ती
एक भक्तिस दो.शर्व दिम ई म्य धर्मस दान दिम०

३ पकनस क्युत ओन त. रोग छुस भक्ति क्युत दुस न्यथ नोन
ज्ञान वाल्यन योगियन क्युत गिदनुक सामान दिम०

४ हीन छुस विद्यायि अंदर दीन छुस श्रद्धायि मंज़
हान छम प्रत कुनि कर्म.चि सत् जनन मंज़ मान दिम हे०

५ ब्रोंठ कुन पानस अ'नित श्रवण करुम व्याख्यान दिम
लूक युथ मोहित गछन त्युथ मुखस निर्वाण दिम हे०

६ क्रम गछ़न अद ईर. खस हिवि होशकुय तुफान दिम
गोफ. शाल खोच़न म्य पान सहसुद ह्युव त्राण दिम हे०

७ जय जय श्री रामच'न्द्रस त'मि सुंदुय वर दान दिम
क्षय गछय्म इन्द्रिय शुत्रन वीर धर्मुक कान दिम हे०

८ यसि युक्तियि वनि मुक्ती तमिकुय विज्ञान दिम
दित मनोजय वासना क्षय सत स्वरूपचि ज़ान दिम हें०

९ सर्व मंगल परम सुख दिम हर्ष दिम कल्यान दिम
अंत कालस मज़ ख्यालस सत् स्वरूपक ध्यान दिम हे०

१० बाग दिम बंगाल दिम हमाम दिम डालान दिम
रायि सोस्तुय इम बनन तिम ज़ायि आलीशान दिम हे०

११ जीवतुक भ्रम चलन बापत पानसय ह्युव पान दिम
ध्यान 'कृष्णस योग ह्यत दिम भोग अमि यमि सान दिम हे०

० ० ० ०

भजन न० १६४

होश दिम लगहो पपोश. पादन ।
हा साधन हं.दि साधो हो ।।

१ यगियन ह.दि योग. प्रा'णियण ह.दि प्राण.
ज्ञानियन ह.दि ज्ञानो
चानि प्रसाद. स'ति सिद्ध छि तप साधन हा०

२ अच्युत. चानि स.ति चित्त.कुय चेनुन
नत. गछि मेनुन क्रंजल्यन प्रोञ
प्रेम ज़ल. छुय वुज़ान भाव. नाग.रादस हा०

३ ब्रह्मण ज़न्मस इथ छुम न ब्रह्म स्मृ'च
वुछ म. म्याञि राक्षस प्रकृ'च कुन
चानि सच भक्ती चा'ञ क'र प्रह्लादन हा०

४ पूर्ण पुरुष. छम चा'ञी लादन
प्रणव. पान वद.होयय चो.न पादन
नाद. बिंद. कन थव सान्यन नादन हा०

५ विचार. नेत्रय जा'ञ गाश अन छि अ'नि
हर. हरमुख. च्य दिमहोय व;नि
निष्कल. मन निष्काम. राम. रादन हा०

६ अनुग्रह चोन गछि आसनि साधन
कया छु पापन कमन ज्यादन प्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन हा०

७ 'कृष्णय' चाञि कपटञि तल नरिहे
अद. कति पा'रिहे जाम. न'वि न'वि
पशु. कति प्ययिहस होंज़न त. रादन हा०

८ छो.पि मज़ तस छो.चरा नेरिहे
अद. कति वनिहे ज़ेछर यूत
याद है प्ययिहस वृञि छुस आदन हा०

० ० ० ०

भजन न० १६५

त्रिज़ागत नाथ. परम. आनन्दै सत्चित् रूप. च्यय पान बंदै ।

१ कुस व'नित ह्यकि महिमां चोनुय क'मि चोनुय प्रभाव ज़ोनुय
हे निरञ्जन. हे निद्धन्दै सत्०

२ चानि आसर. हरि हरै हे सत्य रूप. च्यय पत ब. मरै
छुस ब. लज्जित स्यठा शरमंदै सत्०

३ कुस च्य'य ह्युव बनि परम.मित्र बंध बांधव सा'रिय छि शत्रुय
निर्मल. निष्कल. गोविंदै सत्०

४ मव.सरस लो.भुम न. तार.य गोलुम च्यय पत लो.कचार.य
मोकलावतम मोह.नि फंदै सत्०

५ ऋषि बालुक छुस छमन. चाहत मनस.य म्य ग'छम धन संपत
छम म्य चाह ज़ानन.च ज्ञान. इंदै सत्०

६ संपदा आपदा ज्ञान. र'स्तिस आपदा संपदा ज्ञान. स'स्तिस
ज्ञान. हीलस वखनान अंधै सत्०

७ रचना ज़गत.च स्वप्न माया सत बननिय पनञी छय छाया
ज्ञान निश मत थवतं म्य अंदै सत्०

८ 'ठाकुरस' चा'ञ अभेद भक्ती यलि बन्यस सो.य गयि युक्ती
नत. क्या करि खा'ली चंदै सत्०

० ० ० ०

भजन न० १६६

त्रेयलूकी हन्ज़ रक्षाका'री
जय जय जय राञि ब्रारिये

१ त्रिपो'री ईश्वरी निराका'री
सर्व कारण निर्विकारिये
सर्व सिद्ध मूर्ती सर्व अधिकारी जय जय०

२ गायत्री मो'ख छख मोक्ष अधिकारी
राधा श्री कृष्ण धा'रिये
गो'र रूप गौरी शंकर प्यारी जय जय०

३ चंडं मुण्ड दैतन हन्ज़ सम्हा'री
दंड कमंडल धा'रिये
रू'ड माल ना'लि छय खीर खंड हा'री जय जय०

४ कारण ति करनस च्य कहा'री
लारान च्य कुन सा'रिये
पदम आसन ब्यांयि सिंहा सवा'री जय जय०

५ सहस्र मो'ख छख सहस्र नाम धा'री
जाम सास अलंका'रिये
यलि युथ पज़ि त्यलि त्युथ धा'रि धा'रि जय जय०

६ रक्त पीत नील शीत सब्ज़ाका'री
गुल अ'नारि व्ययि ज़ं'गरिये
चो'त्र बो'ज़ त्रि नेत्र सर्पाका'री जय जय०

७ मुकटस चा'ञ्सि मो'ख्त जा'लारी
सिर्यस अ'दि अ'दि ता'रिये
मथस चंद्रम बडि चमका'री जय जय०

८ समिथ ब्रह्मण आयि चोपा'री
तमिथ लगहोय पा'रिये
पाप शाप कास असि क्षमाका'री जय जय०

९ दूरि प्यठ़ लारान आयि ननवा'री
दर्शन चाञि अमा'रिये
प्रारान बर तल मुचराव ता'री जय जय०

१० चरितन चान्यन कन धा'रि धा'रि
मन छुख शूधनायि ला'रिये
तन ना'विथ सैर व्यचारी जय जय०

११ केनह भाग्यवान ह्यथ पोश गुलज़'री
केन्ह कन्द नाबद भा'रिये
केन्चव रंग रंग मिष्ठाय चा'री जय जय०

१२ अथ छो'न ब'ति आस ज़ारय पा'री
धन ध्यार सा'रि असा'रिये
कथ म्याञि बोज़ वो'न्य क्षमाका'री जय जय०

१३ सारिनय पूज़ायि हन्ज़ तैयारी
वारि वारि पनन्ये वा'रिये
ब'ति कर चरणन सर निसा'री जय जय०

१४ व'दि व'दि वो'ज़लि पोश ज़न छिम टा'री
धारि धारि ओश मो'ख्त हा'रिये
कथ म्याञि बोज़ वो'य क्षमाका'री जय जय०

१५ आशि चाञि ब'ति आस गाशय ब्रारो
कास्तम मोह अंधका'रिये
मत मंदछावतम यमि समसा'री जय जय०

१६ रोश पा'ठि करतम गोश गुजाऋ'री
पम्पोश लोचन धा'रिये
तोषतम त पोशतम पोशय वा'री जय जय०

१७ चिक चा'वि भ्रमरोवुस लोकचा'री
मटि खतिम'ति पापनि भा'रिये
नख लो'च़रावतम सो'ख मो'ख हा'री जय जय०

१८ आ'रत्यन आ'रच़र मोच़न हा'री
प्रथ घर छख प्रथ दा'रिये
ध्यान धारनिायि चाञि कम कम न ता'री जय जय०

१६ परमानन्द ने नन्द कोमा'री
'लक्षमण' छु वनान ज़ारिये
धर्मस करतन परम पा'री
जय जय जय राञि ब्रा'रिये

--o--

भजन न० १६७

प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभयाम्-आददे।।

महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभयः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः

चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरूणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ....गणदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्-कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसिहताय नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदेवाय महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्राय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रँ ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामार्य चार्वङ्. ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री माहराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रननाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्रधिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नेऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ताय. अनन्तदिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अम्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मधुवाभ्यां, अनन्त-अगस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्या दिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ओं भूरदेवताभ्यः ओं भुवो देवताभ्यः ओं स्वर्देवताभ्यः ओं भूं भूवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः

महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेणा नैवद्यं प्रति-गृह्यताम् (ईष्टदवता का ध्यान करते हुये पढेः- ओं तत्सत् - ब्रह्म - अद्य तावत् तिथौ अद्य - मासस्य-पक्ष्स्य-तिथौ-आत्मनो वाङमनः कार्योपार्जित-पापनि-वारणार्थम, ओं नमो नैवद्यं निवेदयामि नमः। ''चुटू'' को स्पर्श करते हुये पढ़ेः- या काचित्-योगिनी-रौद्रा-सोम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। चुट को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढेंः- आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः। प्रेप्युन की थाली चुटू के साथ सात (१) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं-पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः दूसरी को स्पर्श करते हुये पढेंः भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (३) इष्ट देवी भगवते विनायकाय अन्न समर्पयामि नमः (४) ह्राँ ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः (५) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः।

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें-यस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें- आपन्नोस्मि शरणयोसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्षमां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुए पढ़े- नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

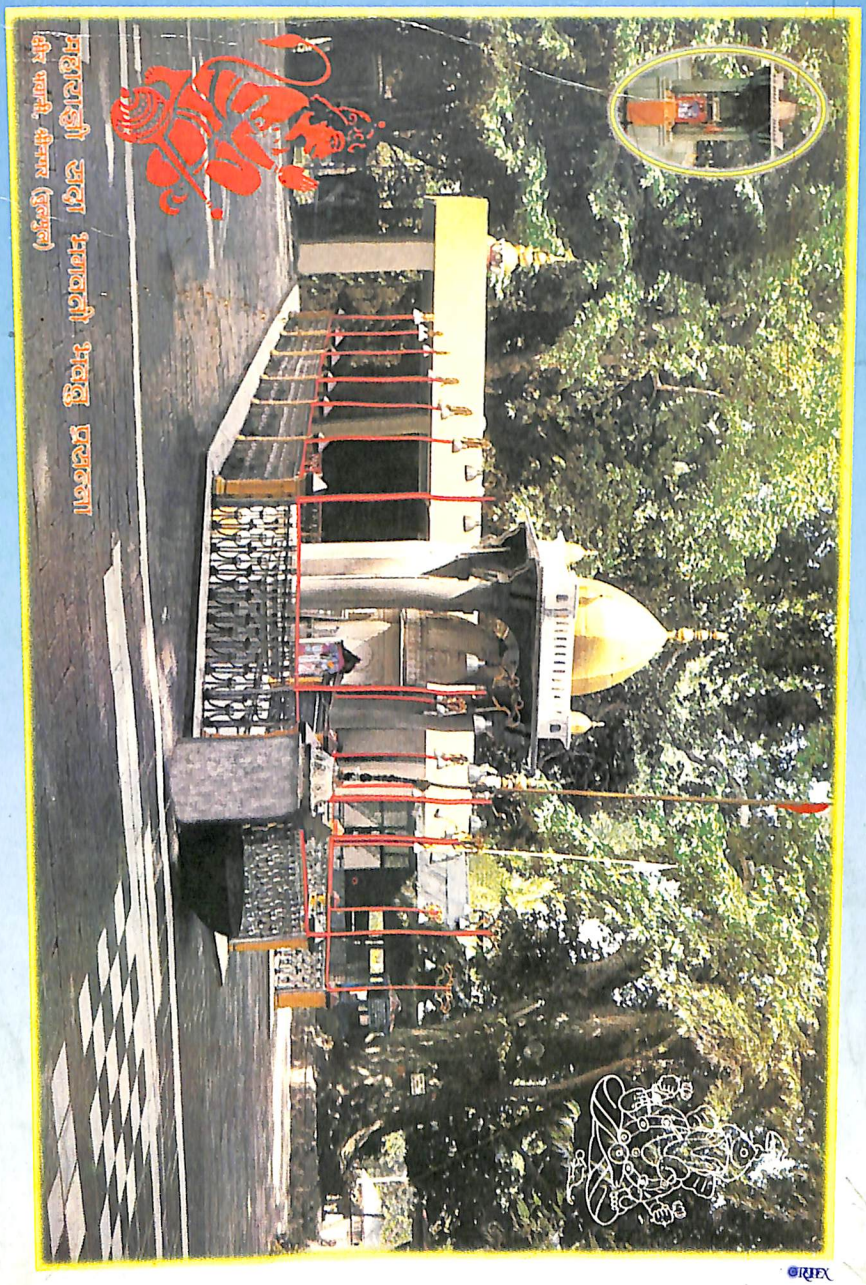

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री अर्ध रात्री महाराज्ञी सेवा ट्रस्ट (रजि०) भवानी नगर जानी पुरा, जम्मू– १८०००७